

GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No.

.H

Book No.

808.1

N. L. 38.

R 253n

MGIPC—88—21 LNL/59—25-5-60—50,000.

अथ रसिकमोहन ।

दोहा ।

विघनहरन दुर्मतिहरन करन सकल कल्याण ।
शिवसुत श्रीगननाथ को सब सुखदायक ध्यान ॥१॥
श्रीगुरुदेव मुकुन्द कौ लहि कौ कृपा सहाय ।
करिवे की पाई सकति गन्यनि को समुदाय ॥
ब्रह्मा को सुत मानसिक गीतम परम प्रसिद्ध
ताके कुल कौटू मिसिर प्रगट भयो तपनिष्ठ ॥
वेद कण्ठ चारों करे अट्टारहौं पुरान ।
उपनिषधौ अरु शास्त्र सब औ सब कलानिधान ॥
वरनन कहैं लगि कीजिये करामाति समुदाय ।
धोती लिये अकास में जाकी भुरवत वाय ॥५॥
कुल में कौटू मिश्र के उपजि मनसाराम ।
जापैं राखत नित कृपा आपु राम सुखधाम ॥६॥

कवित्त ।

आज महिमण्डल में कहे कवि रघुनाथ

जिते राजपूत राज पदवी धरत हैं। आपनी सभा
में आप आपने मुसाहिब सों बैठे आठों जाम
ऐसी भांति उच्चरत हैं ॥ बखतबुलन्द ऐसे कौन
पहुँचो पैं भूप गौतम गुमानो की जे समता अ-
रत हैं ॥ चाहै जोड़ राम सोई करै मंसाराम
अरु चाहै मंसाराम सोई राम ठूँकरत हैं ॥

दोहा ।

प्रगटे मंसाराम के महावीर बरिबण्ड ।

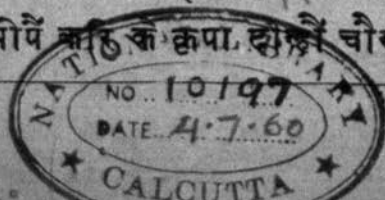
जाको वसुधा में भयो रवि सो तेज प्रचण्ड ॥८॥

कवित्त ।

सकल दिसान बसकरता सुरुपवान तेजवान
ग्यानवान भाग्यवान गथ के । वेद विधि विहित
सुकवि रघुनाथ कहै प्रतिपाल करता सकल
पुन्य पथ के ॥ सब सों अजीत आपु सब कीं
जितैया आपु आपु सरवग्य आपु जनैया अकथ
के । ऐसे मंसाराम के महीप बरिबण्ड जैसे काम
पुरुषोत्तम के राम दशरथ के ॥ ९ ॥

दोहा । R

उन मोपैं कहि के कृपा दोहैं चौरा गाउं ।



जाको जम्बूद्वीप में जगमगातु है नाउँ ॥ १० ॥
जोजन भरि वारानसी पञ्च कोस इक कोस ।
उत्तर दिसि दक्षिण लसै सुरसरि आपु परोस ॥
सवैया वारानसी की ।

कोऊ कथा सुनै कोऊ सुनावत भारत आदि
पुरान हैं जाऊ । वेद पढ़ै कोऊ व्याकरणै कोऊ
जोतिष वैदिक साहित कोऊ ॥ कूजत है कोऊ
श्रीरघुनाथहिं पूजत कोऊ शिवाशिव कोऊ ॥
में मन बौच विचारि लख्यो है बनारस में न विना
रस कोऊ ॥ १२ ॥

कवित्त गङ्गाजी की ।

सुमिरन कौन्हें ऐसे पातक-पलटि होत पुन्य
को सरूप जैसे कीट भृङ्ग गोत है ॥ दरसन पाये
ऐसे दारिद्र्य पलटि होत सम्पति अंधेरो ज्यों उ-
जैरो देखि पोत है ॥ महारानी भागौरथी तेरो
पानी पिये ऐसे कुमति पलटि हात सुमति
उदोत है । जैसे मिट्टि औषध पर तें कहै रघु-
नाथ तांबो कीड़ि जाति जैसे सुवरन होत है ॥

• दोहा ।

यन्त्र रसिकमोहन कियो मैं यह उनके नाम ।
 उपमादिक जामे लिखि अलङ्कार सुखधाम ॥१४॥
 सम्बत् सूत्रह सै अधिक बरिस छानवे पाय ।
 माघ सुकुल शोपञ्चमौ प्रगट भयो सुखदाय ॥१५॥
 बरने उपमा आदि है अलङ्कार गति रीति ।
 अहो रसिक लखि रीझियो करि पढ़ियो सो प्रीति ॥
 पहिले उपमा फेरि है अनन्वयालङ्कार ।
 उपमानो उपमेय है कौन्हो बरविस्तार ॥ १७ ॥
 आगे फेरि प्रतीप है सो पुनि पांच प्रकार ।
 फिरि आगे रूपक लसै रङ्गो भेद षट्धारि ॥१८॥
 परिनामालङ्कार है दूक उल्लेख है भेद ।
 सुमिरन भ्रान्ति सन्देह ए तौन हरैं मतिखेद ॥१९॥
 अपह्नुति षट्भेद सो आगे शोभित होत ।
 उत्प्रेक्षा षट्भेद सों ताहू कियो उदोत ॥ २० ॥
 फेरि अपह्नुत लसत है धरे आपु दूक रूप ।
 अतिशयोक्ति आगे लसत हैं षट्भेद अनूप ॥२१॥
 चारि भेद सों लसतु है तुल्यजोगिता आप ।

दीपक तीन प्रकार सों सोहत, तजि सन्ताप ॥
 प्रतिवस्तु उपमा लखौ लखौ और दृष्टान्त ।
 तीन प्रकार निदर्शना सोहत है अति क्लान्त ॥
 वितरेकालङ्कार जो सो है एक प्रकार ।
 एक प्रकार सहोक्ति है है विनोक्ति विस्तार ॥२४॥
 समासोक्ति है एक औ औ परिकर है एक ।
 परिकराङ्कुर एक है लङ्घित सहित विवेक ॥२५॥
 श्लेष सो तीन प्रकार है बरनत हैं मतिधाम ।
 अप्रस्तुति-परसंश को एक भेद अभिराम ॥२६॥
 प्रस्तुताङ्कुर को कह्यौ एक भेद कवि गीत ।
 भेद सो परजायोक्ति के है विधि करत उदोत ॥
 बरनत हैं व्याजोक्ति कों सकल सुकवि है रीति ।
 तीन भांति आक्षेप को बरनत हैं करि प्रीति ॥
 सुकवि विरोधाभास को बरनत एक प्रकार ।
 पट् परकार विभावना बरनत करि विस्तार ॥२८॥
 विशेषोक्ति को भेद दूक सु असम्भव को एक ॥
 तीन असङ्गति के कहत सुकवि सदा गहि टेक ।
 सात भेद हैं विषम के औ सम के हैं तीन ।

एकै भेद विचित्र को बरनत सकल प्रबौन ॥ ३१ ॥
 अधिक सो दोहु मकार को बरनत सहित विवेक ।
 भेद अलप को एक औ औ अन्योन्यहि को एक ॥
 बरनै सुविशेषोक्ति को कविजन तीन प्रकार ।
 बरनत हैं व्याघात को है विधि करि विस्तार ॥
 कारणमाला एक है है एकावलि एक ।
 मालादोषक एक है सार अलंकृति एक ॥ ३४ ॥
 क्रमिका इक परजाय वं परिवृत एकहि रूप ।
 परिसङ्ख्या है एक औ विकल्प एक सरूप ॥ ३५ ॥
 समुच्चयहु के भेद है बरनत सहित विवेक ।
 कारक-दोषक को कहत भेद सुकवि सब एक ॥
 इक समाधि प्रत्यनौक इक काव्यार्थापति गांस ।
 काव्यलिङ्ग के भेद वं है अर्थान्तरन्यास ॥ ३७ ॥
 एक विकस्वर एक है प्रौढोक्ति सुभ रीति ।
 संभावनासु एक है एकै मिथ्याधिवसीति ॥ ३८ ॥
 एक अलंकृत ललित है प्रहर्षनो है तीन ।
 सुविषादन इक चारि विधि है उलास गुन लौन ॥
 अवग्याह है एक औ कहै अनुज्ञा एक ।

लीसा के है भेद हैं हैं मुद्रा को एक ॥ ४० ॥
 अलङ्कार रत्नावली इक इक तदगुन नाम ।
 अनुगुन इक औ एक है मिलित सु अति अभिराम
 अलङ्कार सामान्य इक औ उनमौद्धित एक ।
 अलङ्कार वैशेष एक लहि यतु किये विवेक ॥ ४२ ॥
 गूढोत्तर है एक औ चित्रोत्तरलङ्कार ।
 सूक्ष्म इक औ एक है पीहित सुभ विस्तार ॥
 इक व्याजोक्ति गूढोक्ति औ विव्रतोक्ति इक मानि ।
 युक्ति एक लोकोक्ति इक इक केकोक्ति बग्वानि ॥
 काकु एक वक्रोक्ति इक एकहि मै है भेद ।
 सुभावोक्ति एक एक है भाविक तजि के खेद ॥
 अलङ्कार उदात्त है हैं ताके है भूप ।
 अलङ्कार है उत्तरा औ एक पूरुवरूप ॥ ४६ ॥
 अलङ्कार अत्युक्ति इक औ यक प्रेमात्युक्ति ।
 सद्य कवि बरनन करत हैं औरौ एक निरुक्ति ॥
 अलङ्कार प्रतिषेध इक विधि औ इक इक हेत ।
 अलङ्कार के नाम ए रूप लखे सुख देत ॥ ४८ ॥

इति श्रीकवि रघुनाथ बन्दौजन काशीवासी

विराच तेकाव्य रसिकमोहने अलङ्कार नाम का-
थनं प्रथम तन्त्रः ॥ १ ॥

उपमा लच्छन दोहा ।

जहँ सादृस ते होत है सोभा को परकास ।

अलङ्कार उपमा तहां बरनत सुमति-निवास ॥ १ ॥

पूरन उपमा लच्छन ।

उपमा अरु उपमेय धरु अरु वाचक अरु पर्म ।

इन चारों मिलि होत है पूरण उपमा धर्म ॥ २ ॥

उदाहरन ।

फूलि उठे कमल से अमल हितू के नैन कहै
रघुनाथ भरे चैन रस सिअरे । दौरि आए भौर
से करत गुनौ गुन गान सिद्ध से सुजान सुख सा-
गर सों निअरे ॥ सुरभौ सी खुलानि सुकवि की
सुमति लागी चिरिया सौ जागी चिन्ता जनक
के जिअरे । धनुष पै ठाढ़े राम रवि से लसत
भोर कैसे नषत नरिन्द भए पिअरे ॥ ३ ॥

अपरंच ।

गली हार दहलीज आंगन लौं आगमन

पक्षी के कहत लख्यो पच्छिन के सोर सो । नषत
से सोच कृपे कहै रघुनाथ लख्यो मोद सो अमल
हियो कमल सरोर सो ॥ सनमुख होत दिनकर
सो सुघर प्यारो मन मे ते मान सो चलत भयो
चोर सो । सारौ स्याम ठरि गई राति सौ नि-
हारी सखी प्यारौ जू को आनन निकसि आयो
भीर सो ॥ ४ ॥

अपरंच ।

चन्द सो आनन चांदनौ सो पट तारे सी
मोती की माल विभाति सी । आंखें कुमोदिनि
सो हुलसीं मनिदीपनि दीपक दान की जाति
सो ॥ हे रघुनाथ कहा कहिये प्रिय की तिय
पूरन पुन्य विसाति सो । आई जोन्हाई के
देखिवे को वनि पून्यो की राति में पून्यो कि-
राति सो ॥ ५ ॥

अपरंच ।

हितुन के तन की तपनि मेठि देत सुख
है करि सुमुख करि अमर अमर सो । अन-

हित लोगन के चित को विरति बूझि उनको
 दरसि कै परसि देत जर सो ॥ कौन आजु
 दूसरो है कहे कवि रघुनाथ भुजदण्डवली बरि-
 बंड नरवर सो । वसुधा के बीच जाकी जाग्यो
 जगमगत है जस मुधाधर सो प्रताप दिवा-
 कार सो ॥ ६ ॥

तबकोपमा लच्छन ।

दोहा ।

अर्थ अनेकनि को जहां सादस वरनन होइ ।

जथा तथा तबकोपमा कहत मुकवि मुख भोइ ॥ ७ ॥

उदाहरन ॥

जैसो फव्वो फटिक-सिलानि सो सँवारी मग
 तैसो रज्जो जगि रूप फूलन सो प्यारी को । जैसो
 चारु चौतरा बिछौना बिछो तैसो सेत तैसोई
 सुगन्ध छायो वेलि न्यारी न्यारी को ॥ एक रसना
 तें मोपैं सखी न सराह्यो जात कवि रघुनाथ सु-
 ख राति को उज्यारी को । जैसो लख्यो तारन
 समेत तारापति तैसो मोतिन के भूषन समेत
 मुख प्यारी को ॥ ८ ॥

अपरंच । ०

गढ़ चिलिबिलिआ को भांखो राजकु-
मारनि राखे राजपूत जे रखैया सदा लाज के ।
ताको फते करिबे को हल्ला को हुकुम भये उ-
द्धत उदगड बरिबगड महाराज के ॥ खंधक में
पैठि सफौलन चढ़ि कूदे बीच रघुनाथ ऐसे
गोल सुभट समाज के । समुद्र को जल चारों
ओर तें झपटि जैसे भीतर भरत जाइ बूड़त ज-
हाज के ॥ ६ ॥

अनन्वय लच्छम ।

दोहा ।

उपमा अरु उपमेय जहँ एक वस्तु के होत ।

ताहिँ अनन्वय कहत हैं करता यन्त्र उदोत ॥ १० ॥

उदाहरन सवैया ।

तू सब को सिरमौड़ि सोहागिनि तोहिँ बड़े
तप तें पति पाई । हारतीं देव अदेवन की तिय
तेरी बिलोकत ही चतुराई ॥ तेरी कहूं उपमा न
तिलोक में मैं रघुनाथ सही ठहराई । गाइ औ

गावन जोग बल बल ल्यों तेरी सौ तेरिये सुन्दर-
ताई ॥ ११ ॥

अपरंच कवित्त ।

तेरे पाँड़ ऐसे तेरे पाँड़ कहै रघुनाथ नख से
तेरेई नख सोभा के अयन हैं । जंघा ऐसी जंघा
है नितम्ब से नितम्ब तेरे लंक सो तेरोई लंक
देखत चयन हैं ॥ तेरे कर ऐसे तेरे कर हैं सुधर
कच तेरेई से तेरे कुच श्रीफलजयन हैं । बदन
सो बदन वयन से वयन एरी प्यारी तेरे नैन
ऐसे तेरेई नयन हैं ॥ १२ ॥

अपरंच ।

तेग बल त्याग बल प्रगट कियो है जौन
भूप बरिबण्डसिंह सुनौ तीन अस है । जाको
प्रभा देखि देखि मन में लजात जात तेजभरो
सूर ससि भरो सुधारस है ॥ काहि उपमान
कोजै कहै कवि रघुनाथ कौन ऐसो दूसरो ज-
गत कोन्हें बस है । रावरे प्रताप सो है रावरो
प्रताप और रावरे सुजस ऐसो रावरो सुजस है ॥

उपमा उपमेय लच्छन ।

दोहा ।

उपमा अरु उपमेय जहँ उपमा अरु उपमेय ।

होत परसपर कहत सब कवि उपमा उपमेय ॥ १४ ॥

उदाहरन ।

और तो हीं कहा कहौं देखतही रोभि जैही
ऐसी कछु अङ्गनि तें सुकुमारि अति है । गुन की
है खानि सील सोभा को निधान जाकी कीबे
कों बखान वाक बानी को न गति है ॥ एही
रघुनाथ तिय तीसरी बनाइबे कों आगे को न
चली फेरि करता की मति है । सति करि मानो
तीनो लोकनि में जानो एक रति ऐसी प्यारी
प्यारी ऐसी एक रति है ॥ १५ ॥

प्रतीप लच्छन ।

दोहा ।

उपमा कहँ उपमेय जहँ कल्पित सो परतीप ।

भूषन नौहू रसनि को बरनत सुकवि महीष ॥ १६ ॥

उदाहरन ।

चरन करन सम जाकी कहै रघुनाथ सरद
समै को फूल्या चारु अरविंदु है । जाकी बार सु-

कुमार ऐसे मखसूलतार नैन से निहारि देखी
माधौ को मलिटु है ॥ बोलन सो अमो जाके
अधर सो अनुराग मोहनता ऐसी जाकी मदन
नरिटु है । ऐसी बाल लाल हौं तिहारे लिये
ल्याऊँ जाके ओप सी उजरी आंग आनन सो
इन्दु है ॥ १७ ॥

द्वितीय प्रतीप लच्छन ।

दोहा ।

लहि उपसिय कछू जहां बन्ध निरादर होइ ।

भेद दूसरो कहत है यह प्रतीप सब कोइ ॥ १८ ॥

उदाहरन ।

निरखि निरखि कटि कहतौ हौ कहा ऐसी
ऐसी हौं विचारि देख्यो सिंह हू को लङ्क है । च-
खन कौ लखनि तिरीछो गड़े ही के बीच ऐसो तो
मनोज हू को बन्यो बान बंक है ॥ कर कौ ललाई
रघुनाथ गाड़ें कौल हू में कुच कौ कठोरताई
श्रीफल निसंक है । कोजिये न गरब दूतेक सखी
प्यारी जू के मुख ते न अनो कछू पूनो को म-
यंक है ॥ १९ ॥

द्वितीय प्रतीप लच्छन ।

दोहा ।

बरननीय उपमेय के लाभ निरादर और ।

तीजो भेद प्रतीप को बरनत कवि सिरमौर ॥ २० ॥

उदाहरन ।

कहा है कठोर घोर सोर सुनि एरे काग
तोसो तो है मोर महा पालक दरद को । कहा
तेरो वास मति अंध को करैया बेल रघुनाथ तो
सो गन्ध कौल को गरद को ॥ कहा तेरो बिग
वाय छेद करै हौ में आय तोसो तो है बान
जानि मैन से मरद को । कहा तेरो तेज तीखी
एरे चण्डकर आजु मोसो सुनि तो सो सुधाधर
है सरद को ॥ २१ ॥

चतुर्थ प्रतीप लच्छन ।

दोहा ।

बरननीय तें भूठ जहँ उपमा कहिये आनि ।

चौथो भेद प्रतीप को कबिकुल कहत बखानि ॥ २२ ॥

उदाहरन ।

लखि ठकुराइन के पाइन कौ सोभा तुम
ऐसो जो कहत हो कि ऐसे नौरजात हैं । गात

कौ गोरार्इ सम गार्इ रुचि कंचन कौ ओठ कौ
 खलाइ सम पाए नये पात हैं ॥ यामे तौन चल
 कछू देखि आइ हौ कन्हार्इ हंसन दसन सम
 मोतौ अवदात हैं । नैनानि को निधि प्रानप्यारो
 को बदन देखि ऐसो जो कहो है विधु सो तो
 झूठो बात है ॥ २३ ॥

अपरंच ।

अरुनार्इ चपलार्इ कहै कवि रघुनाथ गोरार्इ
 औ स्यामतार्इ जेती चाहियतु है । मोहन वसी-
 करन सोखन उचाटन आकरषन बेधवे की
 रोति गहियतु है ॥ देखि कै विचार कीन्हों अ-
 लिन अलीक यामे ए गुन कन्हैया जू के नैन ल-
 हियतु है । कांज खंज मोन मधुकरनि में रहे मैन
 बान मै जे कहैं ते वै झूठे कहियतु है ॥ २४ ॥

पंचम प्रतीप लच्छन ।

दोहा ।

उपमाने करिये व्यर्थ उपमेयै सनमानि ।

यह प्रतीप कवि कहत हैं भेद पांचघों जानि ॥ २५ ॥

उदाहरण ।

पाँइन कौ कवि आगे कहा नए पल्लव हैं ।

नखन के आगे कहा नखत की रिधि है । कटि
आगे कहा है कटारिहू की अनौ चारु कुच आगे
कोक कहा कहि ऐसो सिधि है ॥ देखे को हरष
गुर गूंगे को सो करि राख्यो रघुनाथ प्यारे देनी
उपमा अविधि है । महारानी राधिका के आ-
नन अमल आगे कहा है कमल और कहा
कलानिधि है ॥ २६ ॥

अपरंच ।

क्रीरनिधि जायो गायो निगम पुराण कथायो
बपुष प्रभा सों लीन्हे तारन जगतु है । अनुज
कहायो कमला को कहै रघुनाथ नातो पायो
विष्णु सों सो जानत जगतु है ॥ माथे पै महेश
राख्यो मित्र कहि मित्र भाख्यो ऐसो जज
तऊ तुलताइ न लहतु है । भूप बरिबंड जस
रावरे कुलीन आगे धाकर सो देखत सुधाकर
लगतु है ॥ २७ ॥

रूपक लच्छन ।

दोहा ।

विषई जहां अभेद है विषय जहां तद्रूप ।

अलङ्कार रूपक तहां बरनत दुविध अनूप ॥ २८ ॥

न्यून अधिक सम्म होत हैं दोऊ तीन प्रकार ।

एहिँ बिधि सीं घट भेद को रूपक कियो पसार २८ ॥

विषद्वै अभेद सम बधा ।

सवैया ।

बारिद बार सही रघुनाथ कहै जिन चारु किये
दृग मोर हैं । ईकन कांज सही सुथरे जिन लो-
चन भौर किये बरजोर हैं ॥ बोलनि जो सो
सही मुकता जिन आँखिन को किये हंस कि-
सोर हैं । प्यारी को आनन इन्दु सही जिन किन्ह
गोविन्द के नैन चकोर हैं ॥ ३० ॥

अपरंच कवित्त ।

लोचन सजल मकरन्द भरे अरविन्द खुले
खुली बूंद पाँति मधुप किसोर की । खेदकन
ओस पीरी यही रंग रघुनाथ स्वासा सो बयारि
बहै सौरभ झकोर की ॥ भूषन के मोती सेष-
भेष से हैं तारागन सुसकनिधुनि कछू चिरिन
के सोर की । प्यारीजू के वदन पै मदन विनोद
भेषी देखी आजु भोरही सकल सोभा भोर
की ॥ ३१ ॥

॥ अपरंच सवैया ॥

साहस कै वन मे हरि वा दिन जौन दवा-
नल पान कियो तो । ऐसे तचे नख तें भिख लौं
नहिँ जाहिँ कुये किनु मैं हूँ कियो तो ॥ वैसी
समै रघुनाथ की सौँह कृपा करि जो उपकार
कियो तो । है सुधि सो कुच कुम्भ अमी के ल-
गाइ हियो सिअराय दियो तो ॥ ३२ ॥

विषई अभेद न्यून यथा सवैया ।

आई हौं देखि सराहे न जात हैं या विधि
घूँघट में फरके हैं । मैं तो यों जानी मिले दोउ
पोके छै कान लग्यो कि उन्हे हरके हैं ॥ रंगनि
ते रुचि ते रघुनाथ वे चारु करे करता कर के
हैं ॥ अंजनवारे सही दृग प्यारी के खंजन प्यारे
बिना पर के हैं ॥ ३३ ॥

अपरंच ।

आपने हाथनि सौं करतार करे अतिही
जग बीच उज्यारे । देखतही रहिये रघुनाथ जुदे
नहिँ कीजे लगेँ अति प्यारे ॥ सौरभ सो परि-

पूरन पुष्ट पवित्र भरे रस आनंद द्वारे । बारि
बिना उपजे अति सुन्दर प्यारो के लीचन बारिज
न्यारे ॥ ३४ ॥

विषई अभेद अधिक यथा सवैया ।

एक तो मान को मै रछौ चढ़ि दूजि तुमै
बिनु साथ निहारैं । तीजे हितू एहि ओर को
बूझि कै भूठौ महा मन बीच विचारैं ॥ रावरे
जो रघुनाथ बलाइ ल्यों या डर सों हम सासन
टारैं । प्यारो के ईकन तीकन बान हैं घायल
देखितही करि डारैं ॥ ३५ ॥

अपरंच ।

आगे तो आपु अकेलो रछो अब साज स-
माज घनो संग छायो । बेर बहै निज वृक्षत है
मिलि कूजत है कलकण्ठ में भायो ॥ औधि की
आस बचीं अबला अब चाहतु है रघुनाथ स-
तायो । ऊधो मिलि मधुसूदन सो कहियो वृज
में बहुरो मधु आयो ॥ ३६ ॥

अपरंच ।

केसर रंग के अङ्ग की वास बसी रहैं पाइ



DBA000010197HIN

कमोहन ।

२१

से पास घरेरी । चित्र मई क्विति भीति सबै रघु-
नाथ लसै प्रतिविम्बनि घेरी ॥ प्यारौ के रूप अ-
नूप को और कहां लों कहां महिमा बहुतेरी ।
आनन चन्द को फेली अमन्द रहे घर में दिन
राति उजरी ॥ ३७ ॥

विषय तद्रूप रंजन अनुभवोक्ति यथा कवित्त ।

कानन के चारी तन भारी हैं चपल महा
थिरता न गहैं केहूं एक घरो हारि कै । कहै
रघुनाथ पर पलकन फरकाय कौतुकै करत मद
जोबन को धारि कै ॥ कजरारे चीकने विसद
भारे रंगनि से दुचितई डारैं देखै सुचितई टारि
कै । बाहर न जाहि कोऊ लेइगो बभाइ देखि
तेरे नैन खंजन ए खंजन विचारि कै ॥ ३८ ॥

अपरंच सबेया ।

कौने दई यह सौख तुम्हें तुम जो इतनो
हठ आजु गहा है । एतेहु पै न प्रतीत करौ ब-
हुरो दिवदेव को चित्र चहा है ॥ भूठि को
बोलि तजै धरमै रघुनाथ कहै ऐसो कौन बहा

है । तो कुच सम्भु की सोहँ कियो जब है तब
शम्भु की साहँ कहा है ॥ ३६ ॥

विषय तद्रूपरंजन न्यून यथा ।

रसभरे जसभरे कहै कवि रघुनाथ रंगभरे
रूपभरे खरे अङ्ग कल के । कमला निवास परि-
पूरन सुवास आस भावते के चंचरीक लोचन
चपल के ॥ जगमग करत भरत दुति दौह पोखे
जीवन दिनेश के सुदेश भुज बल के । गाइवे के
जोग भए ऐसे हैं अमल फूले तेरे नैन कमल क-
मल विनु जल के ॥ ४० ॥

विषय तद्रूपरंजन अधिक यथा ।

स्यामताई जटाजाल सुरसरी मोती माल
ससिकला भाल नख व्याल केस कालि हैं । मलय
विभूति स्याम कंचुकी सो रघुनाथ फटिक फनी
के गज खाल गरे घालि हैं ॥ वनक विलोकि
बाँकी बरने कहाँ लों पर एतक कहत सेवै ताके
बड़े तालि हैं । पालि हैं मनोज दून प्रेम करि
आलि प्यारी संकर सों तेरे कुच संकर नि-
रालि हैं ॥ ४१ ॥

परिणामालङ्कार लम्फन ।

दोहा ।

उपमा मिलि उपमेय सों करै ताहि के काम ।

ताही सों सब कहत हैं अलङ्कार परिणाम ॥ ४२ ॥

उदाहरन ।

कब के मनाइवे कों आपु आइ आगे ठाढ़े
हाथ जोरे विनै करें चूक परी कुल तें । अब कै
बकसि दीजै एतो कहा रोस कौजै प्यारी सो
पतीजौ मति जो सुनी चपल तें ॥ बिछुरे को देख
सो तो आपुही तें इतै जानौ रघुनाथ कौ सों
छाड़िबे को मान बल तें । बलि गई जेसे बेरि
बेरि कहौ नाहीं तैसे एकबेर हां हू कहौ आनन
कमल तें ॥ ४३ ॥

अपरंच सवैया ।

आवत मोहि बिलोकि बलाइ ल्यों छोड़ि
सखीन सां बात सोहाती । आठ अमेठि नचाइ
कै लोचन भौंह चढ़ाइ क्यों होति हौ ताती ॥
जानि परी रघुनाथहिं सो सब जावह आज गई
काहि घाती । लोजिये याती है सौहन कौ उनके
कर-कंज-लिखी यह पाती ॥ ४४ ॥

उल्लेख लच्छन ।

दोहा ।

एकहि जहाँ अनेक जन बरनत भांति अनेक ।

एक रीति उल्लेख यह कवि करि कहत विवेक ॥ ४५ ॥

उदाहरन कवित ।

सखी को समूह कहै बिधि सची रचा दूजौ
सेवाकिनौ कहैं कामना को बेलि नोकी है । रघु-
नाथ गुन देखि गिरा कहैं गुरुजन द्यौरानौ जे-
ठानी कहैं आलंवरान जौ की है ॥ अबहीं तौ दिन
दस पांच भया गौना आये गाढ़वे के जोग भई
कौरति जो ती है । चंपे की सा माल जाने
प्यारो नन्दलाल देखि सौतिन को जाल कहै
बाल साल ही की है ॥ ४६ ॥

अपरंच कवित्त ।

कोऊ कहै गगन की गङ्गा को सरोरुह है कोऊ
कहै व्योम बानी रानी को सदन है । कोऊ कहै
जल को जस्यो है बिंब रघुनाथ कोऊ कहै सागर
को सुधा में नदन है ॥ कोऊ कहै जामिनी को
कांद है अनन्द मध्यो कोऊ कहै जस जाको करता

मदन है । मोहि पछो जानि मेरी मति अनुमानि
यह चांदनो तिया है ताको चन्द्रमा बदन है ।

द्वितीय उल्लेख लच्छन ।

दोहा ।

एकहि जहां अनेक विधि एक कहत गहि रीति ।

दूजो भेद उल्लेख को बरनत कवि करि प्रीति ॥४८॥

उदाहरन कवित्त ।

कंजन अमलता में खंजन चपलता में कलता
में मौन कलता में बड़े ऐन के । प्रेम में चकोर
चोर नेम के निवाहिवे में कहै रघुनाथ ठग
ठगिवे कों सैन के ॥ डंसिवे को भौर डीठि फ.
सिवे को बंसो चेत गसिवे को जन्त हित चैन हूं
अचैन के । बामे भूठी है न प्यारे ही में आइ
जागिवे को प्यारी जू के नैन ऐन तीखे वान मैन के ॥

सुमिरन लच्छन ।

दोहा ।

निरखि कछु उपमान को सुधि कीजै उपमेय ।

सुकवि सुसृत तारी कहत अलङ्कार सुखदेय ॥ ५० ॥

उदाहरण कवित्त ।

नैन अनुहार नील नोरज निहारें बैठे वैम

अनुहारि बानी बोन को सुन्यो करें । चरन क-
रन रद कदन की लाली देखि ताके देखिवे की
फूल जपा के लुन्यो करें ॥ रघुनाथ चाल हेत गेह
बीच पाजि राखे मुथरे मराल आगे मुकता चुन्यो
करैं । बाल तेरे गात की गोराई सोह ऐसो
हाल प्यारे नंदलाल माल चंपे को दुन्यो
करैं ॥ ५१ ॥

अपरंच सवैया ।

पद्मग मौन कपोत चकाचकी बाल मरालन
केतै गहे हैं । बिद्रुम औ मुकुता पुखराज बि-
साहिवे को अति नेह नहे हैं ॥ देख्यो तुम्है जब
सों तब सों उनके ढंग ए रघुनाथ लहे हैं ॥ रोज
तमासे को जात तितै जितै ओज सों फूल स-
रोज रहे हैं ॥ ५२ ॥

भांति लच्छन ।

दोहा ।

हे शीरे शीरे कहै सटस रूप अनुमानि ।

अलङ्कार कवि कहत हैं ताहि आंति पहिचानि ॥ ५३ ॥

उदाहरन कवित ।

बोलत में मोती से भरत जानि हंस दौरे

बार मेघ मानि बोले केकी बंस भूल्यो है । कूजत
कपोत पीत जानि कण्ठ रघुनाथ फूल के हरा पै
मैन भूला जानि भूल्यो है । ऐसी बाल लाल
चली कुंज लौं देखाजँ तुम्हें जाकी ऐसा आनन
प्रकाश बास तूल्यो है । चितवै चकार जानै
चन्द्र है अमल घेरे भौर भीर मानै या कमल
चारु फूल्यो है ॥ ५४ ॥

अपरंच सवेया ।

जानति है कि गए मथुरा चढ़ि मारन कंस
कुड़ावन ओले । फागु के आवत जैसी दसा भई
सो रघुनाथ सुनौ मन जा ले ॥ कै सुधि हारौ के
खेलन की भुलये सिगरी सुधि नन्द के टोले ।
फेंट गुलाल भरे पिचकारी लै बाल गोपालहिं
ढूँढ़ति डोले ॥ ५५ ॥

अपरंच कवित्त ।

साधुन के कान धुनि वेद के समान जानी
हितुन के कान धुनि ताल राग गान कौ । समुद
कौ धुनि दिगबासिन के कान जानौ अचल नि-

वासिन के कान जलदान की । भूप वरिवगड
वसुधा के मारतगड कहै कवि रघुनाथ बात
परम प्रमान की । साहब के नौवत की धुनि
की धमक धाँक बैरिन के कान जानी हँक
हनुमान की ॥ ५६ ॥

सन्देह लच्छन ।

दोहा

बहुत भाँति उल्लेख करि एक न ठिक ठहराइ ।

अलङ्कार संदेह सो बरनत है कविराइ ॥ ५७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

नील नीरजात रुचि गात कहै रघुनाथ
तरनि प्रभात रुचि आनन अलिखि के । पीत
भगा पैन्हें पीत दुपटा कमर बाँधे पीरी पाग पर
खोंसे पाँखें हैक सिखि के ॥ चाप कर धनुष
पुहुप-करी दाहिने में बाग बीच ठाढ़े आज
देखत निमिषि के । मन तो बिकानो पै सँदेह
ठहरानो सखी मैं न जानी काम है कि राम-
सिख रिषि के ॥ ५८ ॥

अपरंच ।

मन हंस बसिवे कीं रूप की नदी में कंधीं

निकसी पुलिन पाँति काँति हिम लाने की । से-
सव सों लखि कों जावन महीप कैधौ कौन्ही
मेड़ मेरचे की साधि जीति होने की ॥ नैन
बसि करिबे कों कहै कवि रघुनाथ त्रिवली तिया
की कैधौ तीन रेख टोने की । कुच भार धरिबे
कों देखि अति काम कटि कैधौ काम बाँधौ है
बनाइ दाम सोने की ॥ ५९ ॥

अपरंच ।

कहै रघुनाथ कैधौ कंचन पटा पै बैठे केसर
बरन दोइ देवता हैं टोने के । तिय हिय घर
चतुर्द्व आइवे कों कैधौ मैन धरे कलस सगुन
सुभ होने के ॥ सुमति नटी के कैधौ बटो फेरिबे
के बटा कैधौ कुच छबि की छटा मैं जाग जाने
के । जावन जवाहिर के राखिबे कों लाने कैधौ
संपुट बनाये काम सोनी गोल सोने के ॥ ६० ॥

अपरंच सवैया ।

बागे बने बरही के पखा सिर बेनु बजावत
गैयन घेरे । या विधि सों रघुनाथ कहै किन

होत जुदे नहि साँझ सवेरे ॥ आँखिन देखिबे
कों नहिँ पैयतुं पैयतु है नितहीं करि नेरे ॥
मोहन सों मन मेरो लग्यो कै लग्यो मन सों
मनमोहन मेरे ॥ ६१ ॥

अपनुति लच्छन ।

दोहा ।

भूठो सो आरोपिये साँची वस्तु कृपाइ ।

अलङ्कार मत सुकवि सब कहत अपनुति ताहि ॥ ६२ ॥

उदाहरन कवित्त ।

यह विस्वामित्र है न विधि वर दैके ल्यायो
जगत जिताइवे कों हिये प्रेम भारी है । मन
मिथिलिस जूके तोखो न पिनाक यह हर सों
बयर लीन्हों महा अहंकारी है ॥ एही रघुनाथ
परतौत आवै यातें मोहि मोह्यो मेरो मन जौलों
मूरति निहारी है ॥ धाम सौल साभा की ये
सीता है नरति बाम राम ऐन ठाढ़े देखा काम
देहधारी है ॥ ६३ ॥

अपरंच ।

रूप सों रसिकता सों कला की कुसलता

सों जीतत जगत महा मन मदं भारिगो । कहै
रघुनाथ केते सुन्दर सुघर पर काहू पै न मैन
को गुमान गारो गारिगो ॥ ऐसी हो अमान बड़े
बल को निधान सखी देखि आनि दम्पति सों
गारि रचि हारिगो । फौले न पुहुप हार टुटे चारु
पलिका पै भागत में आपने हथ्यार खालि
डारिगो ॥ ६४ ॥

अपरंच ।

चरखी अलात धनु धूम धार धोरवा हैं
बोजुरी हवाई उड़ी दारु दुख खरी की । जुगनू
चलत टोटा चन्द्रजाति ताल जरे निरभरि
चादरि दुसह आगि घरी की ॥ जहाँ गिरी इन्द्र-
बधू देखि रघुनाथ की सों फौलि रही पावस
हवाईगर करी की । सौकरें न हौंहि आली
नीर की तरंगें ये अनंगें छोड़ी कूटती फुलिंगें
फुलभरी की ॥ ६५ ॥

अपरंच सवैया ।

आनन की धुनि ए सनि ए श्रुति कूकन

कोइल की धँसती हैं । स्वास की चारु प्रकास
 बयारि न मन्द सुगन्ध हियो मसती हैं ॥ दन्तन
 की दुति ये रघुनाथ कला न कलानिधि की गँ-
 सती हैं । देखि भरौ रिसि प्यारी तुम्है ए दसौं
 दिसि आपुस में हँसती हैं ॥ ६६ ॥

अपरंच कवित्त ।

विरह विभावारी में कहै रघुनाथ मुद्रित ह्वै
 रघ्यो दुःख मन मधुकर दन्द । जार करि तापै
 भक्तभोरि डायो अभिलाष पवन प्रकास कै
 दबन कौन्हो मोह चन्द ॥ देखि देखि सखी प्रान-
 प्यारी जू के उर पर खेद के न सीकर विराजि
 मोती लीं अमन्द । मित्र की दरसु पाइ पाइ कै
 अनन्द सीई फूल्यो हिय कमल अमलता की
 मकरन्द ॥ ६७ ॥

अपरंच सवैया ।

जानी पुनीत देवारी कि जामिनि वेदन
 की मत ओर मिसाँ तैं । ह्वै के धन्य धरे पन
 देहँ दिपै अरु नेह भयो बहु भाँतैं ॥ नंद के

मन्दिर पै रघुनाथ लसैं ए न धारु दियान की
पातैं । पूजिबे कीं हरि देव-कुमार सखी सुधरे
उतरे चहुँघाँ तैं ॥ ६८ ॥

अपरंच कवित्त ।

वारानसी मण्डल की दौन्हो तुम्है राज आपु
ब्रह्मा विष्णु रुद्र भरे भक्ति अहमेव के । रोज की
खबरि मंगवायिबे कीं तमोनाथ आपनी तरफ
सीं किये हैं नोको टेव के ॥ कहै रघुनाथ बरि-
बण्डसिंह महाराज तेई अव जानै जे जनैया यहि
भेव के । यह मृगसिरा न नकुच जोति धारें
आवै तारे भेष तीन हरकारे तौना देव के ॥ ६९ ॥

हेतु अपनुति लच्छन ।

दोहा ।

सोइ अपनुति कोजिये हेतु पूरवक ठानि ।

हेतु अपनुति कहत हैं सकल सुख पछिचानि ॥ ७० ॥

उदाहरन कवित्त ।

लागत फिरन जाको करत विकल अङ्ग देखि
ताप आखिन में बसी है समिधि सी । मृगत
बदन मन अति कुंभिलात जात रघुनाथ लूबैं

चलैं जेठी जेठ रिधि सों ॥ सरद का चांदनी नि-
रखि राम लखन सों बिरह बिदेहो के कहत
ऐसी बिधि सों । ससि ती न होइ है गरम रवि
है न राति जानियतु निकस्यो ज्वलन जलनिधि
सों ॥ ७१ ॥

अपरंच सवैया ।

अङ्क नहीं है पर्योधि के पंक को औ बसि
बंक कलंक न जागै । काहों नहीं किति की परसै
अरु भूमौ नहीं बड़वागि को पागै ॥ मैं मन
बीच किया निहचै रघुनाथ सुनौ सुनते भ्रम
भागै । ईठिन याकि डिठौना दियो जेहिं काहू
बियोगी कि डीठि न लागै ॥ ७२ ॥

पर्यस्ताऽपन्हति लच्छन ।

दोहा ।

अर्थ और को लेइ कै कीजै जहाँ अरोपि ।

परजस्तापन्हति कहै सँची बातें गोपि ॥ ७३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

नितहीं कनौड़े रहैं सोहैं ऐहैं तो लजैहैं
आगे ते न कहूं जेहैं जानौ दाम देना है । जाई

जार्ड कहीगी करेंगे सार्ड सार्ड प्यारे फेरि होन
पैहै नहीं तेबरु तनेना है ॥ और तो कहां
लो कहीं जैसी भावे तैसौ कीजौ फेरि रघुनाथ
सों सुनौ की भया ठेना है । सपथ तिहारी में
करीं न भूठी मेरे जान यह तो न मान प्यारी
मान मानि लेना है ॥ ७४ ॥

भ्रांतापन्हति लच्छन ।

दोहा ।

भ्रम संका सखि और की दूरि करै कहि सति ।

भ्रांतापन्हति कहत हैं अलङ्कार सुभ गति ॥ ७५ ॥

उदाहरन कवित्त ।

खायो कै अमल कै हिये में कायो निरवेद
जड़ता को मन्त्र पढ़ि नायो सौस काहू अरि ।
कौ तो लग्यो प्रेत को लग्यो है कहूं नेह हित सूखि
रछो वदन नमन रहे आंसू भरि ॥ बावरी को
ऐसो दसा रावरी देखाई देति रघुनाथ बूझो
जब मन मेरा गया डरि । सखिन के टरे गेरा
भरें हाथ पांसुरी दै हरें कही सुनौ आजु बांसुरी
बजाई हरि ॥ ७६ ॥

अपरंच कवित्त ।

दारुमर्द मूरति निहारि पुरुषोत्तम की बूझी
भेद अङ्गनि की जिते सुरवर हैं । तिनकी सँदेह
सब दूखि करिबे कीं ऐसे कह्यो कहै रघुनाथ
कृपा के जे घर हैं ॥ राजा बरिबगडसिंह जू के
जाइ देखी निज ग्यान में शरीर भाग्य ताके बहु
कर हैं । मन में हैं पाइ मेरे तन में है मेरी
तेज आँखिन में सिद्धि मेरे कर सिर पर हैं ॥७७॥

छेकापनुति लच्छन ।

दोहा ।

छेकापनुति और सों संकि छपावै साँच ।

या बिधि सों कवि कहत हैं लोजो मतिबर बाँच ॥७८॥

उदाहरन कवित्त ।

अङ्ग रंग सांवरी सुगन्धन सों लपटानी
पीतपट पोषित पराग रुचिबर की । करें मधु-
पान मन्द संजुल करत गान रघुनाथ मिल्यो
आनि गली कुंज-घर की ॥ देखत बिकानी छवि
मापें न बखानी जाति कहतही सखी सों ल्यों
बाली और डर की । भली भई तोहि मिले

कमलनयन् प्रात नहीं सखी मैतौ कही बात
मधुकर की ॥ ७६ ॥

कैतव अपन्हुति लच्छन ।

दोहा ।

व्याजादिक पद सी जहां ऽपन्हुति बरनन होइ ।

कैतवपन्हुति कहत हैं सुकवि महा सुखभोइ ॥ ८० ॥

उदाहरन कवित्त ।

बाँचे वेद द्विज नाचें मैनका घृताची रंभा
गाँवें मंजुघोषा ह्वे मगन सुर सातौ तूल । सी-
तल सुगंध मंद त्रिविध समीर डोलैं तरनितनैया
के उमड़ि चले दोऊ कूल ॥ कहै रघुनाथ ब्रज-
नाथ की जनम जानि फूली बेली बिटप गगन
घन रहे भूल । साथ लै सुरनि सुनासीर सी
बिमान भारे कैतव सलिल बारै कलप-लता के
फूल ॥ ८१ ॥

उत्प्रेक्षा लच्छन ।

दोहा ।

जहँ कीजै संभावना तहँ उत्प्रेक्षा होत ।

वस्तु हेतु फल त्रिविध करि बरनत कवि के शीत ॥ ८२ ॥

वस्तुप्रेक्षा दुविध पद उक्त र एक अमुक्त ।

सिद्धि असिद्धि पद हेतु फल दोज दोज जुक्त ॥ ८२ ॥

उदाहरन कवित्त ।

वस्तुप्रेक्षा उक्त विषय ।

सौभाग्यी सों खेलत रसिक रसभरी फाग
भख्यो अनुराग राग गावै रीझि पगि पगि । के-
सरि गुलाल सों लपटि रझ्यो रघुनाथ रूप कौ
ठगोरी डारि गोरी डारी ठगि ठगि ॥ भोड़र के
किनकाय लाल के बदन पर निरखि जोन्हाई
बीच ऐसे लसै जगि जगि । मानो फूल्यो बा-
रिज विलोकि कलानिधि आली किरनै चलाई
ते लोनाई रही लगि लगि ॥ ८४ ॥

अपरंच सवैया ।

फागु मची बारसाने के बाग सखी समता
कहि जाइ न जाकी । रीझि रही लखि हौं रघु-
नाथ जा देखि रही बहुधा चहुँघा की ॥ बाल
गोपाल पै दौरी गुलाल लै ऐसी लसौ भरी रंग
प्रभा की । चारु तमाल के संगम की भई जंगम
बलि मनौ कलगा की ॥ ८५ ॥

अपरंच कवित्त० ।

आजु एक ललना अन्हात में निहारी लाल
पीन पयोधर बीन बानौ छीन लङ्ग है । जमुना
के जल बीच कण्ठ के प्रमान पैठि पोंकै जा लि-
लार लाग्यो मृगमद अङ्ग है ॥ मुख अरु पानि
को परस भये रघुनाथ आनि ऐसौ लसी सोभा
परम असंक है । बारिज को नातो मानि धौल
करिबे कीं मानौ कौल कलानिधि में को धोवत
कलंक है ॥ ८६ ॥

अपरंच सवैया ।

देखि दरीची छै प्यारी को रूप समै रघुनाथ
कीं सोहरि ए हैं । पीठि दिये पग पानि समेटि
लगी उर सों डूमि सोवत हे हैं ॥ ऐसे रहे लसि
नौन निचोल सों कंचन से उधरे अंग जे हैं ।
कौल के फूलन की रचि माल सनाल गोपाल
मनौ पहिरे हैं ॥ ८७ ॥

अपरंच ।

देखि री देखि या ग्वारि गँवार की नेकु नहीं
थिरता गहतौ हैं । आनँद सों रघुनाथ पगीं पगीं

रंगनि सों फिरतै रहती हैं ॥ छोर सों छोर
तखोना को कूँ करि ऐसी बड़ी छवि कों लहती
हैं । जीवन आइवे को महिमा अँखियां मनो
कानन सों कहती हैं ॥ ८८ ॥

अपरंच कवित्त ।

गवनि गयंद गूजरटो गरु गुनन को गली में
मिली ज्यों देखिवे को तरसानो है । कहै रघु-
नाथ वाके सुख की मरीचो आगे चिलक जा-
न्हाई की न चन्द सरसानो है ॥ चारु कुच कलित
ललित रामराजौ राजौ साजौ कवि समता बि-
नाद बरसानो है । उर छवि-सागर में सिन्धुर
धस्यो है मैन बूढ़ गया धर कर कुंभ खुला
मानो है ॥ ८९ ॥

अपरंच कवित्त ।

भुजदण्ड बली बरिवण्डसिंह महाराज बैरी
बरबिक्रम को काटी फौज पल में । कहै रघुनाथ
कवि कहिये कहाँ लों सीमा जैसी कछू समर
की भई दलमल मै ॥ फिरत कबन्ध मध्य बौरन

के जुत्य जुत्य यों लसैं बिहद फ़ैले स्तोनित कैं
थल मै । लपटें समेत लह लह लह लहकत
मानौ परे दहकत काठ दवानल मै ॥ ६० ॥

बस्तूत्प्रेक्षा अनुक्त विषय यथा सवैया ।

सिगरे दिन बारि पहार समेत तचै अति
दुखह पूषन सों । भई मैली महा रघुनाथ कहै
बहु कारि बयारि के रुखन सों ॥ पल डोठि ल-
गाइ न जाइ लखी ऐसी भूरि रही भरि दूखन
सों । साइ लीपत सो ससि आवतु है दिसि
भीजा प्रियूष भयूषन सों ॥ ६१ ॥

उदाहरन कवित्त ।

देतु है न कल एक पल एहा रघुनाथ पौन
पक्खिवाँहो बहै अङ्गनि किलत सो । पानी की
कहानी सो तो जाति न बखानौ कछू नेक पर-
सत पानि पाइ पघिलत सो ॥ कैसे कौ हिमन्त
अन्त सिसिर को ह्वै है पल पट के टरत पेट
पीठि सों मिलत सो । जब सों उयो है आजु
तब सों है देखि सखी तरनि को तेज भीत आ-
वत गिलत सो ॥ ६२ ॥

अपरंच सवैया ।

खलि कै फागु फिरो जब सों तब सों दृग
देखिये मेर मख्यो सो । आवत है मुख जो सो
बकै ककु खाहि न पीवहि भूत चख्यो सो ॥ ऐसी
दसा सब को रघुनाथ रछ्यो तपि के अंग आगि
डख्यो सो । डारि गयो नँदलाल सखी ब्रज
बाल पै मानो गुलाल पख्यो सो ॥ ६३ ॥

अपरंच कवित्त ।

राति को बमत एक साथ सदा कुंजधाम
काम की कला के भांति भांति मोदमये हैं ।
इतनो वियोग का सँयोग होत रघुनाथ भोरही
बिदा है आय आपु घर गये हैं ॥ प्रेम को नि-
काई की न जाति ककू गार्ड रीति साँझ परे
फेरि जब आइ मैं मिलए हैं । बिहँसि बिहँसि
दोऊ ऐसे मिलैं परसन बरसन बीते मानो
दरसन भये हैं ॥ ६४ ॥

हेतूत्प्रेक्षा सिद्धविषया यथा सवैया ।

दूक गोप लली लिये सङ्ग अली दस बीस

अन्हेवे की आवति हैं । रघुनाथ विलोकितही र-
हिये दूतनी अँखियाँनि कीं भावति हैं ॥ छवि
बाँकी कहां लौं कहौं सिगिरौ तन में तरुनाई
जो छावति हैं । रंग गोरो भयो दूतनो भलकै
अंग में मना केसरि लावति है ॥ ६५ ॥

अपरंच सबैया ।

जीवन कौ लखि सम्पति प्यारी के आपु
सदा हित ह्वै रहिवे कीं । प्रेम की नेम निबाहि
लगे बुधि के बल सों मुख के लहिवे कीं ॥ प्यारे
के अँगुन अँगुन सों रघुनाथ सुना ही हियो
नहिवे कीं । बाढ़ि परे तें अमान ह्वै लोचन कान
लगे हैं मनो कहिवे कीं ॥ ६६ ॥

हेतूत्प्रेक्षा असिद्धविषया यथा कवित्त ।

तेरे कुच पेखि कै बरोवरी कीं इन्द्र कीन्हें
अचल अचला पर काटि कै सरनि सों । तेरे
नैन निरखि समानता कीं मैन बान सान पर
धरवाये हैं कारीगरनि सों ॥ तेरो मुख सुन्दर
बिलोकि समता कीं ससि कहै रघुनाथ रवि पो-

खत करनि सों । तिर बार बारिद निहारि तुलबि
कों मानो देखि धार धरवा कौ लार्इ है धरनि
सों ॥ ६७ ॥

फलोत्प्रेक्षा असिद्धविषया यथा सवैया ।

है न समै यह रुसिबे को निजु में रघुनाथ
की सौह सुनार्इ । भीतर बेठी कहा करतो हौव
एती कही में गहें निठुरार्इ ॥ बाहिर आइ के
देखि बलाइ ल्यों आजु के मेघनि जो छबि
पाई । बारि को भार सँभारिबे कों मनो धार
धरा धरवा की लगार्इ ॥ ६८ ॥

फलोत्प्रेक्षा सिद्धविषया यथा सवैया ।

कातिक माह में तारे कौ छाह में नैबे की
जो चित चोप ठई है । भोजन भूषन वस्त्र को
दान औ जो सनमान के भूमि दई है ॥ गौरौ
गिरीसहि पूजहिँ जो रघुनाथ में सो सब जानि
लई है । तोही सी हूबे कों मानो बलाइ ल्यों
सौतिन के उर साध भई है ॥ ६९ ॥

अपन्हव लच्छन ।

दोहा ।

जहँ उग्रेच्छा सो मिलो आपु अपन्हति होत ।
ताहि अपन्हव कहत हैं अलङ्कार कवि गोत ॥ १०० ॥

उदाहरण सवेया ।

खंजन की अरु मीनन की अरु अंबुज की
जिय जीति बसे तें । काम के बानन की मृग
कौ औ दुरफन कौ कृषि देखि हँसे तें ॥ ऐसे नि-
सौग नए रघुनाथ न मंजन अंजन देख लसे
तें । तेरे बिलोचन यातें भटू भये तीखे तस्यो-
ननिधुँ निकसे तें ॥ १०१ ॥

अपरंच सवेया ।

वेऊ तो आई हैं व्याहि सबै उन हूँ को तो
है इक एही ठिकाने । कैसे कहौं तुम काहु के
जाहु न है कहिवे यह लायक जानो ॥ आपुस
में मति द्वेष करौ रघुनाथ की सौह कही उर
आनौ । सौतिन को नहिँ भावतो है प्रिय है
पिय भावतो तेरोइ मानो ॥ १०२ ॥

रूपकातिशयोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहँ निगरन उपमेय को बिलसि करै उपमान ।

रूपकातिशय उक्ति सो जानत सकल सुजान ॥ १०३ ॥

उदाहरन सबैया ।

पंकज पै कदली कदली पर केहरि को
मधि भाग जग्यो है । केहरि के मधि भाग के
ऊपर स्याम लता गिरि तापै खग्यो है ॥ है गिरि
पै रघुनाथ कपोत कपोत पै चन्द्रमा देखि पग्यो
है । चन्द्रमा में छवि देत हैं मौन औ मौन में तें
सराशित तग्यो है ॥ १०४ ॥

अपरंच सबैया ।

देखि ये देखि सखौ झुहँ ओर कहा उत
हेरि रही दृग दीन्हे । कौतुक ऐसी न फेरि कहूँ
अवहूँ मिलिहै अचका बिनु चीन्हे ॥ जंगम
चंपक बेलि पै बेठि कहै रघुनाथ बड़ो छवि
कीन्हे । आवत आपु खेलावत गोद में खंजन है
निसि रंजन लीन्हे ॥ १०५ ॥

अपरंच सबैया ।

खेलत सिकार गयो जगर पहार चढ़ि देस

लूख्यो धाड़ कै अगोरी नगर को । पख्यो सोर
चारों ओर कहै कवि रघुनाथ निकस्यो गोहार
रत्नपूत घर घर को ॥ भूप बरिवण्ड की बहादुरी
कहाँ लो कहौ प्रगट प्रभाव देख्यो भारो भुज-
वर को । मारि कै चंदेल अलवेल महाबाहु
कौन्हो राहुमई केतुमई खेत बड़हर को ॥१०६॥
संबन्धातिशयोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहँ अजोग में जोग है है अजोग जहँ जोग ।

संबन्धातिशयोक्ति सो दुविध कहत कवि लोग ॥१०७॥

अजोग में जोग यथा उदाहरन कवित्त ।

जटित जवाहिर सों दोहरे देवानखाने
कृष्णा क्वाति आंगन हउज सर फेरे के । कगी औ
केवार देवदारु के लगाए लखौ लछ्यो है सुदामा
फल हरिपद हरे के ॥ पल में महल विश्वकरमै
तयार कौन्है कहै रघुनाथ कैयो जोजन के घेरे
के । अतिहीं बुलन्द जहां चन्द में ते अमी चारु
चूसत चकोर बैठे ऊपर मुड़ेरे के ॥ १०८ ॥

अपरंच कवित्त ।

आजु बरसाने गर्व राधिके विलोकिबे कीं

गाउँ बौच घैर सबहो के मुख लहिये । सोचति
 डेरानी माय लिलानी फिरै धाय रघुनाथ सखी
 कहैं हाय ऐसा चाहिये ॥ लेखे नहिं हारे देखि
 जवत परेखे मन उनकी जो देहँ दसा थोरोहू
 मो कहिये । आखर गरम बरें लागे स्वास वाय
 कहूं जीभि जरि जाय फिरि बोलिबे ते रहिये ॥

अपरंच कवित्त ।

जौन लिखि दइ तुम अतिहीं सनेहमई
 गई लै रसिक तौन जहां प्रेम राती हो । सौंहे
 ठाढ़ी भई मोहिं देखत बुलाइ लई बूझि कै
 कुसन लई सुखद सोहाती हो ॥ रघुनाथ दसा
 कहू मोपै न बखानौ जातौ ऐसौ कहू वास हाल
 विरह सो ताती ही । कूवतहीं बरिउठौ मैं तो
 देखि डरि उठौ समझौ न काती वह पातौ हो
 कि बातौ हो ॥ ११० ॥

अपरंच सवैया ।

आपुन के बिकुरे मनमोहन बीती अवे
 घरी एक को है हे । ऐसी दसा इतने मैं भई

रघुनाथ सुने भय ते सन भवै है। गोपिन के अंसु-
आनि को सागर बाढ़त जात मनौ नभ क्यूँ है ।
बात कहा कहियै ब्रज की अन-बूड़ोई हूँ है कि
बूड़त हूँ है ॥ १११ ॥

जोग में अजीग यथा सवैया ।

देखि गति चासन तें सासन न मानै सखी
कहिबे कीं चहत कहत गरी पर जाय । कौन
भाँति उनको सँदेसा आवै रघुनाथ आइबे को
मोपै न उपाव ककू करि जाय ॥ बिरह-विथा की
बात लिख्यो जब चाहै तब ऐसी दसा होति
आँच आखर में भरि जाय । हरि जाय चेत चित
सूखि स्याही भरि जाय बरि जाय कागद कलम-
डंक जरि जाय ॥ ११२ ॥

अपरंच सवैया ।

तिन सों कहियै यह बात बलाइ ल्यों गो-
पन की नहिँ जानत जो । हम सों इतनी कल
हेत कहा हम साथिनि हैं इहाँ बाहिरी को ॥
रघुनाथ जो है दसा सो सुनियै ककू है न कपी

जग जानत सो ।° जब सों मिली सादर तू उन
सों तब सों घंटी व्याही को आदर मो ॥ १११ ॥

अपरंच सवैया ।

सागर-जात सराहत है श्रुति सूर हितू हित
कै सरसावै ॥ श्री को सहोदर सीरो सुभाव सदा
रघुनाथ कहै कवि गावै ॥ साथ सभा सुर की
लहिये अरु अंसुनि औनि अकासहि छावै । ऐसो
जज ससि प्यारे तज तुष आनन आगे न आ-
दर पावै ॥ ११४

जोगा-जोग लच्छन ।

दोहा ।

जितै जोग में होत है देखी आइ अजोग ।

होत जोग फिरि आइ तेहि कहियतु जोगा-जोग ॥ ११५ ॥

उदाहरन सवैया ।

औधि के पास गोपाल के पास चलौ बन
कों निसि जाम गये हैं । एते में मेव अकास
में आइ कै छाई दिसानि अंधिरी लई चू ॥
पाइवे को पथ ऐसी समै रघुनाथ की सौंह सुनौ
सुख सो भवै । अंग के संग अभूषन-जाल सों
आपुहि बाल मसाल गई छे ॥ ११६ ॥

अक्रमातिशयोक्ति लंछन ।

दोहा ।

कारज कारण संग जहँ बरनत हैं कविराज ।

अक्रमातिशयोक्ति सो सकल रसनि को साज ॥ ११० ॥

उदाहरण सवेया ।

रावण आदिक जिते महीप बोलाइ दूतै के
अनेक निहारे । देख री कैसे लजाने सबै लखि
नैन सों नैन न जात हैं जोरे ॥ गोसे गुमान गु-
मानिन के रघुनाथ बिलम्ब लगी नहिं मोरे । लै
गुरु-सासन श्रीमिथिलेस को सोच सरासन सा-
थहि तोरे ॥ ११८ ॥

अपरंच कवित्त ।

छप्पन करोड़ मेघमाला आई ब्रज पर बरसै
मुसर-धार रोप्यौ मझा प्रलै काल । बूढ़ि गयौ
थल जल जहाँ तहाँ फ़ैलि उठ्यो जीव जंतु जहाँ
कों हे सकल भए बिहाल ॥ रघुनाथ देखि दसा
दया आई दूतने में सबही के देखत मे रच्यो
एक एसो ख्याल ॥ गोपन को सनमान मज्जा
को अपमान एक साथ कीन्हें गिर धरि गिर-
धर खाल ॥ ११९ ॥

चपलातिशयोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

कारख के परसंग में जहँ कारज की सिद्धि ।

सो चपलातिशयोक्ति है बरनत हैं बर बुद्धि ॥ १२० ॥

उदाहरन कवित्त ।

हरष हिराए आनि निकट बसाए दुःख
 कौन धौं सिखाए ऐसे मन्त्र अनरथ के । कहै
 रघुनाथ राज पदवौ के समै कैसी हितू नै अ-
 काज कौन्हों बैरो लौं अकथ के ॥ केतो पाप
 पापिनि कमायो देखो हाय हाय कटि जैहैं
 प्राण ए कटत बोल पथ के । राम को बिपिन-
 वास केकर्तु के कहैं देखो पीरे भए सूखि गए
 गात दसरथ के ॥ १२१ ॥

अपरंच कवित्त ।

एक दिन दरसन हित कर दमेस्वर महा
 बीर बरिवरुड आपुन पधारेव । लगे तहाँ कपाट
 हट कखे सो सावन्तन बल कल करि खोजत
 पे सब हारेव ॥ कौतुक निरखि आप करि आप
 जीव मई मन मई महति भगति बिसतारेव । खुले

आपु आपुहिं तहां वे पट मन्दिर के सुले तब जख
जय जय दिखि नारेव ॥ १२२ ॥

अत्यन्तातिशयोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहां अतिक्रम कीजिये पूर्ब पर गहि रीति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो बरनत कवि यहि रीति ॥ १२३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

धसत तरङ्गिनी में तीरहीं तरल आइ बस्यो
ग्राह पाइ खैंचि पानी बीच तरज्यो । करभी
कलभ करें कलपना कूल ठाढे कहा भयो कहा
कहना कै सह तरज्यो ॥ कठिन समै विचारि
साहस सों गयो हारि हरि-पग ध्यान रघुनाथ
ज्योंहीं सरज्यो ॥ असरन-सरन बिरद को परज
देखि पहिले गरज गई पाछे गज गरज्यो ॥ १२४ ॥

अथ भेदकातिशयोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

भेदकातिशय उक्ति सो जाकी ऐसी रीति ।

धीरे धीरे कहत हैं जाकी गुन करि प्रीति ॥ १२५ ॥

उदाहरन कवित्त ।

पीठ पे न कुबर हो वाके सुनौ टोना बांधि

बलुआ बनाइ सौँधो धाती ही मयन की । चन्दन
 के मिसि करि सार्ई खालि सीस लायो प्रगठ
 निहारि चारु मूरति चयन की ॥ एही रघुनाथ
 परभाव वाकी उन्है घेछो अब कहा कीजै सोच
 पाछलि बयन की । प्रीति कछू औरै भई
 रीति कछू औरै भई नीति कछू औरै भई राजिव-
 नयन की ॥ १२६ ॥

अपरंच कवित्त ।

अब न रहौ है नेक एही कवि रघुनाथ
 आए तुम देखि जौन वाकी वहे गौरई । जो-
 वन के आवत उलहि गई एकै बार बालक बयस
 की बसी हो जौन बौरई ॥ औरै कछू मति गति
 औरै कछू रति अति औरै कछू मन में मिली
 है पाइ कौरई । औरै कछू चलनि चितौनि
 कछू अरे भई औरै कछू अह रह रूप कछू औ-
 रई ॥ १२७ ॥

तुल्ययोगिता लच्छन ।

दोहा ।

बन्य भवन्य को धन्य एक के औरन को होइ ।

तुल्ययोगिता दुबिध सो बरनत है सुख-भोइ ॥ १२८ ॥

बन्याबन्य को एक धर्म यथा सवेया ।

गेहनि गेहनि गोपनि के बहु बाजत आनंद
बीच बधाए । देखतही बनि आवतु है रघुनाथ
सखी गुन जात न गए ॥ आज लों काहू ज-
सोमति कैसा दिगोसन की तिय पूत न जाए ।
जाके भये तिहुँ लोक की आजु धनी निधनौ
दाउ मागन आए ॥ १२८ ॥

अपरंच सवेया ।

रस पी कै सरोजन ऊपर बैठि दुरेफ रचें
बहु सोरन कीं । निज काम की सिद्धि विचारि
बटोही चलैं उठि कै चहुँधोरन कीं ॥ सब होत
सुखी रघुनाथ कहै जग बीच जहां तक जोरन
कीं । एक सूर उदै के भयें दुख होत है चोरन
और चकोरन कीं ॥ १२९ ॥

बन्य तें धीर को एक धर्म यथा सवेया ।

बाम बनावत बोति गई वय पै नाहिँ धीर
बखो जियराई । तोहि बनावत आनि बसी
विधि के तन में मन में सियराई ॥ जीवन आ-

वत लाली सरीर में है रघुनाथ झूती निर्यदार्थ ।
तेरी सों देखत जाके परी लखि केसरि कंचन
की पियराई ॥ १३१ ॥

अपरंच कवित्त ।

बलि मई लाल बलि खीजे झूजिये निहाल
आई हों लेवाइ के जतन बहु बंक सों । बनि
आवे देखतही बानिक बिसाल बाल जाइ ना-
सराही नेक मेरी मति रंक सों । आपने करन
करतार गुन भरी कहे रघुनाथ करो ऐसी दूखन
के संक सों ॥ जाकी मुख-सुखमा की उपमा
सों न्यारे भए जड़त। सों कमल कलानिधि
कलङ्क सों ॥ १३२ ॥

अपर तुल्ययोगिता लच्छन ।

दोहा ।

हित अनहित के हित में एक धर्म जहँ होइ ।

तुल्ययोगिता अपर यह कहत सुकवि सुख मोइ ॥ १३३ ॥

सदाहरन सवेया ।

बोलनि बीच अभी जहिँ के रघुनाथ कहे
प्रमटे परै चीन्ही । जावन की दुति ऐसी जसे

जनु होनि कृपाकर की कवि खोन्ही ॥ और
कहां की कहीं गुन गौरि के गौने इती प्रभुता
प्रभु कोन्ही । सौति के मानहिं पीके गुमानहिं
भावत आपु पराजय दीन्ही ॥ १३४ ॥

अपरंच कवित्त ।

जासौं बैर तासों बैर जासों प्रीति तासों
प्रीति करनो उचित है बिदित सब जन कीं ।
एक ऐसी चलन चलावनो सो भली नाहिं यामे
जागि जात है कलङ्क चतुरन कीं ॥ मेरी कही बात
जाकी जो न परतीत आवै एहो कवि रघुनाथ
रावरे की मन कीं । प्रगट निहारि यह जोअै हो
मुरारि रीति देत बारि बारिद है प्यासी चात-
कन कीं ॥ १३५ ॥

अन्य तुल्ययोगिता लच्छन ।

दीक्षा ।

जहिं गुन की सरलता सोई बचन समान ।

तुल्ययोगिता अन्य सो बरनत सकल सुजान ॥ १३६ ॥

उदाहरन संवेद्या ।

छोरम में परिपूरन कीतकी मासती मौज-

सिरा भी तुहूँ है । गौरता में कल कंचन किसरि
 भीर तुहूँ हैं मनी सबहूँ है ॥ बानक में रघुनाथ
 कहे रति रत्ना भी तुहूँ है देखी महुँ है । ऐसी
 रची विधि भावतो तोहि न तेरी कुटो मरजाद
 कहूँ है ॥ १३७ ॥

अपरंच सबैया ।

एक घरी न जुदी छे सकै रघुनाथ घिरी
 गुरु लोग के फन्द सों । आई सा आपने गेह
 सेवाइ तिहारे लिये बस कै बहु कन्द सों ॥
 बैठे कहा इत कीजे बलाइ ल्यों बेगि उते चलि
 भीजो अनंद सों । प्यारी को आनन पूनो को
 चन्द बिराजत दीज प्रकास अमन्द सों ॥ १३८ ॥

अपरंच सबैया ।

तोहि न रुसने जोग बलाइ ल्यों घेर करें
 मति काहूँ के लागहि । आपनपी पहिले तू बि-
 चारि लै को रघुनाथ कहा उर पागहि ॥ तो
 स्त्री बहूँ बड़भागिनि को जिहि की सब सौति
 लिये आनुरागहि । देखि सरूप सनेह सराहती
 प्यारे के भागहि तेरे सोहागहि ॥ १३९ ॥

सिद्धतुल्ययोगिता लक्षण ।

दोहा ।

गुन ते बर्ण्य अवर्ण्य को जहां नाउँ बिख्यात ।

तुल्ययोगिता सिद्ध सी कहत सुमति अवदात ॥ १४० ॥

उदाहरन सवैया ।

देव कहा औ अदेव कहा औ कहा नरदेव
कहावत सोऊ । जागी कहा औ जती हू कहा
औ ब्रती हू कहा बन में बसे जोऊ ॥ तीनि हूँ
लोकन में इन सों रघुनाथ रघो विनु हारे न
कोऊ । बान सों मैन कटाच्छ सों नैन सी ए जग-
जैन बिख्यात है दोऊ ॥ १४१ ॥

दीपक लक्षण ।

दोहा ।

बर्ण्य अवर्ण्यन को जहां एको बर्ण्य उदीत ।

अलङ्कार दीपक तहां बरनत कवि के गीत ॥ १४२ ॥

अपरंच सवैया ।

चारु है सांझी की तोरनि फूल तोरावति
ठाढ़ी सखी छबिरास तें । बेगि उत्तै चलि देखी
बलाह ल्यों है रघुनाथ लखी मन वास तें ॥
भौरन की लागि भौर रही अरु भौर चकोरन की

जिहँ पास तें भीतर बाग के सोभित होति है
मालती बास तें प्यारी प्रकास तें ॥ १४३ ॥

दोहा ।

दीपक जो सो तीन बिधि दूक है पद आवृत्ति ।
अर्थावृत्ति सु एक है ओर पदार्थावृत्ति ॥ १४४ ॥

पदावृत्ति दीपक लच्छन ।

दोहा ।

अर्थ दीर्घ पद एक की बहु आवृत्ति जहँ होइ ।

पदावृत्ति दीपक तहां बरनत कवि सुख भोइ ॥ १४५ ॥

उदाहरन सबैया ।

चहुँ ओरन तें गन मोरन के ढिग पाइ के
नाचन लागत हैं । तजि मालती कुंज मधुव्रत
पुंज से चौर भये सुख पागत हैं ॥ रघुनाथ जहां
तक गोधन है संग ते चरिबो प्रगित्यागत हैं ।
सुर साँवरे साँरंग रागत हैं बन में सब साँरंग
रागत हैं ॥ १४६ ॥

अर्थावृत्ति दीपक लच्छन ।

दोहा ।

अर्थावृत्ति दीपक जहां अलङ्कार में होइ ।

सुकवि तहांबरनत करत एक अर्थ पद दीय ॥ १४७ ॥

उदाहरन सवेया ।

बातैं वसोठिनि सों सुनि कै मिलिवे को भए
अभिलाषित दोज । भागन भेंट गली में अचा-
नक मासों गोपाल सों छै गई सोज ॥ चाह्यो
कह्यो ककु आपुस में रघुनाथ निहारि नजीक
न कोज । एते में आइ वै लाज अरो सखी में
रही चाहि चितै रहि ओज ॥ १४८ ॥

अपरंच सवेया ।

तोहि असंत के आवतही मिलिहैं इतनी
कहि राखिहि तू जे । सो अब बूझति हौं तुम सों
ककू बूझे तें मेरे उदास न हूजि ॥ काहे तें
आए नहीं रघुनाथ ए आइ क औध के वासर
पूजि । देखु मधुव्रत गूंजि चहुं दिसि कोइल
बाली कपोतज कूज ॥ १४९ ॥

पदार्थावृत्ति दोपक लच्छन ।

दोहा ।

तहां पदार्थावृत्ति को कबि-जन करत बखान ।

जहां एत पद अर्थ इक प्रगट परत पहिचान ॥ १५० ॥

उदाहरन कवित्त ।

देव की समूह सब सुखी भयो आजुहीतें
दुखी भयो दानव की बंस महारिस की । आजु
तें बड़ाई जोग मानुष की बेस भयो भयो धरा-
धारिबे की सेस देस हिस की ॥ कुंवर कहैया
की जनम भयो रघुनाथ आजु तीनों लोक भयो
प्रेम नेम चिसकी । गोपन की गीत भयो आजु
ते अखण्डल से भयो वृजमण्डल अधिप दसों
दिस की ॥ १११

अपरंच सवैया ।

बातें बनाइ बनाइ कहौ कहिये रघुनाथ
की सींह लरैगी । और न काई बची ब्रज में
एक तूँही है नेम निबाह करैगी ॥ आये भये
दिन चारि इतै अबहीं सबहीं की कुनाउँ धरैगी ।
तान भटू मनमोहन की वह कान परैगी तौ
जानि परैगी ॥ १५२ ॥

अपरंच कवित्त ।

संपति के आखर ते पाइ में लिखि हैं लिखि

भुवभार थांभिवे के भुजनि बिसाल में । हिय में
लिखे हैं हरि मूर्ति बसाइवे की हरि-नाम
आखर सो रसना रसाल में ॥ आंखिन में आखर
लिखे हैं कहै रघुनाथ राखिवे को दृष्टि सबही
के प्रतिपाल में । सकल दिसान बस करिवे
के आखर ते भूप बरिवण्ड के बिधाता लिखे
भाल में ॥ १५३ ॥

प्रतिवस्तूपमा लच्छन ।

दोहा ।

इक समान वाक्यर्थ को बरनन जहँ पैं होत ।

प्रतिवस्तु उपमा तहां बरनत कवि के गीत ॥ १५४ ॥

उदाहरन सवेया ।

आपने हाथ करे करतार भरे अति रूप
तमासे के काजें । तौनिहुं लोकनि में भए पूज्य
महा महिमा सों भरे सुखमा जैं ॥ दोऊ बरोबर
ए रघुनाथ सदा अपनो अपनो जस साजें । रंग
सों बारिज छाजें भरे-कवि प्यारी के नैन कटाक्ष
सों राजें ॥ १५५ ॥

दृष्टान्तालङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

जहाँ बिम्ब प्रतिबिम्ब को बरनत सो दृष्टान्त ।

अलङ्कार में मुकवि सब भाषत हैं पति कान्त ॥ १५५ ॥

उदाहरन सबैया ।

नायक आजु तिहुं पूर में उनको न बरोबर
सुन्दर आन है । तेरी बरोबर को युवती रघु-
नाथ की सौंह सुनी नहिँ कान है ॥ आजु तुम्है
मिलिवे कों बलाय ल्यों याते कहूं यह बूझ्या
निदान है । कीवै कों बेपरमान सनेह तुंही गुन-
मान वोढ़ै बुधिमान है ॥ १५६ ॥

द्वितीय दृष्टान्त लच्छन ।

दोहा ।

जौलों यह वाक्यर्थ को तौलों यह प्रतिबिम्ब ।

एक रीति दृष्टान्त यह बरनत कवि विमुलम्ब ॥ १५७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

तौलों नीकौ देह को न गुन बूझि परत है
जौलों न सँजोग होत आइ कोऊ रोग को ।
जौलों कोऊ समै पाय घबै न बिपति आय तौलों
ध्यान आवत न कीन्हें सुख-भोग को ॥ जौलों न

मिलत मन्त्र श्रीसर की रघुनाथ तौलों न मिलत
अंत भले बुरे लोग को । जौलों न बियोग होत
कहत है ग्यानी सब सुनि राखौ तौलों खाद
मिलै न सँजोग को ॥ १५८ ॥

निदर्शना लच्छन ।

दीहा ।

वाक्य अर्थ के सदस को जहां सु ऐक्यारोप ।

बरनत तहां निदर्शना सुकवि सकल भ्रमलोप ॥ १५९ ॥

उदाहरन सबैया ।

जोग कियो जप जग्य कियो सब काशिहि
आदिक तोरथ कीन्हे । इच्छित भोजन भूखन
का दिय बिप्रन को छिति कंचन दीन्हे ॥ आ-
तमा एक अनेकनि को अपनो रघुनाथ भली
विधि चोन्हे । सो सब कामहि सिद्धि करै थिर
है पल जो हरि नामहि लोन्हे ॥ १६० ॥

अपरंच कवित्त ।

उनके लखि हाव अनेकनि भाव सु प्रेम सु-
भावन के जुत को । मन भूलि कै तू घरियो
कबहुं मति आसरो राखि ककू उतको ॥ यह

आने रही रघुनाथ कहै पद पंकज कूँ नंद के सुत
को । हित सों बस कीबो सो बारबधू कर सों
गहि लीबो सो मारुत को ॥ १६१ ॥

अपरंच सवैया ।

लाखन घारे भए तौ कहा औ कहा भयो
जो भये लाखन हाथो । हे रघुनाथ सुना हो
कहा भयो तेज की नेज दसौं दिसि नाथो ॥ कं-
चन दाम सो धाम भयो तो कहा भयो नापि
करीरिन पाथो । जौ न कियो अपनो अनपाय
कै श्रीरघुनाथक लायक साथो ॥ १६२ ॥

द्वितीय निदर्शना लच्छन ।

दोहा ।

सृष्टि पदारथ की जहां बरनत हैं कवि एक ।

देखा तहां निदर्शना दूजो सहित विवेक ॥ १६३ ॥

उदाहरण सवैया ।

काहू के कांजन खंजन की रघुनाथ धरे
रुचि राम बिहारे । काहू के मौन मृगैनन के
गुन रूप धरे रंग के अलि हारे ॥ जेतिक हैं जग
मैजुवती तिनके टँग को एहि भांति निहारे ।

तौछन बानन की धरै बान सो ईछन ए सुखहा
न तिहारे ॥ १६४ ॥

अपरंच निदर्शना लच्छन ।

दोहा ।

तासों अपर निदर्शना कहत कविन के गोम ।

जहां असदसद अर्थ को बोध क्रिया सों होत ॥ १६५ ॥

असदअर्थ उदाहरन सवैया ।

तौछन ईछन बेधत कान बुझावत हैं इतनी
सुनिये ते । दीजिये दुःख परोसिनि कों रघुनाथ
लखि रचना प्रभु कौ ये ॥ जीवन भार भरे तिय
के कुच देखतही छे तनेन रहे जे । संपति पाइ
कै हूँ कठोर सिखावन है लघु लोगन कों ये ॥

सदर्थ उदाहरन सवैया ।

दारुन दुर्जन ताको सहोदर हैं रघुनाथ
बिभीषन देवा । एते पै आपु महा बलपूर
महारनसूर फतूह को लेवा ॥ लङ्क दई तेहि कों
रघुनाथ ने आनि मिले तजि कै अहमेवा । देखो
जनावत राजन कों कल जो फल होत बड़ेन
की सेवा ॥ १३७ ॥

व्यतिरेक लक्षण ।

दोहा ।

उपमा ते उपमेय में जहाँ अधिकई होत ।

अलङ्कार बितरेक सो बरनत हैं कवि गोत ॥ १६८ ॥

उदाहरन सवेया ।

उच्चता देखि कठोरता देखि के देखि कै
 बर्तुलता अति नीके । श्रौफल को कुच को उ
 पमा सिगरे कवि देत लहे हित, जी के ॥ सो यह
 सांच अहारघुनाथ जो सोभित होत गहें सम
 सौके । एतक जानि परै अधिकी सुख होत
 निदान कुर्यें कुच ही के ॥ १६९ ॥

सहाक्ति लक्षण ।

दोहा ।

सतमन रंजन मुकवि जहँ बरनत हैं सतभाव ।

तहँ सहोक्ति जानत चतुर अलङ्कार जुत चाव ॥ १७० ॥

उदाहरन कवित्त ।

सुरपति आदि दे कै दसौं दिगपालन को
 मारि बस कीन्हे कै विचार बड़े जस को । कहै
 रघुनाथ काहू भांति काहू सों न नयो नयो नित
 प्रगथ्यो प्रवाह को परस को ॥ रघ्यो ऐसो सठ पै

न हठ करि सक्यो नेक छाड़ि दीन्हें घर कलिवर
बरकस को । महा रनधीर रघुवीर को सरन
आपु बानहीं के साथ आयो प्रान सीस दस
को ॥ १०१ ॥

अपरंच सवैया ।

रूप अनूप लख्यो कितनो रघुनाथ कहै
वृज की बनिता को । पै नहिँ ऐसो पयों कोज
झीठ बन्यो एहि भांतिन तें सिर पा को ॥ और
कहीं सो सुनौ चित दै एहि भांतिन को नि-
रख्यो गुन वाको । जात दिगंतन लों चलि कै
मिलि साथ समीर के सौरभ जाको ॥ १०२ ॥

बिनोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

वर्ननीय बरनत जहां कछू वस्तु बितु हीन ।

तासीं कहत बिनोक्ति सब अलङ्कार परबीन ॥ १०३ ॥

उदाहरन सवैया ।

मल्ल को सो बल पूरन कै कै करी चिकनी
करि रोज सनेही । चौमर चन्दन चारु दुकूल
में भूषित भूरि करी सुख गेहो ॥ कैयो प्रकार

को भोजन है रघुनाथ करी गुर स्वच्छम जे हो ।
एक बिना हरि नाम जपे सब भांतिन सों बिनु
काम की देही ॥ १७४ ॥

अपरंच सवैया ।

देखि जिन्है हँसि धावत हे लरिकापन धूरि
की बीच बकैयाँ । लै जिन्है संग चरावत हे रघु-
नाथ सयाने भये चहुँघैयाँ ॥ कीन्ह बली बहु-
भांतिन तें जिनको निति दूध पियाइ के मैयाँ ।
पैयाँ परौ इतनी कहियो ते दुखी हैं गोपाल
तुम्है बिनु गैयाँ ॥ १७५ ॥

अपरंच सवैया ।

कछु देखि कै लच्छन छोटी बड़ी सम बात
चलें कहि आवतु है । इतने के लिये करिये
इतनी रिस को मुनि कै सुख पावतु है ॥ क-
हती हो कि चांदनी देखि रहैं जो कही रघु-
नाथ बिलावतु है । तुमहीं करो न्याय लखे
बिनु तोहि लला की कलानिधि भावतु है ॥

द्वितीय विनोक्ति लक्षण ।

दोहा ।

वर्ननीय बरनत जहां काहू बिन रमनीय ।

दूजो भेद विनोक्ति को कहत सुकवि कमनीय ॥ १७७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

दामिनि की ऐसो देखि देह की दमक और
अमल अपूरव जो सौरभ लसतु है । पावस की
रजनी अंधरी में लखी न जाउं ऐसो जो अँदे
सा तेरे मन में बसतु है ॥ सोऽवकरि दूरि सुख
पूरि चलि प्यारे पास रघुनाथ मेरी कही कोजै
न असतु है । रूपनिधि आनन की जोति सों
मिलार्इ जोति देखि आइ बिधु बिनु बारिद ल-
सतु है ॥ १७८ ॥

समासोक्ति लक्षण ।

दोहा ।

प्रसुत सों जइँ होति है अप्रसुति अस्फूर्ति ।

समासोक्ति तासों कहत अलङ्कार सुभ मूर्ति ॥ १७९ ॥

उदाहरन कवित्त ।

जग में बिदित कहै कवि आजु रघुनाथ
सबही की ऊपर जसीलौ जाकी गीत है । नखते

जे सिख लौं सकल अंग सुधामई आनंद को
करता सुन्दरता को पोत है ॥ ओरं गुन सुना
ताकी महिमा कहां लो कहै औषधी को प्रति
वर बुद्धि को उदात है । तजि दीन्हे लाज देखो
परम पुनोत आपु ह्वै कै द्विजराज बस बारुनी
के हात है ॥ १८० ॥

अपरंच कवित्त ।

जाचक विचारि जानि आसरित आपनो है
प्रेम-भाव भगति सौं परे द्विय घर को । कहै
रघुनाथ फेरि आपनो सरूप देखि आनंद देव्या
सदाचर औ अचर को ॥ आपुही सौं कृपा करि
तपित करै तो करै उमड़ि घुमड़ि क बरसि
बूंद वर को । एतक सकति है न चातक
में बरसावै प्यास लागे आपनी गरज जलधर
को ॥ १८१ ॥

अपरंच कवित्त ।

प्रथिक न आवैं कोज पास तजि दीन्हे आस
पच्छी ह्वै उदास चलि बास अनतै गछी । सा-
थिनि सदा की जे हीं संग में सहेली बेलौ जानिये

न कितै गईं खोज काहू ना लह्यो ॥ टूटे आल
बाल एही कवि रघुनाथ हाल बिधि के बिरुद्ध
कौन मोपें जातु है कछो । फूले फरे तब जिन्है
देखे हे बिभात अब तिन बिटपन मै न पात
एकज रछो ॥ १८२ ॥

परिकर लच्छन ।

दीहा ।

अलङ्कार परिकर तहां बरनत हैं सुख भोइ ।

अभिप्राय जुत कवित में जहां बिसेसन होइ ॥ १८३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

निरखि अनूप रूप एरे मन भूलै मति मति
सीखु मेगी सीखैं छोड़ि दे सकल कर । पास
जनि लागै पास आस मिलिवे की राखि राखि आस
जीवे की न ए सकौ न डारै डर ॥ घायल करैगो
करि हायल तनकही में पायल-पनो तू त्यागु
चायल भयो जो बर । काम के रहत सदा साथ
लाग्यो काम आपु महाबाहु वर सर धर सरासन
धर ॥ १८४ ॥

परिकरांकुर लच्छन ।

दोहा ।

अभिप्राय जुत कवित में कहियतु जहां बिसेस ।

परिकरांकुर होत तहँ अलङ्कार सुभ भेस ॥ १८५ ॥

उदाहरन सवैया ।

रूप अनूप निहारि कै दूर तें देखिवे कों
 अपनो मन दीन्हो । पाइ दवे चलि पास गयो
 रघुनाथ कहै अति लोभहि लान्हो ॥ लोचन के
 दुख मोचन को सा कहा कहिये रँग नेकुन
 चीन्हो । बाम के पायल को सुनतै धुनि घायल
 काम धनुर्धर कीन्हो ॥ १८६ ॥

श्लेषालङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

अलङ्कार अस्लेस सो बरनत हैं कवि लोग ।

जहां अर्थ है तीन को सोभित होत सँजोग ॥ १८८ ॥

है इक बर्ण्य अबर्ण्य इक बर्ण्यबर्ण्य सु एक ।

बिबिध कहत अस्लेस कों कविकुल सहित बिबेक ॥

बर्ण्यादिक लच्छन ।

दोहा

बर्ण्य बर्ण्य को स्लेस जहँ है तहँ कहियतु बर्ण्य ।

जहँ अबर्ण्य को स्लेस है कहियतु तहां अबर्ण्य ॥ १८९ ॥

बन्य अबन्यन को जहां कीजतु है अम्लेस ।

बन्याबन्य कहैं यहां जेहैं सुकवि सुबेस ॥ १८० ॥

बन्य बन्य को श्लेष यथा कवित्त ।

रति राखे रहति भगति पाइ बरनी को
बरनी के जगत को जैतवार टेक हैं । सुमन
धनुषधर सरन सों सोभित हैं चारुता सुजस
लोग गावत अनेक हैं ॥ कलानिधि कुल के प्र-
काम के करैया कहैं कवि रघुनाथ धरें परम
विवेक हैं । सबही को मन अभिरामता के
मोहिवे को ऐसे समरथ काम एक राम एक
हैं ॥ १८१ ॥

अबन्य अबन्य को श्लेष यथा कवित्त ।

सुगुन समेत कहैं कवि रघुनाथ सो है परम
विचित्र अंग रंग में निहारिये । मृधी मुकुमारन
में गनो औ रसीली घनो धनो को प्रियारी फूल
सिर जा सँवारिये । अलिन को गन छन छोड़त
न पास पास बास आस धरें धरें धीरज को
भारिये । ऐसी तू है सुन्दरी सुगन्धि सों खासी
देखि सुमन को नबला सी तो पै वारि डारिये ।

बन्धु अर्बुद श्लेष यथा कवित्त ।

भरे तन-सुख सिरी साफ सोहै रघुनाथ
अतलस रही गज गति में बखान है । भिलमिली
बन्दी की विराजै पाँति न्यारीनी की काकनौ
निहारी औ रुमाल मुभ ठान है ॥ गाढ़े कुच की
है मेही कमर अलक परी औरज चिकन पट
केतो मुख दान है । तुम हौ, मुजान बलि गई
चलि देखौ साज आजु बनी बनिता बजाज की
दुकान है ॥ १८३ ॥

अपरंच कवित्त ।

तू ती लाल करके रे सारस भगर, तोते ती-
तरतु रमती बटेरे कहियतु है । सिंधुवार कूके
रघुनाथ कल सिरी भर तुलें करि बानक हरीलै
लहियतु है ॥ पौ को बाक सुन कर धूतिप चिते
सराहि बर हिय अगिनि बगेरौ चहियतु है । कर
चीटी बगबगी नाक-बासा बिसरें दे स्यामा बया
कूरन गरूर गहियतु है ॥ १८४ ॥

अपरंच सवैया ।

जीवन बाकी ककूक रघो तन भीति भरे

संग के सब जी हैं । छीन महाई सरोज बिलो-
किये दीन ह्वै पच्छी ठरे कितही हैं ॥ सूने भए
प्रतिकूल सबै थल जे रघुनाथ बिहार में प्री हैं ।
सीरी करौ घनस्याम तची ब्रजबाम सरोवरौ
ग्रीषम की हैं ॥ १८५ ॥

तीन अर्थ को अश्लेष यथा कवित्त ।

सो हैं जुग चरन बरन ब्रत पाटी चारु
गुननि सो बीनौ महा महिमा के ठाठ की ।
राजति अनूप रूप रङ्गनि अनेक भरी परम नरम
पद सदसुख घाट की ॥ प्यारी लागे भोग करता
कों कहै रघुनाथ नित चित बसी हो ते नासक
उचाट की । बिधाता को सृष्टि ऐसे वाट की
बनी है देखो भाट की कवित्त जैसी खाट आठ
काठ की ॥ १८६ ॥

श्लेषाभास लच्छन ।

दोहा ।

एके पद श्री अर्थ इक है छे को असलेस ॥

सो असलेसाभास है बरनत सुकवि सुखेस ॥ १८७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

जोई देखै सोई देखि रहै कहै रघुनाथ बिधि
 की निकाई गावै एती जीती चाहिये । पूरब जनम
 में करम जौन कीन्है ताकी होति हे प्रतीत मते
 पोथिन के लहिये ॥ और सुनी मग ऐसे नैन को
 मिखावै पन इन्है और देखि देखिबे ते बाज
 रहिये । एती सब रीति जो तौ नीति सों बिचारौ
 तौ तौ रूप औ कुरूप में न भेद कछू लहिये ॥

अप्रस्तुत प्रशंसा लच्छन ।

दोहा ।

अप्रस्तुति को होति जहँ प्रस्तुति सों अस्मृति ।

अप्रस्तुत प्रशंसा कहत अलङ्कार करि स्मृति ॥ १८८ ॥

उदाहरन कवित्त ।

पलक न परति ठरति है न कानन लों
 लाये टक लेस लखिये न बनसी की है । पलटै
 न रंग अंग परै न सिथिल नेक लागै न तिमिर
 लाज होतन नजौकी है ॥ सीत की न भीत
 कछू तेज की न रघुनाथ पागति न डर बरु है
 किरकिरी की है । देखिबे को बनक बनाइ

वन-माली जू की आलीरी पंखान प्रतरी की
आंखि नीकी है ॥ २०० ॥

प्रस्तुतांकुर लच्छन ।

दोहा ।

प्रस्तुति सी प्रस्तुति जहां प्रगट परत पहिचान ।

प्रस्तुतांकुर ताहि सब कविजन करत बखान ॥ २०१ ॥

उदाहरन कवित्त ।

गंध के समूह मकरन्द-भरे सोहत हैं फूले
जहां तहां ए कदंब कमला के घर । कहै रघु-
नाथ कछो मानै तो तूं तिन्हें सेइ सदा चाहै
मुख तो रिझाइ नीके गाइ कर ॥ याकी देखि
बिभव बिभूति बड़ी बूझै मति जाति को करील
यह अपत उतार वर । जग में हँसाई छै है
चतुराई में कलङ्क भाई भौर भूने मति कुसुम
ललाई पर ॥ १०२ ॥

अपरंच कवित्त ।

निपट कठोर घोर कण्ठकन पूखो तन
मूढ़-मन महा कहा गूढ़ गुन गावैगो । कहै
रघुनाथ ताते आपनो अगारी चेत हेत मति

करै जानि ही में सोच छावैगो ॥ गन्ध को न लेस
मकरन्द को न बुन्द यामे छायाज न सुखद सँ-
ताप तन तावैगो । साहेब सुजान अलि मेरी
कही मान यह अपत करील सेयें तू न सुख पा
वैगो ॥ २०३ ॥

अपरंच कवित्त ।

चाहि रहे चातिक तृप्ति तजि नदी-नद तापें
तौ न गयो आइ पखो सिन्धु सीप-बस । ताके
पंचतत्व तेज पचि परिपाक भयो लालच देखाइ
बोखो नरनि अनेक कस ॥ पहिले जननि हति
पीछे ते प्रगट भयो कहै रघुनाथ जग बीच
जाको ऐसी जस । विधि को अविधि मति भ-
रमौ सो देखो ऐसी मुकता अधरमौ सो पौवत
अधर-रस ॥ २०४ ॥

पर्जायोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

बोध अर्थ निजु को जहां होत कहै परजाय ।

परजायोक्ति नहां सुकवि बरनत हैं सुख पाय ॥ २०५ ॥

उदाहरन सवैया ।

कालिंदी के दह दारुन ते जिन कालिहि
बाहेर नाथि निकारे । इन्द्र की मान सी मर्दन
कै जिन बूड़त सों ब्रज मण्डल वारे ॥ चीर हरे
जिन गापिन के रघुनाथ भए अखियान के तारे ।
तू तिनकी करि ध्यान सदा जिन कंस से बंस
के नायक मारे ॥ २०६ ॥

द्वितीय पर्जायोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

कल के वचनन की जहां सिद्धि इष्ट की होइ ।

दृजी परजायोक्ति सो बरनत कवि मुख भोइ ॥ २०७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

कोटिन मनोज की बनक ओप जाके आगे
दबति कलानिधि की खोज कौन काढ़ी है ।
रघुनाथ हेरि गर्व हरषि हरिननैनी गहें गाँस
पैनी रीझि बतरस बाढ़ी है ॥ जमुना के तट
बंसीवट के निकट घनी वह जो कदम्बन की
बनौ छाड़ गाढ़ी है । बकरा समेत तहां साँवरे

तिहारी गाय चली देखि आई हैं देखाइ दैहीं
ठाढ़ी है ॥ २०८ ॥

अपरंच कवित्त ।

चोप चितै साँवरे की मेहँदो के मिसि ल्याई
एहो रघुनाथ गुजरेटी रूप बर की । इतने में
ओधि-आस ओज इतै आइ गए देखादेखी
होत चोट कौन्ही मैं सर की ॥ मालिनि चतुर
देखि दसा ऐसैं बोलि उठी तुम न बिगाने ला-
ल डूज नाहीं पर की । जल भरि ल्याऊँ इहाँ
कोज नाहिँ एक घरो करौ तुम दोज रखवारी
मेरे घर की ॥ २०९ ॥

व्याजोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

निन्दा सौं अस्तुति जहां प्रगट परति है जोइ ।

अस्तुति सौं निन्दा जहां व्याज उक्ति तहँ होइ ॥ २१० ॥

निन्दा सौं स्तुति यथा सवैया ।

कौन सो ख्याल है भागीरथो यह रावरे जी
मन बीच सभायो । ऐसनि सौं रघुनाथ कहै
जग में न कहूँ जस जात है गाया ॥ नारज

आदिक जीवन में को हुतो सो नहायो तू ऐसी
वनायो । गार्तिनि को तजि साथ दियो संग भूत
लिये पशुनाथ कहायो ॥ २११ ॥

अपरंच सवैया ।

खारनि तारनि बाग पहारनि नारनि उच्च
अगारनि भूमे । लावत हौ भर द्यावत हौ सुख
पावत हौ कितनी जम कूमे ॥ बारिद बृभक्त हैं
तुमसों रघुनाथ कहै यह एतिक तूमे । कौन
बिबेक है जौ बरसौ जल मूसरधारनि जसरहू
मे ॥ २१२ ॥

स्तुति सों निंदा यथा सवैया ।

तजि दान को लोबो दियो दूतनी हो गो-
पाल क्यों बातें वनावत हौ । करि है परतीत
जो होइ नई अपनो यस जाहे को गावत हौ ॥
कछू चाहौ तौ लेहु रही उतहीं रघुनाथ कहा
भरमावत हौ । हम कानती हैं सब दानिन में
हौ भले पै चले कित आवत हौ ॥ २१३ ॥

अपरंच कवित्त ।

भले बनि आए आजु भले लागे नैननि कीं

भलो मान्यो भले मेरी पौरहि अरत हो । भलो
ऐसा को है एही कवि रघुनाथ भलो तुम्हें जो न
कहै भले सोच में परत हो ॥ भलो है न भ्रम
भ्रम छोड़ी तो भलो है भलो हूँ जो हेरी इतै
भलो एतक डरत हो । भले हो चतुर नख
सिख सों भलाई भले भलेन के साथी काम
भलेई करत हो ॥ २१४ ॥

निंदा सों निंदा व्याजोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

निंदा सों निंदा जहाँ प्रगट परति पहिचान ।

सो निंदा व्याजोक्ति सब कविकुल करत बखान २१५

उदाहरण सवेया ।

तामस को तन तेजमई मट पूर प्रकासत
कूर महा गो । देखतहीं रघुनाथ कहै मन में न
डरै तिहुंलोकनि में को ॥ औगुन और गनाइ
कहाँ तक बाद पचै बकबाद करै हो । है अतिहीं
बड़ निंद कलानिधि तोहि गिलै गिलि को उ-
गिलै जो ॥ २१६ ॥

आक्षेपालङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

आपु कहै कहिकै करै आपु निषेध विचारि ।

आक्षेपालङ्कार सो कहत सुकवि मतिसार ॥ २१७ ॥

उदाहरण सवैया ।

भावत हो मन है तो भलो उनके कहि
औगुन तू उन्हें दूसे। ऐसे काँपाइ कहै रघुनाथ ही
काँपत ज्यों जग न्हाइ के पृसं ॥ और तो आगे
कहाँ लों कहौं पर एतक है पल तू नहिं तूसे।
जसे रहौ रहि आइ ही ज्यों प्रिय भावता तेरो
है तू मति रुसे ॥ २१८ ॥

निषेधाक्षप लच्छन ।

दोहा ।

पहिले करै निषेध फिरि पीछे दे ठहराइ ।

सो निषेध आक्षेप है बरनत हैं कविराइ ॥ २१९ ॥

उदाहरण सवैया ।

श्रीरघुनाथक लायक को रघुनाथ की सोंह
कहावत चैरो । इन्द्रहि आदिक जे दिगपाल है
ते सब मानत हैं डर मेरो ॥ हे दसकंध महा

मति-अंध उपाव-कछू करि जीवन केरो । मोहि
तू जानत है कपि है यह मै कपि हौं नहि काल
हौं तेरो ॥ २२० ॥

व्यक्ताक्षेप लच्छन ।

दोहा ।

व्यक्ति जहां विधि होइ औ छप्यो होइ आक्षेप ।

व्यक्ताक्षेप तहां सुकवि बरनत हैं बुधिलेप ॥ २२१ ॥

उदाहरन सवैया ।

आए हौ बृम्हन मोसों कृपा करि आपु हौ
जीते महा मन सेस का । मै केहि भ्रांति मने
कै सकौं रघुनाथ मैं जाने हौं नेह नरेस को ॥
बै बिनती यह एक हमारी है मानी तो मानी
है कारन बिस को । होरौ के बासर गोरी की बिस
बिचारि कै कीजो बिचार विदेस को ॥ २२२ ॥

अपरंच सवैया ।

रावरे जो चलिवे कां विदेश को बिप्रन
बूझि बिचार कियो है । कोजिये सो सुभ कारज
कों मग में पन जो रघुनाथ लियो है ॥ मोहि न
और अँदेसी सुनौ सुनि एतक काँपत मेरो

हियो है । बाम बियोगिनि के बध कीबे कीं
काम बसंतहि पान दियो है ॥ २२३ ॥

बिरोधाभास लच्छन ।

दोहा ।

जहां जु अर्थ बिरोध को होत आइ आभास ।

तहां बिरोधाभास कबि बरनत हैं सुखरास ॥ २२४ ॥

उदाहरन कवित्त ।

सोतिन की माल साल पै है सुनि आई
गुरु लोगन पठाई वाल बरनी न जाति है ।
रघुनाथ भांवते को धन मन करखें को बैस
को सुभाव सा यों प्रगटे बिभाति है ॥ सकल
समेटि अंग उपरैनी में लपेटि बैठो पलिका पे
संग मुर मुसक्याति है । लोचन बचाइ लें डबा
सो पान खावै आपु कैहीं सोहैं खाति न खवाँय
सोहैं खाति है ॥ २२५ ॥

अपरंच सदैया ।

देखि कै दोष अदोष कहै रघुनाथहि सीं
ऐसी कीन बही है । काहू चवावून सीं मुनि कै
सो ब्रथा तजि कै रस रास नहीं है ॥ सोतिन में

अब आजु बलाङ्ग ल्यों तेरोई एक सोहाग सही
है । मान करै पिय मान करै मति मान कही
मतिमान कही है ॥ २२६ ॥

बिभावना लच्छन ।

दोहा ।

फारन बिनु जहँ होति है कारज की उतपत्ति ।

बरनत तहां बिभावना अलङ्कार मुभगति ॥ २२७ ॥

उदाहरन सवैया ।

पान के रंग बिना अधरा रघुनाथ सराहन
पूरन सीके । आँगी बिना अति सोभित होत
उरोज सनाहर मण्डन ही के ॥ रावरे के दृग
प्यारी बलाङ्ग ल्यों राति जग सुख नी संग पी के ।
आलस बीच पग मनरंजन आजु लगै बिनु अं-
जन नीके ॥ २२८ ॥

अपरंच सवैया ।

लावत मै न सुगन्ध लख्यो सब सौर को
तन दंत दसी है । अंजन रंजन हूँ बिन
स्याम बड़े बड़े नैननि रेख लसी ह ॥ ऐसी दशा
रघुनाथ लखें एहि आचरजै मति मेरी फसी

है । लाली नबेली के छोठनि मै बिनु पान
कहां ते धौं आनि बसी है ॥ २२६ ॥

हेतु-विभावना लच्छन ।

दोहा

कारन के असमर्थहू कारज पूरन होत ।

तासों हेतु विभावना कहत कविन के गीत ॥ २३० ॥

उदाहरन कावित्त ।

इनही के बैर कोप छाड़ पाकमासन जू
सासन प्रलै के करिबे को आपु करे हैं । मूसर की
धार धाराधर वरषत बारि पारावार को पसार
करिबे की अरे हैं ॥ कोऊ न सहाइ करै एहो
कवि रघुनाथ सचिते से बैठे अय सब ब्रज तरे
हैं । कमल के सरि सो है परम नरम कर तापैं
गिरिधर लाल देखी गिरि धरे हैं ॥ २३१ ॥

तृतीय विभावना लच्छन ।

दोहा ।

कारन प्रतिबन्धक रहे होइ काज को सिद्धि ।

तासों तृतीय विभावना कहत मुकबि बुधिनिधि ॥ २३२ ॥

उदाहरन सवैया ।

जागे तें आलम-पागे लसैं किये बाम को

बास सों बागे बसीली । चन्दन लाग्यो उरोजनि
को उर भाल को बन्दन भाल लसीली ॥ भोरहि
आए भरे रंग यों रघुनाथ सनेह के सोच स-
सीली । देखतहीं हिय पाद के चैन मिली गुन
गौरि के नैन रसीली ॥ २३३ ॥

चतुर्थ बिभावना लच्छन ।

दोहा ।

होत अकारन ते जहां कारज की उत्पत्ति ।

बरनत तहां बिभावना चौथी कवि सुभगति ॥ २३४ ॥

उदाहरन सवैया ।

ऐसेनि को अपराध न कीजिये लीजिये
भावते सीख लसीलौ । राखिये रौझि रिभाइये
यों रघुनाथ बिसारि कै बान गँसीलौ ॥ मैं सुनि
मान गई लखिवे कीं सो ऐसी लसौ गुन गौरि
जसीली । मो दिसि हेरि हसौली श्री ह्वै के
महा रिसि में कही बात रसीली ॥ २३५ ॥

पंचम बिभावना लच्छन ।

दोहा ।

कारन तें उपजत जहां कारज परम बिह्व ।

बरनत तहां बिभावना पंचम कवि मतिउह्व ॥ २३६ ॥

उदाहरन कवित्त ।

चातिकं घातिक मिले घातु को विचारि
कै कै बोलि कोलि कानन करेजो करसत हैं ।
फूले फूले कदम करीलन के बन बाग लोचन
सों लागि रूप दावा दरसत हैं ॥ तालनि तमा-
लनि परसि सीरे धीरे पौन रघुनाथ अंगनि लुबें
हैं परसत हैं । डारैं जिय जारे दर्दमारे हारे
हारे आनु भारे बारि बारिद अंगरे बरसत
हैं ॥ २३७ ॥

अपरंच कवित्त ।

जानिये न कहा भयो जमुना लों अबै
जात आँखिन तें बह्यौ जात आँसुनि को सोत
है । सेज पर परी तलफंति जलपति देखि दासी
संग बासी औ बिकल सब गोत है ॥ रघुनाथ
कीजत जतन सीरो सीरे हेत कहिये कहां लों
ककू परत न ओत है । चाँदनी में ल्याए औ
गुलाब सों न्हाए तन चन्दन लगाये तें तपित
औरो होत है ॥ २३८ ॥

छठी विभावना लच्छन ।

दोहा ।

कारज सों जहँ होत है कारन को परकास ।

बरनत छठी विभावना मुकवि सुसति के रास ॥ २३८ ॥

उदाहरन सवैया ।

जानति ही न वसंत को आगम बैठी ही
 ध्यान धरें निजु पौ को । एते में कानन ओर
 सों आइ कै कानन में पखो बोल पिकी को ॥
 हे रघुनाथ कहा कहिये कहि आयो हा आयो
 गरी रारि ती को । लोचन बारिज सों अँसुवा
 को अथाह बह्यो परशाह नदी को ॥ २४० ॥

विशेषोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

आहत कारन बहुत के जहाँ न कारज होइ ।

विशेषोक्ति बरनत तहां अनङ्गार मुख भोइ ॥ २४१ ॥

उदाहरन सवैया ।

बैठी बिसूरति हो पिय आगम एते में की-
 डल की सुनि वानी । जागि उठौ बिरहागि
 महा लखि में रघुनाथ को सींह सकानी ॥ च-
 न्दन लाइ मिलाइ कपूर निसा भरि सौच्यो

गुलाब के पानी । कौन कहै बतियाँ निसि कौ
न तिया की तऊ कृतियाँ सियरानी ॥ २४२ ॥

असंभव लच्छन ।

दोहा ।

अर्थ असंभव को जहां देखी बरनन होइ ।

कहत असंभव ताहिँ कवि अलङ्कार सुख भोइ ॥ २४३ ॥

उदाहरन सैया ।

बात कहा दह भातर की गहि लेत है ऊ-
पर आइ के हाली । एकहू द्योस कहै रघुनाथ
पग्या पसु मानुष सों नहिँ खाली ॥ आजु की
बात कहा कहिये कहि आवतु है ककु मोपै न
आली । नाथि कै कालिन्दी सों कियो बाहर
कालिह के कोहरा काल सो काली ॥ २४४ ॥

अपरंच कवित्त ।

कदम पै चढ़ि जब कूया कालिंदी के बीच
तब यह जान्यो कान्ह कैसें धौं उबरिहै । यामे
विषधर को है बास महा विषरास बासीं भयो
पास तो उसासही सों जरिहै ॥ ऐसी कौन जा-
नत हो कवि रघुनाथ बूढ़ि घरौ है लौं तरे पानी-

ही के लरिहै । सीस पर चढ़ि आपु ताली दै
करत नृत्य नाथि काल काली कालीदह सों
निकरिहै ॥ २४५ ॥

असंगति लच्छन ।

दोहा ।

कारन श्रीरे ठौर है कारज श्रीरे ठौर ।

कहत असंगति ताहिँ सब जे हैं कवि सिरमौर ॥ २४६ ॥

उदाहरन कवित्त ।

इत सों ही जात प्रात जमुना अन्हाइवे
कों साँवरो उत्तै सों आयो गात रूप बूँ गयो ।
चौचका हीँ भेट भई देखा देखी भई भई ऐसी
कछू दशा जो सकल ग्यान ग्वै गयो ॥ दाह जागी
देहँ में कराह रसना के बीच रघुनाथ सखिन
के चाह नभ भवै गयो । नैननि सों लागे आबि
नैन वान एरी सखी पौर बाढ़ी प्रान में करेजो
रेजो ह्वै गयो ॥ २४७ ॥

अपरंच कवित्त ।

खरिका उजारी डेल डारी गेह लोगनि

के पीयूष दूध दही मही पैठि सूनै ठाँव में ।
काहू गोप लंली की कुसुम-कली मारी काहू
नाँउं लै पुकारी काहू गहौ पाय दाँव में ॥ हम
सों न लेखो देखो तुमहीं धौं रघुनाथ ईठ के
डरन डीठ दीन्हे चले पाँव में । साथ के रहे ते
ऐसो भयो है कुनाउं करौ तुम औठ पाँव पावें
हम गारौ गाव में ॥ २४८ ॥

द्वितीय असंगति लक्षण ।

दोहा ।

कियो चह्यो थल और हीं कियो और ही ठौर ।
कहत असंगति दूसरो अलङ्कार सिरमीर ॥ २४९ ॥

उदाहरण सबैया ।

तब तौ करनादिक कोरव सों मिलि एक
मते करिके मन कीं । इनका भली चाहि बुरो
उनको रघुनाथ कहै पहुँचै बन कीं ॥ अब देखत
हौ रचना प्रभु की सब त्याग करे पकरे पन
कीं । दुरबासा जुधिष्ठिर कीं गए स्नापन स्नाप
दियो दुरजोधन कीं ॥ २५० ॥

तृतीय असंगति लच्छन ।

दोहा ।

जौन काम चाह्यो कियो ताको कियो बिरुद ।

कहत असंगति तीसरो अलङ्कार मति-उद ॥ २५१ ॥

उदाहरन सवैया ।

काज महा रितुराज बली के ए हैं बनि आ-
वत हैं लखतेहीं । जात कह्यो न कहा कहिये
रघुनाथ कहै रसना डूक एहीं ॥ साल रसाल
तमालहि आदि दै जतिक वृक्ष लता बन
जिहीं । नौ दल कीव को कीन्हो विचार तौ कै
पतभार दियो पहिलेहीं ॥ २५२ ॥

विसम लच्छन ।

दोहा ।

जहँ घटना समरूप को कवि नहिं करत बखान ।

विषम अलङ्कति कवित में लेहु तहाँ पहिचान ॥ २५३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

जौ तू चाहै तन मन लाचन सफल कियो
कहै रघुनाथ तौ न कीजै सोच सम को । प्रगट
को खाद सो न भवन तैं पायो जात प्रगट को

प्रगटै बिचार छोड़ो स्वम को ॥ भासीं जों कहति
है कि देखिं भार्य मोसीं कहि कहिबे के जाग
है न बकता निगम को । कहां मेरो मुख अति
अलप गिरा को सखी कहां मुख कुँवर-कन्हैया
के जनम को २५४ ॥

अपरंच कवित्त ।

लौटि लौटि लेत हैं करौट पलिका पैं परै
करै न तनिक चैन ऐसी हाल हाल को । काहू
की न चाह मुख राह कै कराहू राख्यो जल पर-
वाह बाढ़्यो लोचन बिसाख को । क्यों न होइ
ऐसी दसा देखादेखी रघुनाथ देखौ न कहति
हैं वचन झूठी चाल को । कहां तेरे लोचन
के तीक्ष्ण कटाच्छ बाल कहां होय परम नरम
नंदलाल को ॥ २५५ ॥

द्वितीय विषम लच्छन ।

दीक्षा ।

उपजत कारन तें जहां कारण परम विरूप ।

विषम अलंकन दूसरो बरनत हैं कवि भूप ॥ २५६ ॥

उदाहरन कवित्त ।

स्याम सख हरित अरुन पीत आदि दै कै
रंगन की करता विदित वस्तु जेती हैं । नीकी
भाति निरख्यो है नेकी न परत बीच ऐसे आपु
आपना सुभाव लिये तेती हैं ॥ सरस परस करें
जाकी ताकीं रघुनाथ गीत रूप दै कै जातरूप
करि लेतो हैं । सुरसरि जी को यह देखत हो
काम आपु सुधाहू सों सेत औरैं स्याम करि
देती हैं ॥ २५७

अपरंच कवित्त ।

जाकी जैसा रूप ताकीं तैसिये सकति
औरै आप सो करत जब भेटे भरि हियरे । के-
सरि कुसुम नौल आदि दै कै देखि लीजै प्रगट
कहै है रघुनाथ बोल सियरे ॥ मनसा महीप
जस रावरो सुधा के अंग एते रंग माँड़े आपु
होत जहां नियरे । सेत-मुख मूम के अदेखी के
असेत मुख लाल मुख मीत के अमीत मुख
पियरे ॥ २५८ ॥

तृतीय विषम लच्छन ।

दोहा ।

उद्दिम करते दृष्ट कों होत जो तहां अनिट ।

विषम अलंकृत तीसरो अलङ्कार को छटि ॥ २५८ ॥

उदाहरन कवित्त ।

सिसुपाल आदि दै कै जते महिपाल तेते
कहै रघुनाथ बूझी आपनी दूजति कों । कुंवर
कन्हैया जू को प्रगट प्रताप बूझि बूझि कै मुजस
और कीरति विसद कों ॥ ठौर सीं न टरे अरे
जहां के तहां हो रहे खरे बल भरे-वीर धरे
मौन गति कों । रुकुम की मति देखौ अति उ-
त्तायल आपु गयो पति राखिवे को आयो खोइ
प्रति कों ॥ २६० ॥

अपरंच कवित्त ।

रास में लेवाइ गयो मोहि मन मोहन के
मोहन के मोहिवे कों ऐसे आपु ऊटि गो ।
कहै रघुनाथ कछू मोपैं न बखानी जाति भीर
बीच भरम्यो न सौंहे जाइ ऊटि गो ॥ आनन
की चमक में नाचन की भ्रमक में सौरभ की

धमक में धोरज सो कूटि गो । मुरि मुस-
क्यानि बीच कंकू न बसानी आजुं आली एक
छन में गुमानी मन लूटि गो ॥ २६१ ॥

चतुर्थविषम लच्छन ।

दोहा ।

होइ अनिष्ट न समुझि यह उद्यम कीन्है इष्ट ।

प्रापति जहां अनिष्ट की भई सो चौथी छष्ट ॥ २६२ ॥

उदाहरन सबैया ।

बैर परीक्षित के जनमेजय व्याल बिना ब-
सुधा करिबे कीं । जग्य रच्यो रघुनाथ कहै कुल
उद्धित पाठ भए मरिबे कीं ॥ तच्छक भागि
बस्यो सुर के पुर देखि दसा दुख सों बरिबे कीं ।
वेद के मन्त्रनि इन्द्र समेत सो लै सुरवा पै धस्यो
जरिबे कीं ॥ २६३ ॥

पंचम विषम लच्छन ।

दोहा ।

उद्दिम करते इष्ट को सिद्धि इष्ट की होइ ।

होइ अनिष्ट की तहां प्राप्ति सो पंचम जोइ ॥ २६४ ॥

उदाहरन कवित्त ।

कितनो सुनायो मन्त्र मन्त्री कहैं रघुनाथ

मन में न ल्यायो एतो छाया 'महा तम को ।
कहिये कहां लों और आज तोनौ लोक बीच
जाकी सर कोजे ऐसी दूसरो अषम को ॥ पति
ले मरीचै नीचै पठयो मृगा कै पापी पीछें ~~आपु~~
गयो कै सरूप साधु सम को । दुष्टन को ईस
दससौस सुख करिवे कीं सीतै हरि ल्यायो आपु
पायो लोक जम को ॥ २६५ ॥

षष्ठ विषम लच्छन ।

दोहा ।

उद्दिम करते इष्ट को होइ न इष्ट अनिष्ट ।

विषम अलंकृत में कहत कवि करि भेद उद्दिष्ट ॥ २६६ ॥

उदाहरन सवैया ।

सूर सों माँगि प्रभाप्रति पून्यो के छौरसमुद्र
में जाइ अन्हात है । उज्जल के किरनैं अपनी
रघुनाथ किये रंग लाल बिभात है ॥ रोज की
हार चिते ससि राधे सों जीतिवै कीं कितना
अकुलात है । कौन कथा कहिये मुख देखत
खेद सों फेरि सपेद छै जात है ॥ २६७ ॥

अपरंच सवया ।

धूमि चहुं दिसि भूमि रहे घन बुन्दन तें
 किति ठारत लोटें । कौंधति दामिनि कूकत
 मोर रहैं मित्रि भेको भयानक टाटें ॥ ऐसी समै
 ओहि ओध की आस जा दे रघुनाथ कों आ-
 इहि पोहें । राति कितौ बेरिआ लौं खरे रहे
 ओरी तरें दुपटा डक आटें ॥ २६८ ॥

सप्तम विषम लच्छन ।

दोहा ।

बीरन को करते बुरी बुरी आपनी होइ ।

भेद सातवीं विषम को कहत मुकवि सब कोइ ॥ २६९ ॥

उदाहरन कवित्त ।

भुजन के बल दल मलि तौनो लोक्कनि कों
 कहै कवि रघुनाथ करि अपनी लयो । सुरपति
 आदि दे कै बीरता बिसाल ऐसी को है दिग-
 पाल हाल जीने दण्ड ना दयो ॥ जातुधान परम
 अमान परमात्मा को नाम अभिराम आजु सु-
 नतें मझा तथा । कोप बस छै कै हिरनाकुस उ-
 दित पहलादै मारिबे कों गया आपुही मारो
 गया ॥ २७० ॥

अपरंच कवित्त ।

दुष्टनि को अवतंस कंस तासों बिदा मागि
कहे कवि रघुनाथ महा मोद सों भरी । गोप-
बधू छै के गोप-बधुन के साथ छै कै खरी पल्लव-
के पास भई काहू ना डरी ॥ करत की करनी
की करि सरि सके कौन ऐसी कछू प्रगट देखाई
नैन की परी । नाहीं करिबे की आई जसुदा
के पूत की सो जसुदा के पूत पूतनाही की नाहीं
करी ॥ २७१ ॥

अपरंच कवित्त ।

मैं हों कैधौ और कोई ऐसी न समुझि परै
परै न तनिक चैन ऐसी दसा तन की । सीत
बात आतप सलिल एक रीति मानै एक रीति
मानै छहौ रसन की अन की ॥ रघुनाथ कहा
कहौ बूझो न परत कछू भीति. दुरजन की औ
प्रीति गुहजन की । देखि स्याम घन जू को बनि
बुन्दावन गर्व मन बिनु करिबे की भई बिनु
मन की ॥ २७२ ॥

सम अलङ्कार लक्षण ।

दोहा ।

जहँ रचना सम रूप की कबिजन करत बिचारि ।

अलङ्कार सम कवित में कहियतु तहां निहारि ॥ २७२ ॥

उदाहरन सवेया ।

है न गँवारिन जाई गँवार की रीति गँवारिन को न गही है । काहे को तू दूतनो अकुलाव के ओठ अमेठि विसृति रही है ॥ ठौठो दिये लघु लोगनि के रघुनाथ बड़े लघुता न लही है । जानति है इनकों इन आपनो जाति के माफिक बात कही है ॥ २७४ ॥

द्वितीय सम लक्षण ।

दोहा ।

कारन के सारूप्य में कार्यज बरनन होइ ।

जहां तहां सम दूसरो अलङ्कार में जोइ ॥ २७५ ॥

उदाहरन कवित्त ।

कितनी मनार्द्ध पै न आई तेरे मन बीच
कितनी सुनार्द्ध प्यारी प्रान को दुचित है ।
नाही मुख निकसी सो निकसी है हृद है कै
करिबे को ही सो बूझो अति अनुचित है ॥

अब सब बूझि परी रघुनाथ को दोहाई अब न
कहौंगी कछो चाहत जो चित है । तेरी इठहाई
सठहाई जो परो है वान जाई तूं अझोर की है
रीतो को उचित है ॥ २७६ ॥

तृतीय सम लच्छन ।

दोहा ।

क्रिया करी जो अर्थ की सोई इष्ट बिनु सिद्धि ।
बरनत हैं सम तीसरो अलङ्कार मति वृद्धि ॥ २७७ ॥

उदाहरन सवैया ।

साहब की सुनि कै बड़ी सम्पति कै अपनी
मति की गति ताजी । बूझि बड़ेन सों आए
दृहां निरखे रघुनाथ भयो मन राजी ॥ मास छ
सात लौं सेवा करो करि कै कबिता कल की-
रति साजी । चाहत है तुम सों हम बाजी कियो
उचितै जो दियो हमै बाजी ॥ २७८ ॥

विचित्रालङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

इच्छा फल विपरीत की करि कै करै जो यत्न ।
सो विचित्र कवि कहत हैं अलङ्कार में रत्न ॥ २७९ ॥

उदाहरन कवित्त ।

दोपदान करत मसान बीच बसिबे कीं
 अरपत माल ब्याल कण्ठ लपटैबे कीं । सरस
 प्रियूष हूँ सीं मधुर मधुर मेवा राखत नैबेदा
 राखि जी में बिस खैबे कीं ॥ चरचि सुगन्धनि
 सीं एही कवि रघुनाथ बसन चढ़ावै न बसन
 फेरि पैबे कीं । बसुधा की मति देखी गंग के
 सलिल बीच धोवत हैं अंग आगे भसम लगैबे
 कीं ॥ २८० ॥

अपरंच सवैया ।

तीरथ न करें नेम व्रत को न धरें एकी भूल
 हूँ न परें काहूँ सज्जन के संग में । राति में न
 जागैं ध्यान जोति के न पागैं कहूँ कैसेहूँ न लागैं
 कहै कोऊ काहूँ ठंग में ॥ वेद को न भेद अव-
 गाहती हैं रघुनाथ निपुन भयो न चाहती हैं
 जोय अंग में । करिबे को उज्जल मुधा सीं
 अभिराम देखी मन वृजवाम रँगती है स्याम रंग
 में ॥ २८१ ॥

अधिक लच्छन ।

दोहा ।

बरनत बड़े आधारों जहाँ अधेय अधिकाय ।
अलङ्कारों से अधिक है लखि लीजो सुख पाय ॥२८२॥

उदाहरन कवित्त ।

रावरे की रूप नखसिख लों सराहि काहू
मोहन सो कछो कछो गुन अवदात है । मि-
लिवे को अभिलाष एतक बढ्यो है सुनौ रघु-
नाथ की दोहाई सुनिवे की बात है ॥ वेद भेद
पादु के अमित ब्रमाण्ड कहै सो सब प्रलै में
लीन उनमें हूँ जात है ॥ ऐसो बड़ो बात
ताको अछर अनन्त ताको सुजस बिभात तज
तोमे न समात है ॥ २८३ ॥

द्वितीय अधिक लच्छन ।

दोहा ।

जहाँ अधेय की अधिकई अधिक होइ आधार ।
तासों सब कवि कहत हैं अधिक अधिक बिस्तार ॥

उदाहरन सबैया ।

श्री ब्रजराजै विराट सरूप कहैं जिन बिदनि

को रस चाख्यो । देखि सक्यो नहिँ देखिबे को
चतुरानन आपु कितो अभिलाष्यो । मोपे कछू
गुन रावरे को रघुनाथ की सौह न जातु है
भाख्यो । तूं धनि तू धनि है धन में धन जो
अपने मन में दून्हें राख्यो ॥ २८५ ॥

अपरंच कवित्त ।

हरि हर इनकीं लिखे हैं वेद बड़े करि
सब मै जो बनी यह सृष्टि है तिरह की । ति-
नको न काम आधो जाम जो सँभारि सकें
रघुनाथ डोरी कृट ध्यान के गिरह का ॥ और
अबलनि को बन्वान कहा कीजै यह बात सुनि
लीजै न कहति हौं जिरह की । एतो बड़ी मन
ओहि धन को है लाल जामे बसति बिसाल
बिधा रावरे विरह की ॥ २८६ ॥

सूक्ष्म अलङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

सूक्ष्म जहाँ अभेय सी सूक्ष्म होय आधार ।

सकल सुकवि बरनन करव सो सुकमालहार ॥ २८७ ॥

उदाहरन सबैया ।

आगे तें.ऐसा सोहागिन काहे कीं कीन्ही
जो चूक परे ककु काहे । कीन्ही तो कीजे नि-
बाह बलाइ ल्यों वैसेही मोहि औ जैसही मोहै ।
ऐसी दसा अब कीहै मुनौ रघुनाथ की सौंह भयो
पल दो है । आपु तो आए ही रुसि लला उनके
तो छला को बलै भयो सोहै ॥ २८८ ॥

अन्योन्यालङ्कार लष्कन ।

दोहा ।

सब कवि यों बरनन करें अन्योन्यालङ्कार ।

जहां परसपर करत हैं आपुस में उपकार ॥ २८९ ॥

उदाहरन सबैया ।

वै उनको अपराध करें नहिं वै उनसों न
उदास करें चित ॥ वै मित राखे रहैं उनकी रघु-
नाथ वै राखे रहैं उनका मित ॥ प्रेमपगे दोऊ
आपुस में एहि भांति बरोवरि क्यों न बढे हित ।
वै सुख देत रहैं उनको नित वै सुख देत रहैं
उनकों नित ॥ २९० ॥

अपरंच सबैया ।

गोरस की न बिसात कछू खरचो नहिं जा-

गत मोल मही की । जानि परे की बड़े रिझ-
वार हैं पाठ पढ़े दोउ प्रेम बही की ॥ यातें छठे
रघुनाथ कहै सुख चाहत वातन के रसही की ।
देहिँ गोपाल न जान लिये बिनु, ग्वारिन देहिँ
न दान दही की ॥ २६१ ॥

विशेष लच्छन ।

दोहा ।

बरनन बिन आधार के कीजत जहां अर्थ ।

अलङ्कार कवि कहत हैं सो विशेष मुखदेय ॥ २६२ ॥

उदाहरन कवित्त ।

परम पुनीत पून्या जानि कातिकी की आजु
न्हाइवे कों दूतैं भयो ऐबो एक छिन को । क-
हिये कहां लीं एही कवि रघुनाथ सुनौ गई
गयो तब सों है दोइ जाम दिन को ॥ चकित-
चकीर कीर नैन की न मोरि सकैं देखो ऐसे
छके हैं सरूप देखे तिन को । अंध भये डोलत
अलिंद मोद-पागे ऐतो अब लीं है पसखो सु-
गन्ध पटुमिन की ॥ २६३ ॥

अपरंच सबैया ।*

काम के बान कमान बिना मिलि फूलनि
सों करै घायल लेखा । याते हौं दूरि करै कहीं
चौसरतू हठ के कहै होय पै भेखो ॥ सीतल छत्रे
को चाँदनी में रघुनाथ को सोहैं जो हूँ बे को
तेखा । जारत हैं ससि में बसि के सखी देख
दिवाकर के कर देखा ॥ २८४ ॥

द्वितीय विशेष लच्छन ।

दोहा ।

एक वस्तु को कीजिये ठौर अनेक बखान ।

दूजो भेद विशेष को बरनत सकल सुजान ॥ २८५ ॥

उदाहरन सबैया ।

जाति हौं जो जमुना में अन्हाग तो हैं
जमुना हीं में मो संग लागे । आवति हौं घर कीं
रघुनाथ तो आवत हैं घर में बने बागे ॥ जो
मुख मूँदि के सोइ रहैं तो वे सोवतु हैं मन में
सुख पागे । खालि के आंखि जो देखैं सखी तो
वे ठाढ़े हैं बाइ के आंखिन आगे ॥ २८६ ॥

अपरंच कवित्त ।

बैठति हैं जाइ गुनजन में तौ उतै आइ
महा मोद छाइ मासों मया कै हंसत हैं । सोइ
रहैं जो तो आपु सोवैं उर अन्तर में जागैं तो
जगे ते मोहि अइ में भरत हैं ॥ पीछे फिरि
देखौं तौ हैं पीछे खरे रघुनाथ देखौं बाये दा-
हिने तौ उतहीं बसत हैं । जत्र चाहौं तब जहां
चाहौं तहां एरी भटू जेसे चाहौं तैसे आनि
आगे ही लसत हैं ॥ २६७ ॥

उदाहरन सवैया ।

प्रथमहीं पुहुमी के प्रतिपाल करिवे कीं
पृथु के जो लिखी ब्रह्मा पूरै प्रभा अति की ।
कहै रघुनाथ सोई देखि के दिलीपहू के रघहू
के लिखी सोधि सुन्दर विरति की ॥ भुजदण्ड
बली बरिवण्डसिंह महाराज राजनि की मति
देखो कृपा अभिगति की । बिसद बिसाल पांति
वारी भाल तेरे लिखी वसिये सकल की नकल
वाही प्रति की ॥ २६८ ॥

तृतीय विशेष लच्छन ।

दोहा ।

यस्तु असक्य मिले जहाँ किये अलप प्रारब्ध ।

सो विशेष है तोसरो कहत सुकवि मद दंभ ॥ ३८ ८ ॥

उदाहरन कवित्त ।

ऐसी रूप ऐसी रंग ऐसैं रहिबैं की संग उन
हूँ की हूँ है ही मुभाव लीन्है सति कीं । सकल
कलानि की कुसलताऊ ऐसी हूँ है ऐसी भांति
हूँ हैं दोऊ राखि प्रेम अति कीं ॥ सौँह रघुनाथ
की न मुख-देखी कहति हीं हूँ है गहैं ऐसे ही
मोहनता की गति कीं । चिर जौयो दम्पति
असेष मति भरे आनु तुम्है देखें देख्यो रति कीं
औ रतिपति कीं ॥ ३०० ॥

व्याघात लच्छन ।

दोहा ।

अन्यथाकारी की तथा कारी बरनन होत ।

अलङ्कार व्याघात भी कहत सुकवि के गीत ॥ ३०१ ॥

उदाहरन कवित्त ।

लक्ष्मन जू की शव की सी दसा देखतही
सुग्रीव आदि दै के औरै सब दल तें । स-

हित सयान सार्वधानी एकज न रही झाड़ झाड़
 भनै हनै छाती करतल तें ॥ रावरे की कीमति
 कही न मोपैं जाड़ कछू कहै रघुनाथ मेरी
 भरी मति मल तें । भुजन के बल मारि रावन
 सुमार कीन्हें पीन के कुमार तें जियाए भुज
 बल तें ॥ ३०२ ॥

द्वितीय व्याघात लच्छन ।

दोहा ।

सुकार्य निबधी क्रिया कार्यबिरोधी होइ ।

अलङ्कार व्याघात कबि दुतिय कहत सब कोइ ॥ ३०३ ॥

उदाहरन सवैया ।

सासन मानि पिता को चले बन मोहि
 कृपा करि कै इमि मोड़ो । हौ बलहीन रहौ
 घर में घरहौ सब है परिवार सगोड़ो ॥ तौ क-
 हिये इतनी रघुनाथ कहैं बिन होय करै जिय
 खोड़ो । जो तुम जानत हौ हम को अवला तो
 हमैं कबहूँ मति छोड़ो ॥ ३०४ ॥

अपरंच सवैया ।

हौ सब भांतिन ते समरत्य भए भव व्या-

पक पूरन राजा । आपनी और चितै चित में
निज बाने की बानि सनेह सों सांजे ॥ बातें
करो मति और कछू रघुनाथ बिनै सुनिबे तें
न भाजो । जानत हौं तुम मोहि गरीब तौ मोहि
गरीब-नेवाज नेवाजो ॥ ३०५ ॥

कारणमाला लच्छन ।

दोहा ।

प्राक प्रांत कारनन की गुंफित माला होइ ।

तासों सब कवि कहत हैं कारनमाला सोइ ॥ ३०६ ॥

उदाहरन कवित्त ।

प्रथम ही दूती मिलै दूतिका सों मन मिलै
मनके मिले ते मिलै भेद काहू बाम को । भेद
मिले बाम को मिलतिं चोप मिलिबे की मि-
लिबे की चोप सों मिलत जप नाम को ॥ जप
मिले नाम को सुकवि रघुनाथ कहै तासों मिले
हरष खरिचिबे कीं दामको । दाम के खरचिबे के
हरष सों मिलै आइ सकल उपाय तासों सब
सुख काम को ॥ ३०७ ॥

अपरंच कवित्त ।

परम पुनीत परमाय्य की राह सुनी एही
कवि रघुनाथ वेद के प्रमान की । मुकुति की ला-
लसा प्रथम मिली चाही मिले लालसा के मिलति
नवनि गीके ठान की ॥ नवनि सो साधु मिलै
साधु सों सुमति मिलै सुमति सों सरधा है मि-
लति बखान की । सरधा सों गुरु मिलै गुरु
सों मिलत ग्यान ज्ञान सों मिलति कृपा पुरुष
पुरान की ॥ ३०८ ॥

एकावली लच्छन ।

दोहा ।

गहि गहि छोड़त अर्थ की करि सेनो सुख पाइ ।

तासों कहत एकावली जग में सब कबिराइ ॥ ३०९ ॥

उदाहरन कवित्त ।

जिते साधु सुमति अगाध बसुधा में बसैं
कीन्हे बाधा कोह द्रोह छोह मोह काम के ।
कहत हैं ऐसे ते वै वेदन कीं साखी दे के निजु
ठहराइ ग्यान महातिम नाम के ॥ रघुनाथ जग
बीच जीवन सुफलताको मन लाग्यो प्रेम जाको

गुरु गुन धाम के । गुरु लाग्यो कान सो लाग्यो
है कान प्रानं सों सुप्रान लाग्यो पाइ सों अजान-
बाहु राम के ॥ ३१० ॥

अपरंच कवित्त ।

कहा राजपूत कहा मागब पठान कहा कहा
सेख सैयद सपूत पनी पन पै । काहू को न रहत
गुमान कहै रघुनाथ साइब की ऐसी तेज व्या-
पत सबन पै ॥ भुजदण्डबली बरिबण्डसिंह महा-
राज तुम सों की फते पाइ सके आइ रन पै ।
साइब के आगे फौज फौज आगे पौठि कीन्हे
आपु चलै कालडौंठि दीन्हे दुसमन पै ॥ ३११ ॥

मालादीपक लच्छन ।

दोहा ।

जहां जोग एकावली की दीपक में होइ ।

मालादीपक कहत हैं कवि-प्रानंद समोइ ॥ ३१२ ॥

उदाहरन कवित्त ।

घोरि घोरि घनसार नीर में गुलाब की जो
चन्दन समेत लै चढ़ावती हो तन में । याको
कहा चली न तनक सौरी हूँ सकति बारि किन

राखौ राति बरफ़ी के बन में ॥ आधि व्याधि को
उपाधि ठरति उपाय कीन्हे रघुनाथ याको कहा
कीजै प्रेम-पन में । दावानल पियो सो बस्यो है
हिये मोहन के मोहन बसेरो कियो आपु याके
मन में ॥ ३१३ ॥

सार अलङ्कार लच्छन ।

दोहा :

उत्तर उत्तर बरनिये जहां अर्थ उतकर्ष ।

अलङ्कार सो सार है उबिठे सुनत न वर्ष ॥ ३१४ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जीवन है सार तासों सम्पत्ति को बिसतार
सार सार तासों परिवार भौन भरिये । रघुनाथ
तासों जँचे नोचे को बिचार सार तासों सार
सबही को भार हिये धरिये ॥ तासों सार विद्या
को पसार कीबी बसुधा में तासो सार नेह के
नवनि तासों ठरिये । तासों है हो सार सुख भ-
गति मुरारि जू की तासों सार काहू को जो उप-
कार करिये ॥ ३१५ ॥

क्रमिका लच्छन ।

दोहा ।

जयार्थे क्रम लाइये अन्वय सों गहि रीति ।

क्रमिका सब कवि कहत हैं अलङ्कार करि प्रीति ॥३१६॥

उदाहरन कवित्त ।

अजौ ना उपाय कछू करती हौ मिलिबे
को मोहन सों तोहि कौने कुमति दर्दे दर्दे ।
आरसो में देखि धौं रह्यो है कहा बाकी अब
जीवन के ऐबे में औ जैबे में लरिकई ॥ रघु-
नाथ श्रीफल करिय-कुम्भ कोकन को कुच कठि-
नार्दे उच्चतार्दे जुगार्दे ठई । कांजन की खंजन
की मौनन को नैननने जीति लई विसदई स्याम-
तई चपलई ॥ ३१७ ॥

अपरंच कवित्त ।

हरि हरि हर को बजर चक्र तिरसूल तिहि
को उबारि सार करतार तन को । बाहुव के
अगिन गलाय गढ़ी किरपान पानिप चढ़ायो
पानि कालकूट बन को ॥ सोई हाथ आई रावरे
के राजा बरिवण्ड कहै रघुनाथ गुन गांथि

उहि पन को । काटिबो बिपच्छ-पच्छ पालिबो
सरन आये देस लीबो गौस कीबो नास दुसमन
को ॥ ३१८ ॥

पर्याय अलङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

एकै जहां अनेक थल थापि करी परयाय ।

अलङ्कार परजाय सो बरनत कवि सुख पाय ॥ ३१९ ॥

उदाहरन कवित ।

किसलय छोड़ि कै बसी है आभा पाइन की
एही कवि रघुनाथ कंज सुकुमार में । छोड़ि कै
कमल कलौ कुचन की सोभा भली आइ कै
बसी है चारु श्रीफल उदारमें ॥ कंजन ते छोड़ि
मनरंजन बसी है सोभा नैनन को हाल मीन
बाभे लाल जाल में । अहि कै कुमार तिनै
छोड़ि बसी सोभा सार भावती के बार की दुरे-
फान के द्वार में ॥ ३२० ॥

द्वितीय परयाय लच्छन ।

दोहा ।

एक बीच परजाय तहँ कीजै आनि अनेक ।

ताहूँ सो परजाय सब कवि करि कहत बिबेक ॥ ३२१ ॥

उदाहरन कवित्त ।

पहिले हो विद्यारथी ब्रह्मचारी भेष फिरि
हरि को सनेही भया भयो साप-हत है । कहै
रघुनाथ फेरि आपनो विवाह कै कै भयो गिर-
हस्त पाइ पाछिले को मत है ॥ फेरि भयो परम
दरिद्री पुहिमो के बीच फेरि भयो बसुधा बिदित
राखें सत है । सामा पाइ बड़ी निजु देसै हा-
रिका सों पाइ देखीजू सुदामा ऽवसुरेसै नि-
दरत है ॥ ३२२ ॥

अपरंच कवित्त ।

बंसीधरतर नटवर भेष धरें ठाढ़ देखति
हो एई जसुमति के दुलारे हैं । गोधन चरैया
एई चोर के हरैया एई गुंजन धरैया एई कुंजन
विहारि हैं ॥ एई मन-चोर एई माखन के चोर
एई रघुनाथ गोपिन के आंखिन के तारे हैं । एई
पीत पट वारे एई हैं मुकुटवारे ब्रज में सुनति
हो सो एई कान्ह कारे हैं ॥ ३२३ ॥

अपरच कवित्त ।

मालिन हूँ आवें काहूँ दिन पहिरावें हार
नाइन हूँ काहूँ दिन परसत गात हैं । बनि
मनिहारी कवों रीझ की तिहारी वस्तु खोलि
खोलि बेंदी मील मिसि बतरात हैं ॥ ऐसो भांति
प्रेम सों पगे हैं प्यारे रघुनाथ नित इत आइवें
कों केहूँ ना सकात हैं । जा दिन तें डांठि उनके
हो परी तादिन तैं कैया भेष भेष तुम्हें देखि देखि
जात हैं ॥ ३२४ ॥

परिव्रत लच्छन ।

दोहा ।

न्यून देह कै लेह जो अधिक सो परिव्रत जानि ।

अलङ्कार में सुरस अति कविजन कहैं बखानि ॥३२५॥

उदाहरण कवित्त ।

टूटी फूटी भौत तापैं सरी गरी छानों परी
आंगन में जमी खरी बासो ऐसे आक का । फटी
धोती पेन्हे लटों दुपटी मलौन आढ़े आया मि-
लिवे कों रूप छायो मझा सोक का ॥ एहो
रघुनाथ कवि कहिये कहां लों कथा ऐसो हो

सुदामा दुज दारिद के थोक की । तीन मूठी
भरि आजु दें करि अनाज आपु नौन्हो जदुपति
जु सों राज तीनो लोक की ॥ ३२६ ॥

परिसंख्यालङ्कार लच्छन ।

दीहा ।

करि निषेध बल एक तें इक बल बलु अरोप ।

परिसंख्या कवि कहत हैं अलङ्कार गहि चोप ॥ ३२७ ॥

उदाहरन कबित्त ।

आए जु रि जाचिबे कौं जाचक जहां खौरहे
एहो कवि रघुनाथ आजु तीनो थर में । एते
मान दान तिन्है भूप दसरथ दोन्है देत न देखाई
कहूं कोऊ सौज घर में ॥ बसन के नाते बास
पास कौमिला के एक भूषन के नाते नथ नाक
छला कर में । घोरे हाथौ चिचन के रहे चिच-
सारी मांझ राम के जनम रह्यो दाम दफातर
में ॥ ३२८ ॥

अपरंच कबित्त ।

अतिही कराल कलिकाल की व्यवस्था कहू

एही कवि रघुनाथ मोपें जात ना कहौ । देखिये
बिचारि तौ अचार रछ्यो कुम्भनि में गुरु गुरु-
भाई बनिभाई हाट में लहौ ॥ तेलों के सनह
रछ्या नेम गेह बेखन के रहौ है कसिरन के गेह
साँचे को मही । नदिन में पानिप परन तर-
बानि माहिं वरनो है बन को दरी में करनो रहौ ॥

अपरंच कवित्त ।

दूताई दलालनि में मल्लनि में दण्ड कीबो
चौर फार दरजो के बसन बटाई में । अपताई
थूहर में चोरताई खटकीरा अनाचार बालक
में बन्धन चटाई में ॥ महाराज बरिवण्डसिंह
जू के राज बीच कडै रघुनाथ रहौ धूरता न-
टाई में । पाहन में नौरसता परति देखाई
बानि वायु में चवाई रहे कण्ठक कटाई में ॥

विकल्प लच्छन ।

दोहा ।

बरनत हैं कविजन जहां तुल बल बीच विरोध ।

तासी कहत विकल्प सब अलङ्कार कवि बोध ॥३३१॥

उदाहरन सवेया ।

फागु बिलोकिबे को रघुनाथ गोपाल की

जा दुचितो बहते ही चाहों चली तो चली
चलें संग चलें बिनु जानति हों पछितेही ॥
ये दूतनी कहें राखति हों मन में न अकेली
मोद बसेही । कै सुख कै दुख पेही बलाइ ल्यों
चत कै आनु अचेत है ऐही ॥ ३२२ ॥

समुच्चय लच्छन ।

दीहा ।

भाव अनेकनि भांति के एक समै जहँ होइ ।

तहां समुच्चय कहत हैं अलङ्कार सब कोइ ॥ ३२३ ॥

उदाहरन सवैया ।

कै रतिरंग अंगहि जीति विदा रघुनाथ
भयो लखि भोरै । भावतो आनद सीं उनमत्त
लपेटि गह्वो दुपटाहि के कोरै ॥ हार गरे में
निहारि इनाम कां तीरै करै इमि भाव करारै ।
भौहैं मरारै निहारै हंस भपटै लपटै भभकै
भकभोरै ॥ ३२४ ॥

अपरंच सवैया ।

खेलति फागु साहागि भरी वृषभानलकी
भली भांति उमंग सीं । घूघट घाट किये रघुनाथ

गङ्गे हरि पै छुकिं छूटि कै संग सों ॥ चोकि
तिरीछी चितै मुसक्याइ फिरी पिचकारी लगाइ
के संग सों । रोझि रहे वह भाव चितै अरु
भोजि रहे वा रंगीली के रंग सों ॥ ३३५ ॥

अपरंच सवैया ।

आजु श्रीराधे को हौं अपने कर मोहन को
लिखि चित्र दिखायो । काछ कछें पटपौत को
पैरत ग्वालन सों जमुना में सोहायो ॥ मोद
के बोध सों कागद में रघुनाथ भटू जिय वे प-
यरायो । देखत देखत बार अनकन बूड़ि गयो
फिरि ऊपर आयो ॥ ३३६ ॥

द्वितीय समुच्चय लच्छन ।

दोहा ।

अहं शब्द प्रथमहिं भजे जहां सुनी सुख दान ।

ताहि समुच्चय कहत हैं कविकुल धन्य प्रमान ॥ ३३७ ॥

उदाहरन कवित्त ।

शिव को उपासना को जग्यन को दासना
को इन्द्रिनि की सासना को इन्द्र पै अमल को ।
पूतनि को दूतनि को सम्यति अकूतनि का बर

मजबूतनि को मति भरी-कल को ॥ सखनि
को मन्त्रनि के। अहै कृत जन्मनि को रघुनाथ
तपस्या निरंतर के फल को । मेरे है भरोसी
आज बाहन के बल को औ दानव के दल को
समुद्र याहि थल को ॥ ३३८ ॥

अपरंच कवित्त ।

मेरी यह देह मेरो धन यह मेरो गेह मेरे
हो सनेह सदाँ गीत के रहत हैं । मेरो राज
काज मेरो मुभट समाज आज मेरी समता को
और भू को लहत हैं । मैं हों महाज्ञानी रघु-
नाथ मैं हों महादानी मेरीही दया सों दीन
प्रानी निबहत हैं । ऐसी नित बुद्धि जाके गात
में बसति ताको सकल सयाने जीव आतमा
कहत हैं ॥ ३३९ ॥

कारक दीपक लच्छन ।

दोहा ।

क्रमगति भाव समूह को जहाँ बरनिये आनि ।

अलङ्कार में सुकवि सो कारक दीपक जानि ॥ ३४० ॥

उदाहरन कवित्त ।

बिछवाए पौरि लौं बिछौना जंगी बाफन के
 बरवाए दीपक मृगम्व सब आरौ में । जरवाए
 अमर कलस धरवाए रस भरवाए मादक मनिन-
 मई भारी में ॥ रावरे सों मिलिबे कों एही
 कवि रघुनाथ आवति हों देखे चाप ऐसी औधि
 बारौ में । आंगन में आइ ठाढ़ी होइ फेरि फिरि
 जाइ फिरि आइ फिरि जाइ बैठे चिचसारी
 में ॥ ३४१ ॥

अपरंच कवित्त ।

रूप आस लाग्यो देखि प्यारी पास ठाढ़ी
 प्यारी ताके धन मन करखन के करै उपाय ।
 भूषन सुधारै किनु आरसो निहारै किनु बोरी
 ले उछारै किनु तोरै अंग अंगिराय ॥ कहै रघु-
 नाथ छिन लाज को नवावै यौव अधर कँपावै
 छिन छिन कछू गुननाय । भौंहनि चढ़ाइ किनु
 रहै लखि ललचाइ मुर मुसक्याइ किनु सखी
 सों लपटि जाय ॥ ३४२ ॥

समाधि लच्छन

दोहा ।

कारनल्लार ते निकट अपनो कारज होइ ।

तामो कहत समाधि सब अलङ्कार सुख भोइ ॥ ३४३ ॥

प्यारी चल्थो परदेस सन्यो मब माल मनो-
रथ की बहु गूढ़ें । राख्यो मनेह चहै तेहि औ-
सर लाज समाजु हठे मुँह मूढ़ें ॥ हे रघुनाथ
कहा कहीं भाग की चाह्यो मनोज कछू कियो
दूढ़ें । एते अचानक ही दरसे घन औ बरसे
दस बीसक बूढ़ें ॥ ३४४ ॥

प्रत्यनीक लच्छन ।

दोहा ।

बली शत्रु के पच्छ पर प्राक्रम वरनन होइ ।

प्रत्यनाक तासी कहत कवि आनंद समोइ ॥ ३४५ ॥

उदाहरन सुवैया ।

प्यार निहारि इहां का पुरातम दीन्हे पठाइ
पयोद बली काँ । हे रघुनाथ कहं लीं कहौं
वै करै बिधि वंसीहैं दृष्टि भली काँ ॥ जानत हौं
निसि बासर सात कियो तब जा कारबे हो

छली कों । रावरे सों तो चली न कछू अब बो-
रत है वृषभांज लली कों ॥ ३४६ ॥

अपरंच कवित्त ।

बहै मधु मधु जो मखो है मारे रावरे के
भूत भयो डोलत समाज साज बर सों । एही
रघुनाथ ताकी चास तें पुरुष जाई सोज न नि-
कसि होत नेकु न्यारो घर सों ॥ हम अबला औ
वह बूझत तिहारो हित हितू तातें आपने प-
चारि दीन्हे अर सों । ऊधो जू जनाइ दीजो
यह मधुसूदन सों मारी परैं ब्रज की विचारी
मधुकर सों ॥ ३४७ ॥

काव्यार्थापत्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहां पर्यं कैमुत्त सों सिद्धि कोजिये आनि ।

काव्यार्थापत्ति कवित में अलङ्कार सो जानि ॥ ३४८ ॥

उदाहरन कवित्त ।

भली-ही जो सीता जू कों लै कै दमानन
आपु मिलतो तौ मिलतो विभूति औरी दू
तनी । एही रघुनाथ रघुनाथ को दोहाई प्रजा

कुसल सीं रहती रही तो जाति जितनी । परब
खरब जोखो दरब सी छै है वृथा संख को बर
औ जो सेना संग तितनी । पूछो जिन पूर पारा-
वार को पहार डार दूतना सुनो हो ताकों
लह्का लेना कितनी ॥ ३४६ ॥

अपरंच कवित्त ।

कब की हौं आई कहि केती समुझाई एक
मन में न ल्याई ले बसाई बात कली की ।
बलि गई चलि प्यार रघुनाथ पास आस देखत
उदास चास पायें मै न बली की ॥ हेरि हेरि
उर बेर बेर फेरि फेरि नाल चाहौ जो हरायो
तो सुनौ न हौंसी अलौ की । रावर कुचनि जी
ल्यो कंचन-कलस एहा नृपभान लली बात केती
कौलकलौ की ॥ ३५० ॥

काव्यलिंग लच्छन ।

दोहा ।

जहँ समर्थनिय अर्थ को हेतु बरनिये भानि ।

काव्यलिंग सब कवि कहत प्रलङ्कार मुखदानि ॥ ३५१ ॥

उदाहरन सबैया ।

बाल अनेकनि को लखि हाल जो जीव में

आइ सँदेह बढ्यो है । सो रघुनाथ की सोई तजो
 यह राखि रहौ मन जामे मढ्या है ॥ औरन
 वाम को काम सुनौ निजु ती ही कों एक विरंचि
 गढ्यो है । है करिहै बस मोहन कों चलि तू
 बलि मोहन मन्त्र पढ्यो है ॥ ३४२ ॥

अर्थान्तरन्यास लच्छन ।

दोहा ।

पहिले कह्यो विशेष कों फेरि कह्यो सामान्य ।

कहि अर्थान्तरन्यास को लच्छन है मुख मान्य ॥ ३४३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

डारि कै पहार पाँटि पारावार भयपार मर-
 कट कटक लै रीकन के गन कों । हर बर बंचित
 कै आदि दै दसानन कों मारे सब राकस जे
 आगे आए रन कों ॥ जोई चाहै सार्ई करै एहो
 कबि रघुनाथ दूतन के विममै में कहा डायो
 मन कों । लड़ा जीति राम जो विभीषन कों
 दर्द कहौ कोन कठिनई है कहत पुरुषन कों ॥

दोहा ।

पहिले कह्यो सामान्य कों कहिए फेरि विशेष ।

यो अर्थान्तरन्यास को दूजो भेद सुभेष ॥ ३४४ ॥

उदाहरन सवैया ।

हे रघुनाथ सुनौ मन दै गुन बास किये
सतसंग के पास को । छोटे बड़े पद को पहुँचें
जस पावत हैं प्रभुता की अभास को ॥ याकों न
मानिये भूँठ ककू यह दैत कहें निज बुद्धि बि-
लास को । पान के साथ ह्व जात खखी छिति-
नाथ के हाथ में पात परास को ॥ ३५६ ॥

अपरंच सवैया ।

साध अगाध मनोप्रा के जे तिनके मत ए
धन देइ के लाखें । जो बनि आवै ता कीजै अ-
वस्यक कीन्हे से मोद महा रस चाहें ॥ हे रघु-
नाथ सुनौ सतसंग तें • छोटे बड़े पद पावैं सा
भाखैं । लाह जवाहिर के संग जाइ महीपन
को तिय भाल पैं राखैं ॥ ३५७ ॥

विकस्वर लच्छन ।

दोहा ।

कहि विशेष सामान्य कहि कहिये फेरि विशेष ।
अलङ्कार में सुकवि कहैं ताहि विकस्वर लेख ॥ ३५८ ॥

उदाहरन सवैया ।

इन्द्र की सामा सुदामा काँ कृष्ण दई मि-
लतें न गयो पल सेषी । मैं कहौं जो सो सुनौ
मन देइतने कीं न आप अपूरव रेखौ । रौति ब-
डेन कीऐसिये है रघुनाथ कहँ उर मैं अवरेखौ ।
अङ्ग लगाइ मिले रघुनायक लङ्क विभीषन कीं
दई देखौ ॥ ३५६ ॥

प्रीदोक्ति लच्छन ।

दीहा ।

जहँ बरनत उत्कर्ष के हेत हेत कोउ आनि ।
तहां सुकवि प्रीदोक्ति यह जग में कहत बखानि ।

उदाहरण कवित्त ।

बेर बेर हरि हरि टुचित छै जकि रहौं जो
सो मेरे जिय बाच भयो ऐसी भान है । खाली
मध्य देश एहो कवि रघुनाथ आपु विधाता
बनायो एतो रावरे के जान है ॥ दूरि कौजे
अस सम ककुक है नाही नाही निहचै क कहौं
मोहि ईश्वर की आन है । कैसे आवै देखिबे में

तुम ही सुजान प्यारे प्यारी जू की कटि को नि-
दान परमान है ॥ ३६१ ॥

संभावना लच्छन ।

दोहा ।

ऐसी होइ तो होइयों करि कै ऐसी जह ।

अलङ्कार संभावना बरनत मुकवि समूह ॥ ३६२ ॥

उदाहरन सवैया ।

श्रीरघुनाथ की सोंह सरीं करि भार सह-
स्त्रनि दूध पत्रावे । वायु बसे सब बाहुन में बल
कूरम सेष बराह की आवै ॥ और सुनौ यहि
कारज सिद्धि कीं मांगि सटाशिव सों बर पावे ।
जौ इतना बनि आवै कहूं तो पिनाकहिं तू दश-
कन्ध उठावे ॥ ३६३ ॥

अपरंच सवैया ।

नील धरै पट प्यारी की आवनि ग्हाइ कै
कालिंटी सों सखि याहूं । सो कवि देखि बि-
चारतौ हीं अपने मन में उपमा उतसाहूं ॥ मैं
वह भूक्ति हीं तुम सों रघुनाथ की सोंह कहों

सति भाहूँ । बारिद बीच कूपी छिति पै गज-
गामिनि दामिनि देखौ है काहूँ ॥ ३६४ ॥

मिथ्याध्वसित लच्छन ।

दोहा ।

कोउ एक मिथ्या सिद्धि की मिथ्या कलपे और ।

मिथ्याध्वसित होत है अलङ्कार तहिं ठौर ॥ ३६५ ॥

उदाहरन कवित्त ।

चरते पहार पर देखि फन्दे कीं लगाइ पीछे
सौं चलाइ कर मुख सौं बभायो है । गले में
जंजीर बाँधि रोक की तरह सेतौ लोगनि के आगे
ल्याइ उनको नचायो है ॥ इह सुने की प्रतीति
इनके न जो मै आइ रघुनाथ की दोहाई में हूँ
भेद पायो है । तुम जे कछा सो साँचइ हमे
न भूँठ कछू मेघन के मास को कबाव मै हू
खायो है ।

अपरंच सवेया ।

गावत बाँदर बैठयो निकुंज में ताल समेत
में आँखिन पेखे । तैं जो कछा यह सो सुनि
कै अपने मन में इन्साँन रेखे ॥ यामे न भूँठ

कछू रघुनाथ है ब्रह्म सनातन माया के-लखि ।
गाँव में जाइ वै मैहूँ बकानि कों बैलहिँ वेद
पढ़ावत देखे ॥ ३६७ ॥

ललित लच्छन ।

दाहा ।

प्रसूति के वाक्यार्थ के बरनन की प्रतिबिम्ब ।

जहाँ बरनिये ललित तहाँ लखि नीजो बिनु लिख ॥

उदाहरन सवैया ।

केतिकी केतिकी बार सिखापन में दियो
पै न हिये धरती हैं । हैं वह नायक श्री रघुनाथ
ब्रथा तिन सीं भ्रम के लगती हैं ॥ देखौ मनैबै
कों मेरे हूँ तेरे हूँ आइ कों पाइन पैं परती हैं ।
कौन कथा कहिय इनकी गये फागु का टाढ़ेंस
ए करती हैं ॥ ३६८ ॥

अपरंच सवैया ।

काहू की सौख न मानती है अपने मन
अपनी बूझि बसावैं । मूखो जो पन्थ सो छोड़ि
कौ ऊबट कौ बकबाद ब्रथा उठि धावैं ॥ हे रघु-
नाथ कहा कहिय कहतें कछू बातें नहीं बनि

आवैं । देखति होइनकी मति को, ऋतु पावस
बीति गय घर आवैं ॥ ३७० ॥

प्रहर्षन लच्छन ।

दोहा ।

सतकण्ठित जो अर्थ हैं बिना जतन सों सिद्धि ।

सुकवि प्रहर्षन कहत हैं अलङ्कार में रिद्धि ॥ ३७१ ॥

उदाहरन सवैया ।

बासर बासे के तीरथ को रघुन'थ सुनौ परबी
लखि भारी । गाँउ के लोगन संग सखी सिंगरो
परिवार ले मास सिधारी ॥ आपु अकेलौ रह्यो
टुलही कहिये अब भाग की बात कहाँ रौ ।
जीव को भावतो देवर जो घर में रह्यो सो घर
की रखवारी ॥ ३७२ ॥

द्वितीय प्रहर्षन लच्छन ।

दोहा ।

जहाँ मन बाँझित अर्थ सों अधिक परापति होइ ।

दुतिय प्रहर्षन कहत तहाँ बुद्धिवान सब कोइ ॥ ३७३ ॥

उदाहरन सवैया ।

आखु अन्हात में देख्यो कहूँ मन में महरैठौ

को रूप बसायो । प्रेम-परी अति चातुर है घर
चातुर एक बंसौठी पठायो ॥ हे रघुनाथ कहा
कहिये मनमोहन हूं मन मोहन पायो । बातें
लगाइ लखालखी की उत सों मिलिबे की सँ-
दसौई आयो ॥ ३७४ ॥

तृतीय प्रहर्षन लच्छन ।

दोहा ।

जतम करत जहँ सिद्धि की लाभ होइ साक्षात ।

कहत प्रहर्षन तीसरो भेद सुमति अवदात ॥ ३७५ ॥

उदाहरन सवैया ।

पाती लिखी अपने कर सों दई हे रघुनाथ
बोलाइ कै धावम । और कह्यो सुखपाठ यों
बेग कृपा करि आइये आवत सावन ॥ भौति
अनेकनि के सनमान कै दै बकसीस पठायो
बुलावन । पायो न पौत्रि लौं जान कहा कहौं
बीचही आइ गयो मन-भावन ॥ ३७६ ॥

विषाद लच्छन ।

दोहा ।

जहँ मनबांछित अर्थ से प्रापति होइ विरह ।

तहां विषादहि कहत हैं जे जग में मति-रह ॥ ३७७ ॥

उदाहरन सवेया ।

मोहन को खवि मोहन रूप दसा ब्रजवा-
सिन की उर आनी । श्री रघुनाथ की सौँह
किये कहौ मैं अतिही हिय बोच सकानो ॥
सासुरे माइके की दिसि दृष्टि दै राखिबे की
कितनी अकुलानी । कौन कथा कहिये अपनी
सखि लाज निगोड़हि जातन जानी ॥ ३७८ ॥

अपरंच कवित्त ।

धाम सों निकसि राम विप्रनि पठैये
राज बैठै बड़ैये ठहरायो मति मन में । समै पाइ
पास्या जाइ एही कवि रघुनाथ केकई जू जानि
आपु पति पूरा पन में ॥ हाथ कछू बिधि की
न गति कहि जाय मोपै देखु देखु सखी भई
दाखी सब जन में । यह जो बिचाखी सो तो
उलटो अरथ भयो मरे दूसरथ औ भरथ बसे
बन में ॥ ३७९ ॥

उल्लास लच्छन ।

दोहा ।

सो उल्लास मुन भी मुगुन होत दोष सों दोष ।

मुन सों दूषन दोष तें गुन बिधि चारि सँतोष ॥ ३८० ॥

उदाहरन गुन सों गुन यथा सवैया ।

रावरे के बस रावरा भाँवती। क्यों न रहै
अति चातुर लीख्यो । सील सधान सुभाई को
खाद अहं रघुनाथ भले जिन चौख्यो ॥ है धन
में धनि आजु धरा पर मैं धनि जो तुम्है आइ
कै दौख्यो । तो सों उमा और रमामे गई बलि
चाहै पतिव्रत कों व्रत सौख्यो ॥ ३८१ ॥

दोष ते दाष यथा सवैया ।

ठाकुर कूर की संगति सों पहिले बसुधा
बिच कूर कहावै । श्रीरघुनाथ को सोई सुनी
मन चाहै सदा धन हाथ न आवै ॥ फोको परै
आतिहो अँग को रँग है गुन जो सब सो बिसरा-
वै । खाज करै न कोऊ हित मानुष आजु कै
दारिद्र राज मतावै ॥ ३८२ ॥

अपरंच सवैया ।

कैसी है ठौली लगौ ब्रज की रघुनाथ कछू
गुन जात न गायो । खिलत फागु गली में अचा-
नक आजु गोपाले कहूं गहि पायो ॥ कै सुधि

मारो को औ पिचकारो कि बैर लियो एहि
भांति सोहायो । जो कहु भायो सो भेष ब-
नायो औ जो मन आयो सो नाच नचायो ॥ ३८३ ॥

गुन तें दूषन यथा सवैया ।

बने पंकज से पग पानि मनीहर आनन लौं
दृग धावतु हैं । रघुनाथ लसैं लगि एड़िन लौं
कच चन्द सो आनन भावतु हैं ॥ विधि ऐसा
अपूरब रूप रच्यो जेहि तें धनि आपु कहावतु
हैं । जोपै देखति हो न गोविन्द की ओर तो
काम कहो केहि आवतु हैं ॥ ३८४ ॥

अपरंच कवित्त ।

एरे मृग बड़े दृग तेरे कहै रघुनाथ दूर
तक देखौ देख सब से सँकात हो । वन में ब-
सत बैर काहू सौं न राखत हो परम नरम पाइ
घास पात खात हो ॥ पाँय को चलाँकी बाँकी
बसुधा में बिदित है वरनै कहां लौं मानो देह
धरें बात हो । आन पसू तिनमें बड़े हो सा-
वधान पर तान सुनिबे को बानि याते मार
जात हो ॥ ३८५ ॥

अथ दोष तें गुन सर्वैया ।

लोक तिहूँन की पाइ जय श्रिय-रावन आपु
महा बल भाखो । इन्द्रहि आदिन जे दिगपाल
ते जीति के आपनी बंद में डाखा ॥ तासों
कछो की मिलो रघुनाथ सों मंच बिभीषन को
न बिचाखो । खेदि दिये को न खेद करौ कछू
योरो है तोहि न जीव सों माखो ॥ ३८६ ॥

अपरंच सैया ।

गुन सों सुगुन दोष दोष सों प्रगट होत परम
प्रसिद्ध यह बात है नरन में । रघुनाथ की दो-
हार्द यह अदभुत गीति प्रगख्यो सुगुन दोष प्र-
गट करन में ॥ जसो मो सों कौन्ही तैसोई
मरो चहूँ सों पायो वै मुकुत पद आपन मरन
में । लाग्यो मेरे उर में दसानन चरन सा तो
मोहूँ गुन भयो आयो राम की सरन में ॥ ३८७ ॥

अवज्ञा ।

दोहा ।

गुन तें गुन जहँ होत नहिँ नहीँ दोष तें दोष ।

कहत अवज्ञा सुकवि सब अलङ्कार रस पोष ॥ ३८८ ॥

गुन तैं नगुन यथा भवैया ।

जो शिव के चरणाम्बुज में अपना मन देइ
कछू अनुराग्यो । सो बसुधा बिच ऐसो भयो जहि
को चहुँ चक्रनि में असु पाग्यो ॥ देखो अभाग
कलानिधि को रघुनाथ सुनौ चढ़ि मौस पै
जाग्यो । जैसे का तैसो कलङ्क रज्यो रहि संगति
को गुन नेकु न लाग्यो ॥ ३८९ ॥

दोष तैं न दोष यथा भवैया ।

जाति नहीं प्रभुता रघुनाथ जौ सेवरे मान्यो
न देव धुनों कीं । मोल घटे नाहिँ पामर प्राइ
कौ जौ कहूँ देत है फोंकि चुनी कीं ॥ मंली परै
नाहिँ मान कछू जौ हँस्यो कोज पातकी देखि
मुनी कीं । ठाकुर कूर किया जौ न आदर ला-
गत है नाहिँ दोष गुनी कीं ॥ ३९० ॥

अनुग्या लच्छन ।

दोहा ।

दृष्टा की जत दोष की जहां बड़ी गुन पाइ ।

तहां अनुग्या कवित में कबिजन देत देखाइ ॥ ३९१ ॥

उदाहरन कवित्त ।

जोड़ कैहैं सोड़ सुनि ऐहैं रघुनाथ पौसर
कुपौसर की बात सब सहिये । मागिये न
खाइबे कों और कोऊ परकार करत कलेज में
को भूठो मीठो लहिये ॥ घर की टहल जेतौ
तेती सब आनद सों करिये उदास भाव कबहुं
न गहिये । मोहन के देखिबे की मन में बसी
है आइ जाइ जसुमति जूकी चेरी छै कै रहिये ॥

लेसालङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

जहां जात गुन दोष छै दोष जहां गुन होत ।

फलङ्कार में कह्य है लेस सुकवि के गोत ॥ ३८३ ॥

गुन दोष छैबो लच्छन ।

जौलीं चले सुनि कै जिय तौ लगि मैर
चढ्यो बिस ऐसे पिये करे । सूख्यो करे तन
भूल्यो फिरै मन काम तज्यो नहिँ काम जिए
को ॥ सौरे करेजे कितोक्त सकै मुख है रघुनाथ
बिहार किए को । देखौ हमै मधुसूदन को यह
नेह भयो नटसाज हिये को ॥ ३८४ ॥

दोष गुन द्वैवो यथा सवैया ।

दूबरो झूवो सो दोष महा जग में परसिद्धि
सो बात रची है । मोहितो जानि परै है महा
गुन मानो हिये यह जानो सची है ॥ रावरे के
बिकुरे रघुनाथ बड़े बिरहा सों जो देह पची
है । हरे न पावत घेरे है आज खीं काल की
हाथ सों बाल बची है ॥ ३८५ ॥

अपरंच कवित्त ।

दान सनमान पाइ आट हूं दिसा में जाइ
गावत हैं गुनी फ़ैले राजनि के ओक में । भारी
दल भार कीं संभारि साहिबी सराहि गावत हैं
सिष राखि चित छितिरोक में ॥ कहै रघुनाथ
वरिवण्डासिंह महाराज तुम सो को दूजा आजु
पुनीती के थोक में । मारे जेहैं वीर तिनहै ब-
रिता सों सुख पाइ गावती हैं जस अपसरा
सुरलोक में ॥ ३८६ ॥

मुद्रा अलङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

सूधार्य को सूचिबी सो मुद्रा पहिचानि ।

अलङ्कार में सुकवि सब वरनत सुनौ सुजान ॥ ३८७ ॥

उदाहरन सवैया ।

कालिंदी कूल कदंब की छाँड़ में ठाढ़ीही
आपु सखौन सों लेखी । औरै अपरव सोभा
भई रघुनाथ उदास के भाव सों भेखी ॥ खेद
सुखावति कंज लिये कर आँखें किये जनु बिच
की लेखी । है तुम कीं सुधि एहो गोपाल अ-
हीर की जो वह बाढ़िन देखी ॥ ३९८ ॥

रत्नावली लच्छन ।

दोहा ।

क्रम सों वरनन कीजिये प्रकृति अर्थ जेहिँ ठीर ।
अलङ्कार रत्नावली वरनत कवि सिर मोर ॥ ३९९ ॥

उदाहरन सवैया ।

आदित सोम कहौ कवहूँ कवहूँ कहौ म-
ङ्गल औ बुध होते । बीरफै शुक्ल शनीचर को
कहिबौ कवहूँ मुख सो नहिँ रोते ॥ मोहि न
जानि परै रघुनाथहि भेट को है दिन कौन सो-
चीते । आवत जात में हारि परी तुम्हें बार
बतावत बासर बीते ॥ ४०० ॥

अपरंच सवैया ।

केसरि सों पहिले उबध्यो अंगरंग लख्यो
जिमि चंपकली है । फेरि गुलाब के नीर न्दवाय
पिन्हायो जो सारी सुगन्ध रली है ॥ नाइनिया
चतुरादनि सों रघुनाथ कियो बस गोप-लली
है । पारत पाटी कछो फिरि यों वृजराज सों
आजु मिलौ तौ भली है ॥ ४०१ ॥

अपरंच कवित्त ।

सौंह कीन्हे कहति हौं एही प्यारे रघुनाथ
आवति रखँये वादो उनहीं के घर सों । जैसे
बनै तैसे दोस आज को बिताइये जू अब अ-
कुलाइए ना पागे प्रेम बर सों ॥ जापर गुलाल
मूठी डारी सो मिलेगी काङ्क्षि मारी पिचकारी
बाल प्यारी तौ न पर सों ॥ खेलत में हारी
रावरे के कर बर सों जा भीजिही अतर सों सो
आइ है अतरु सों ॥ ४०२ ॥

अपरंच कवित्त ।

सत्यजुग पुष्कर औ चेतो बीच कुरखित हा-

घर के अंत नीमखार बन्यो जब सों । कहै रघु-
नाथ इन तीन को जगत बीच परम प्रसिद्ध
नाजं चल्थो आयो तब सों ॥ भूप बरिवण्ड
कलऊ में बनवायो शिवसागर तलाव सो स-
रस बन्यो सब सों । यह जानि परै देखि महत
महातिम के गने जैहैं चारि चारों जुगन के
अब सों ॥ ४०३ ॥

तदगुन लच्छन ॥

टोहा ।

तजि अपनी गुन और को गहै सो तदगुन जानि ।

अलङ्कार में मुखद अति कविजन कहैं बखानि ॥

उदाहरन सवैया ।

सीन जुही की हूँ जाति है माल बनाइ को
माल किती पहिराइये । सीती के भूषन भूषिये
जि पुखराज के ते सिगरे कहि गाइये ॥ जीवन
आवत लाली सरीर में हे रघुनाथ कहां लौं ब-
ताइये । खीरि लगाइये चन्दन को अँग के संग
केसरि को रँग पाइये ॥ ४०५ ॥

अपरंच सवैया ।

आसन एक पै आनंद सो पिये आपुस में
रस रूप बिसाल को । मैं रघुनाथ गढ़े तेहिँ औ-
सर डाल लिये कर फूल की माल को ॥ रीति
रही दुति दिखि दुहूँ को औ कौतुक एक भठू
एहिँ हाल को । अंग के रंग सों अंग को रंगभौ
गोरो को साँबरो गोरो गोपाल को ॥ ४०६ ॥

अपरंच कवित्त ।

आवति हीं देखि एक कौतुक सो यों सो
सुनौ आजु लीं न ऐसे और आँखिन में परे हैं ।
कवि चाहैं बरन्यो तो बरन्यो न जाइ लिख्यो
चाहै लिख्यो जाइ न चितेरे जेऊ खरे हैं ॥
अंग अंग अंग रंग प्रभा सों अभेद भए कहै
कवि रघुनाथ ऐसो रूप धरे हैं । राधा माधो
सोहे सोहैं सहज सुभाव खरे मोहि जानि परे
दोऊ लीला हाव करे हैं ॥ ४०७ ॥

अपरंच कवित्त ।

कौतुक है एक चले तू हूँ तो देखाऊँ तोहि

आवति हों देखे अबे देखिवे को दँवरी । सौंहें
कौहे कहति हों समें न मिलेगां फेरि बसि
बुन्दावन बरमन दोहे भावरी ॥ कदम को
काहों दोऊ दोहे गरवाहीं खरे जमुना में फू-
लत सरोज जहि ठाँव रीं । भासत है ऐसे बिनु
बाधा एहा रघुनाथ आधा हरि गोरि आपु आधा
राधा साँवरी ॥ ४०८ ॥

अपरंच कवित्त ।

श्रीगोपाललाल जू सों मिलवे कों महरैटी
गई निकुंजन बोच पालेपन मन को । इतनो
उदोत तहां कोहे। एही रघुनाथ मुख के प्रकास
औ सुवास वाके तन को ॥ चितये चकोर चारों
ओर तैं निकट आइ रहें टक लाइ पाइ मोद
लोचनन कों । कहिये कहां लौं एक राति में
बिहारे सुनौ सौरभित हूँ गयो बिटप सारे वन
को ॥ ४०९ ॥

अनगुन लच्छन ।

दोहा ।

प्राक सिद्धि गुन को जहां पर संनिधि उत्कर्ष ।

अलङ्कार अन गुन तहां जानो मदि हिय हर्ष ॥ ४१० ॥

उदाहरन सवैया ।

चोप भरे रघुनाथ विलाकत दम्पति जोन्ह
की जाति रसीली । एही सखी तेहिं औसर ले
गई मैं रचि फूल कौ माल छबीली ॥ आनन
की टुति देखी दुहूँ की फ़ैलि रही दूतनौ नभ
मीली । चैत के पून्यो कौ चन्द की चाँदनी चौ-
गुनी चारु भई चटकौली ॥ ४११ ॥

अपरंच कवित्त ।

सौरभ सकल डारि सुमन सों गूँदे बार भू-
षन मनिन वारे माँग मुकता भई । हीरन के
धारे हारु चन्दन चढ़ाएँ चारु सुरसरि ताकी
धार सुरसरि तारई । रघुनाथ पिअ बस करिबे
कों चली बाख़ सुख की मरीचो जाल दिसि
मढ़ि कै लई । चाब चढ़े चखनि चकोरन के
चका चौंधी चंद गयो चपि चटकौली चाँदनी
भई ॥ ४१२ ॥

अपरंच कवित्त ।

जहां होत हन तहां अनकी उपजएती रेत

में तें चौगुनौ बढ़त समै दौव तें । अनगने घर
ऐसे नर उपजें हैं ते हैं आठ हूं दिसनि में बि-
दिति ऊंचे नाऊ तें ॥ कहे रघुनाथ बरिवण्ड-
सिंह महागज एती बरकति भूमि रावरे के
पाँउं तें । ठौर ठौर सर भए पानिपं सों भरे भए
गाउँ भये बन तें बगर भए गाउँ तें ॥ ४१३ ॥

मौलित लच्छन ।

दोहा ।

जहां सटस ते भेद कछु नहीं परत पहिचानि ।
अलङ्कार मौलित तहां कबिजन कहत बखानि ॥ ४१४ ॥

उदाहरन सवैया ।

आजु उरोजन पै गुन गौरि के मैं अपने कर
केसरि लाई । सोन जुही की बनाइ कै माल
बिसाल बिचित्र गरे पहिराई । हे रघुनाथ कहां
लों कहौं लखि कै अंग के रंग को अधिकाई ।
कौ गरगाप दई दुति में दुति दूसरी दखिबे में
नहिं आई ॥ ४१५ ॥

सामान्य लच्छन ।

दोहा ।

जहां नहीं सामान्य तै लच्छित होत विशेष ।

अलङ्कार सामान्य है तहां अपूरब भेष ॥ ४१६ ॥

उदाहरन कवित्त ।

पायो भेद सखिन सों सावति अकेली आपु
 प्रथम समागम के भरी भय भारी में । रघुनाथ
 चल्थो तहां जागौ पाइ आइट कों ठाढ़ी भई
 भागि लागि भीतर अटारी में ॥ कहा कहौ कौ-
 तुक कह्यो न मोपें जात कछू अब लौं न देख्यो
 रूप एसो और नारी में । चित्रन सों मिलि भइ
 चित्र हाथ में न आई हारे हरि प्यारो रही
 प्यारी चित्रसारी में ॥ ४१७ ॥

उन मौलित लच्छन ।

दोहा ।

जहँ भेद अस्फुर्त है सो उन मौलित जानि ।

जहँ विशेष अस्फुर्त है सो वैसेष बखानि ॥ ४१८ ॥

उदाहरन सवैया ।

देखिवे कों दुति पून्यो के चंद की है रघु
 नाथ श्रीराधिका रानौ । आइ बेलौर के चौतरा

ऊपर ठाढ़ी भई सुख सौरभ सानो ॥ ऐसी गई
मिलि जोन्ह की जोति सों रूप की रासि न
जाति बखानी । वारन तें कहु भौहन तें कहु
नैननि को छवि तें पहिचानी ।

वैसेष उदाहरन ।

खेतल खेल मिहींचिनी को चित्रसारी में
जाइ छपी छवि छार्ड । चित्र लिखी पुतरौन सों
न्यारी के हे रघुनाथ गई नवतार्ड ॥ हेरत हारी
सखी सिनरो अपनी अपनो करि के चतुरार्ड ।
द्योस में आर्ड न हाथ कहा कहौ राति भई तब
राधि के पार्ड ॥ ४२० ॥

अपरंभ सवैया ।

बांधें सनाइ तुरंगन पै चढ़े भेष भया-
नक भावत नोत हैं । देखत देखि परें एहि
भांतिहिं हिम्माति किम्माति के बड़े पोत हैं ॥
फौजन बीच अभेद सदा रघुनाथ कहै दोऊ
कीन्हे उदोत हैं । हे सुन माहिर जंगजुरे पर
सूर वां कायर जाहिर होत हैं ॥ ४२१ ॥

गूढोत्तर लच्छन ।

दोहा ।

चतुराई लीने जहां उत्तर बरनन होइ ।

गूढोत्तर कबि कहत हैं अलङ्कार सुख भोइ ॥ ४२३ ॥

उदाहरन सवैया ।

गाउँ में चोरन को डर है रहे पावत कोज
न काहु दुआरे । और सुनौ रघुनाथ दूहां यह
रीति लगै न पुकार पुकारे ॥ मागत ही बसिबे
कों जो ठौर तो जाइ बसौ अबहीं उजिआरे ।
बाखरी एक हमारी है सुनौ सो है खिरकी सो
लगी पिछवारे ॥ ४२३ ॥

चित्रोत्तर लच्छन ।

दोहा ।

प्रणोत्तर सो सौ बरनिये जहां न उत्तर भिन्न ।

चित्रोत्तर सो कहत हैं अलङ्कार परबिन्न ॥ ४२४ ॥

उदाहरन सवैया ।

आवौ तो बैठो सुनौ ककु राग सिखावत
में सब गावति हैं जो । जाहु तो जाहु जो देखत
हैं मग श्रीरघुनाथ महा दुचिते हो ॥ मेरी सखी

परिमान कहै इनसी बमुधा मैं कहावति है
को । उत्तर है यह यौं कहियो तुम जो पठई
हम कीं पहुंची सो ॥ ४२५ ॥

अपरंच सवैया ।

रघुनाथ हो आजु मिल्यो पदु एक सो
विद्या ब्रह्मपति सो दरसै । पढ़ते औ पढ़ावते
एक घरौ कबहूँ मन बौच नहीं अरसै ॥ महिमा
मति को कहि जात कछू नहिँ ऐसी सुना तेहि
कीं सरसै । दियो उत्तर प्रणहि में सहजै तन
अंत समैं जमुना परसै ॥ ४२६ ॥

सूकम लच्छन ।

दोहा ।

तुरतै आसै और को अपने जिय में जानि ।

व्यंग सहित चेष्टा करै सूकम ताहि बखानि ॥ ४२७ ॥

उदाहरन सवैया ।

आई हौं बूझन तो, सो सखी एहिँ बात को
हेत कहा है सो भाखौ । मेरे महा मन में भ्रम
है रघुनाथ की सींह सो दूरि को नाखौ ॥ राधे
पैं काँधे पठे हरदौ अलि सीं कहियो एहि को

रस चाखौ । हाथ में ले फिरि हाथ में दे कछो
जाइ कही तुमहूं यह राखौ ॥ ४२८ ॥

पिहित लच्छन ।

दोहा ।

जहां जानि वृत्तान्त पर चेष्टा करै सकूत ।

अलङ्कार पोहित तहां बरनत कवि मजबूत ॥ ४२९ ॥

उदाहरन सवैया ।

आयी कहुं रति मानि कै भाव तो हेर
दसों रद की छद दूखे । पीक की लीक कपो-
लनि सों रघुनाथ लगी रंग छै रहे रुखि ॥ लागे
प्रखेद के भोजे जेबागे सो जैसे के तैसे लखे नहिं
सूखे । ले तेहिं काल अभूषन अंग में हीरा
बिसाल के भूषित भूषे ॥ ४३० ॥

व्याजोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

अलङ्कार व्यजोक्ति तहां बरनत कवि एहिं रीति ।

गोपन करे आकार की जहां और के भीति ॥ ४३१ ॥

अपरंच सवैया ।

फूलौहि सालती बागन बाजू के चाहत
धाइ मगाइ सो भेलौ । मोहि पठाई ले आ-

दूबे कीं वह आजु महा हठही अब देखौ ॥ हे
रघुनाथ कहाँ कहीं भौर कौ जातहो मेरो कियो
यह लेखौ । आँठ में काँटि उरोज पै आयो
मै भारत लाग्यो खरीट सो देखौ ॥ ४३२ ॥

गूढ़ोक्ति लच्छन ।

भौर प्रति उद्देश्य करि कहि भौर सों बात ।

तासी कवि गूढ़ोक्ति कहि बरनत अति अवदात ॥ ४३३ ॥

उदाहरन कवित्त ।

राधिके बिलोकि एहो कवि रघुनाथ ठाढ़ी
अमुना के तट गुरजन के सँघट में । आसे राखि
जिह्व में मुन्यदूबे कीं उतैं दूतैं सखी प्रति सखा
एक बोल्यो बुद्धि पट में ॥ जानिये न कौन हेतु
मोहन सखा सों कह्यो तुम सब रहौ जाइ गोध
नगरट में । मिलि हैं प्रभात छन्टावन बीच
अयो हम आजु राति बसि हैं अकेले बंसीबट
में ॥ ४३४ ॥

विबुधोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

व्यंग सहित अश्लेष अहं बरनत कवि मुखदानि ।

अलङ्कार विबुधोक्ति तहँ होत लेहु पहिचानि ॥ ४३५ ॥

उदाहरन सवैया ।

हार सँवारि अनेकन फूल के आई लै मा-
लिनि भौन भरे में । काहू को खेत दियो ओहिं
काहू को पीरो दियो रघुनाथ अरेमे ॥ नीरज
नौख को ले करमें कहीं राधे सों यों चतुराई
धरे में । लीजिये हेत तिहारे हौं ल्याई हौं या
रँग को लगे प्यारो गरे में ॥ ४३६ ॥

अपरंच सवैया ।

मैं गय लाइ करोरिन गाँठि कै कोन्ही बना
इत यार पतौजै । देखि कै रोभिये जो रिक्त-
बार हौ दीजिये साहब हारिद छीजै ॥ हे रघु-
नाथ हैं वा दो कहू नहिँ चित्त को नैक दुचित्त
न कीजै । चाहत जोई बनाव को सोई धरो
पल में पहुँचो अब लीजै ॥ ४३७ ॥

अपरंच सवैया ।

देखिये मूँधे चुनौतिय में शुभ राख्यो है मैं
केहिँ भाति सँवारे । चारु सुगन्ध को खानि कथा
कहिये रघुनाथ महा गुन धारे ॥ चाहत जैसिये

तसियै लार्इ हौं खूँ सु प्यारी जूँ हत तिहारे ।
कीजिये लाल कृपा दूतहौ नित लौजिये आनि
के पान हमारे ॥ ४३८ ॥

अपरंच सवैया ।

जो कीउ देइ सी सो कीउ लेइ याहे व्य-
वहार बड़े को चलायो । मैं अपने जिय में बह
जानि दियो तुम कीं अपने मन भाय ॥ रा-
वरे को गुन मोपै कछू रघुनाथ की सौँहन जातु
है गायो । भाउ बरोबरि की ती कहा चली
देखिवे कीं फिरि पाउ न पायो ॥ ४३९ ॥

जुक्ति लच्छन ।

। दोहा

परसौं गोपन करि कथा करै जुक्ति सो जानि ।

अलङ्कार में अति सुरस सुकविन कीं सुखदानि ॥ ४४० ॥

उदाहरन सवैया ।

देख्यो परोसिन भेख्यो गुपाल सीं हे रघु-
नाथ दिखे गरबाही । धाय पै आंय सो चाहति
है कछो बूझि डरी अपने मन माहीं ॥ ताकि
निवारिवे कीं तिहीं काल्यों बुद्धि प्रकास कियो

हिय राहीं । पौठ दियाहि दै आपने सीस की
पाय सीं लाय रही पर छाहीं ॥ ४४१ ॥

अथ लोकोक्ति ।

दोहा ।

जहँ कहनावति लोक की तहँ लोकोक्ति बखान ।

फलद्वार में सरस अति सुकविन कीं सुखदान ॥ ४४२ ॥

उदाहरन सवैया ।

कोजिये दूरि मैं मागति हौं अपने मन में
तैं उदास को हेनो । रावरे रूप सीं रूप बिरंचि
बनाइ सक्यो न रह्यो गहि कोनो ॥ जा रति
की समता रघुनाथ दर्ई तुम कीं मति की अति
लीनो । तौले तुला धरि होत कहा बलि गुंज
सी गुंज औ सोना सो सीना ॥ ४४३ ॥

अपरंच लच्छन ।

गोपन में रघुनाथ गोपाल कहावत आपु हे
बुद्धि के पूरे । जानि परे नहिँ कौन दसा भई
आवति है मन में न बिसूरे ॥ छोड़ैं तौ राधिका
सी ठकुराइनि राखें तौ कूवरी प्रेम के रूरे ।

साँची कियो उपखान सुनौ तजि राजसिंघासन
बैठत धूर ॥ ४४४ ॥

छेकोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

अरथांतर की कल्पना जहाँ लोकोक्ति में होइ ।

अलङ्कार छेकोक्ति सो बरनत कवि मुख भोइ ॥ ४४५ ॥

उदाहरन सवैया ।

हौ सबही सों बड़ौ तुम हौ हितु जो मन
मोहन सों ले मिलाइये । ए सहवासिनि हैं तो
कहा इन सों जीवन कारज सिद्धि कै पाइये ॥
है जग में उपखान प्रसिद्ध सुनौ रघुनाथ की
सौंई सनाइये । ब्रह्म सोई है जहां फल खाइये
सिन्धु सोई है जहां जल पाइये ॥ ४४६ ॥

अपरंच सवैया ।

लख्यो अपनी अंखियान सौं मैं जमुना तट
आजु अन्हात मैं भोर । लगे दृग रावरे सों उनके
लगे रावरे के उनके मुख भोर ॥ दुरावति हौ
सहवासिनि सौं रघुनाथ वृथा बतियान के जोर ।

सुनौ जग में उपखान प्रसिद्ध है चारन की गति
जानत चार ॥ ४४७ ॥

बक्रोक्ति लच्छन ।

दीहा ।

जहँ परार्थ की कल्पना श्लेस काकु ते होत ।

बरनत तहँ बक्रोक्ति कहि अलङ्कार मति पोत ॥ ४४८ ॥

उदाहरन सबैया

पौरि में आप खरे हरि हैं बस है न कछू
हरि हैं तौ हरैबै । वेसुनौ की वे कों हैं बिनतौ
सुनौ हैं बिनतौ तिय को ऊबरैबै ॥ दीबे कों
लाए हैं माल तुम्है रघुनाथ ले आए हैं माल
खरैबै । छोड़िये मान वे पाप करें कहैं पाप करें
कहैं औसि करैबै ॥ ४४९ ॥

काकु यथा सबैया ।

बातें लगाइ सखानि सों न्यागे के आजु
गद्यो हखभान किसीरी । केसरि सों तन मंजन
कै दियो अंजन चाँखिन में बरजारी । हे रघुनाथ
कहा कही कौतुक प्यारे गौपालै बनाइ कै

गोरी । छाड़ि दिया दूतनों कहि के बहुरो दूत
आइयो खेलन होरी ॥ ४५० ॥

अपरंच सवैया ।

हीत बेलंब चलो घर कौ हरि देखिये दोष
के जाम गए है । देखें बिना मग हेरत हींहिगे
गेह के लोग महा दुचिते ह्वै ॥ ह्वै बस लोभ के
हे रघुनाथ रहे हो कहा एहि आसरे में भवै ।
कैसे कै आइ हैं गोरस लै गुन रावरे के नहि
जानति हैं वै ॥ ४५१ ॥

सुभावोक्ति लच्छन ।

दोहा ।

कीजै जहां कबित्त में बरनन जाति सुभाव ।
सुभावोक्ति सो जानिये अलङ्कार गहिचाव ॥ ४५२ ॥

उदाहरन सवैया ।

कैसी है ठीठलखी यह गोप कौ ओपभरौ
सिगरी ब्रजबाल सों । काहू कौ कानिन मानति
है हठ ठानति है चपला पन चाल सों ॥ मारि
गई तब कै बढि कै रघुनाथ घुमाइ कै फूल कौ

माल सों । लाल की फेंट सों लैकै गुलाल ल-
पेठि गई अब लाल के गाल सों ॥ ४५३ ॥

अपरंच सवैया ।

खिलत फागु लखि पिय प्यारी कीं सो सुख
की समता कहा दीजै । देखतही बनि आयो
समै रघुनाथ कहा है जो बार ने कोजै ॥ ज्यों ज्यों
कबीलो कहै पिचकारी लै एक लई अरु दूसरी
लीजै । त्यों त्यों कबीलो कहै कबि छाक सों
हरै हँसे न टरै खरी भीजै ॥ ४५४ ॥

अपरंच सवैया ।

जात चली एक गोपलली लखि मोहन औ-
सर बूझि कै होली । केसरि सों भरि कै रघु-
नाथ छिपाइ लई पिचकारी अमोली ॥ पाइ दबे
बढ़ि पीछे तैं आगे हूँ लाइ दई एहि भांति ते
भोलौ । जँचि उरोजन ऊपर धार सराक दे
लागी छराक दे बाली ॥ ४५५ ॥

अपरंच कवित्त ।

और ठौर घोरै हैं जा नन्द के मंदिर आइ

आजु तू रही है परि बातन के सकरे । देखि
देखि मुख को समूह सीमा रघुनाथ बालपन
चरित गोपाल जो अब करे ॥ पावन इनत भूमि
घुंघुलु बजत ताकीं निरखैं न बाँये नैन पलक
न जकरे । दुहूँ दतियन जोरि बंदन हँसौं हीं
कारि भूमै ठाढ़ो आंचर जसोमति को पकरे ॥

अपरंच कवित्त ।

कहूँ सूधी कहूँ टेढ़ी कहूँ फेम सीं लपेटी ल-
हरी उठत जँची कहूँ नीची पथी को । कहूँ अति
तेज कहूँ सीतल उथल कहूँ कहूँ हूँ गम्भीर रही
कहूँ कूल मथी को ॥ कहूँ अति तरजति गरजति
मंद कहूँ कहै रघुनाथ कहूँ माधुरता गयी को ।
हर की जटा सौं कूटि ऐसी भांति पथ चली
भगौरथ रथ पीछे धार भगौरथी को ॥ ४५७ ॥

अपरंच सवैया ॥

बाहुबली बरिवण्ड बहादुर भूप सदा प्रभु
के गुन सौरे । देत निहालत तच्छन को जन जो
कोऊ जाचन आवत पौरै ॥ बीर सुभाव लिये

रघुनाथ भयो रन चावर है चित चौरै । ठौर
कुठौर करै नहिँ गौर जहां सुनै फौज तहां उठि
दौरै ॥ ४५८ ॥

भाविक लच्छन ।

दोहा ।

भाबी भूत जहां सुकवि वरगत हैं साक्षात ।

अलङ्कार भाविक तहां होत परम अवदात ॥ ४५९ ॥

उदाहरण सवैया ।

सावनी तीज की साँझ सुहावनी बैठीही
जारे मिछी सखियान में । आनन ओप कला-
निधि की दृग में चपलापन ज्यों भूषियान में ॥
रौझ रही लखि हो रघुनाथ न भूलति केहुं
खूभी बखियान में । भूलति है वह भूलन हारि
अजौं जिय में हिय में बखियान में ॥ ४६० ॥

उदात्त लच्छन ।

दोहा ।

श्लाघ्य चरित रिधि को चरित अन्यो पलच्छित होत ।

अलङ्कार उदात्त सो वरगत हैं मति पोत ॥ ४६१ ॥

श्लाघ्य उदाहरन सवैया ।

जाकी सभा महँ दान देव हैं दोऊ पै काहु

पैं कीज न को है । पौन पुरन्दर बासो खरे औ
खरी जस दृष्टि कृपामई जो है ॥ हे रघुनाथ तिहूं
पुर को धन बाहुन के बल जाने हरो है । शंकर
को सिख नाती पुलस्त्य को भेष भयावन रावन
सो है ॥ ४६२ ॥

अपरंच सवैया ।

जाके लिये मनमोहन मोहन मन्त्र सिख्यो
जहिं तें मन मोहै । जाको दरीचो के नीचे खरे
रहैं जीव में राखि कदाचित जो हं ॥ पाइ परें
रघुनाथ हहा करें जाको लखे अखियान में को
है । दिव्य सुभाइनि की सुनिये ब्रज को ठकु-
राइनि राधिका सो है ॥ ४६३ ॥

कृधि चरित्र यथा सवैया ।

तौनिहूं लोकन में जितने तितने जुरि आये
बधार्ह के लौन्हे । जैसे को तैसो कहां लों कहौं
सब के मन माफिक आदर कौन्हे ॥ हे रघुनाथ
भये रघुनाथ के आनंद में इतनी धन दीन्हे ।
आजु सभा बिच श्रीदसरथ के भिच्छु भूप ब-
छाइ के चीन्हे ॥ ४६४ ॥

अपरंच कवित्त ।

गज गजसारनि में तुरग तबिले बँधे सुतर
सुतरखानि ताजे हिय हितए । सब दिन सेवत
सुभट लागे संग जे न जंग जुरे भीति खाँहि तो-
पन के भितए ॥ कहैं रघुनाथ कीन्हें कमला
अबास बास सब सुख लीन्हें पास आधि व्याधि
बितए । कौन के न भए और कौन के न हों
हि ऐसे भूप वरिवण्ड की कृपा को कोरचि-
तए ॥ ४६५ ॥

अत्युक्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहँ उदारता सूरता अदभुत सहित अतथ्य ।

बरनत कवि अत्युक्ति सो अलङ्कार समरथ्य ॥ ४६६ ॥

उदाहरन सवैया ।

नीकी अनैसी सो जानतौ हौ सब है न
कृपी जितहौ यह हेरी । बातें सिखापन की क-
हिये कहा जद्यपि है हिय एक है घेरी ॥ रावरी
बुद्धि की देखि दसा रघुनाथ की सींह सुनौ
मति मेरी । ऐसो परै निजु जानि बलाइ ल्यों

है गुरु तू गिरा सिध्दिनि तेरी ॥ ४६७ ॥

शौर्य बर्नन अत्युक्ति यथा कवित्त ।

छोड़े धाम दाम वाम काम को सौ गैलनि
में अंगनि ते काम भए भारी सोच बम तें । मं-
दरनि कंदरनि अंदरनि बसे मझा विपदा में
फँसे त्रसे भयानक रस तें ॥ ऐसी दसा उनकी
है ऐहो कवि रघुनाथ समर के भागे को दुरित
ताते गस तें । दोस में प्रतापागिनि लागे बैरी
बरि जात राति जीवें रावरे अमृतमयी जस
तें ॥ ४६८ ॥

प्रेमात्युक्ति उदाहरण सवेया ।

जाइ दियो उनके कर सों प्रभु जो लिखि
आपुन मोहि दयो तो । और सँदेसो कछू मुख
पाठ सो उद्धित हों करिबे कीं भयो तो ॥ एते
में गोपिनि के अँसुआ रघुनाथ चले रथ घेरि
लियो तो । कौन कथा कहिये इनको प्रभु भा-
गिन आजँ तो बड़ि गयो तो ॥ ४६९ ॥

अपरंच कवित्त ।

जहां जहां सुनै तहां तहां को पठावै मोहि

देखि आउ अवधी सखी कैसी धरे हैं । देखि
 आई जहां तहां फूलि फूलि भूलि भूलि बूझति
 बनक ऐसे निति नेम करे हैं ॥ कहा कहौ तोहि
 कहि आई जो तूं हरिकथा मोहि ए चँदेसे रघु-
 नाथ आनि अरे हैं । आँखि में परेंगे आइ जो
 तौ कौन दसा छै कान परे प्रान राखिबे के
 लाले परे हैं ॥ ४७० ॥

निरुक्ति लच्छन ।

दोहा ।

जहां नाम के जोग तें अर्थ प्रकल्पन और ।

अलङ्कार निरुक्ति सो बरनत कवि सिरमौर ॥ ४७१ ॥

उदाहरन सवैया ।

भोरहि तें बस बानूनी के छै छिपे सब
 दोस एके तलए हो । साँझ भए प्रगटो तौ
 सरोज सहोदर की मन मोद हए हो ॥ बेली
 सी बाल विद्योगिनि पै रघुनाथ कहै रवि से छै
 तए हो । ऐसी करौ कत जो तुम तौ बसुधा में
 सुधाकर ख्यात भए हो ॥ ४७२ ॥

अपरंच सवैया ।

संकर बीच असौ बरना के बंसाई पुरी अ-
पनी सुखरासी । ताके सराहिबे कीं तिहूं लोक
के आए सबै जुरि बुद्धिबिलासी ॥ कासी है
आपुस में समता कीं कछो रघुनाथ यों देखि
महामी । पायो नहीं तब नांव धख्यो यह कासी
कही तो कह्यो एहिं कासी ॥ ४७३ ॥

प्रतिषेध लच्छन ।

दोहा ।

जहां प्रसिद्ध निषेध को अनुकीर्तन है चाह ।

प्रतिषेधालङ्कार तहँ बरनत बुद्धि उदार ॥ ४७४ ॥

उदाहरन सवैया ।

गाउँ के लोगन की यह रीति अवाङ्मनि तें
सब देस मढ़ायो । गेह के अरिसि में भरे ते
मिसि कोऊ के चाह्यै चिता पे चढ़ायो ॥ हे रघु-
नाथ कहा कहियै तुम सो अङ्ग चाहत जोग
पढ़ायो । जधो सुनौ मनमोहन सों हम प्रीति
कियो नहिँ व्याधि बढ़ायो ॥ ४७५ ॥

अपरंच सवैया ।

मैं तुम सों कहे राखति हौं तुमै मेरी कही
के विचार में लीवो । जन्मनि मन्त्रनि के उप-
चार में हे रघुनाथ सदा मन दीवो ॥ वै ठकुरा-
बुनि राधिका हैं अति दुस्तर है उनको मन
लीवो । एहो गोपाल न बूझो हिये यह ग्वाल्लि
गँवारिनि को बस कीवो ॥ ४७६ ॥

अपरंच सवैया ।

देखि अपूरब रीति हिये पुलके हो कहा
अति आनंद लीन्हो । मै इतनी कहे राखति
हौं अपनी ली कछू मति आगम चीन्हो ॥ गो-
पन ले रघुनाथ गोपाल गोबर्धन को नहीं पूजन
कीन्हो । बोरिवे को ब्रज बैर को इन्द्रहि आहु
बयानो बरब्बस दीन्हो ॥ ४७७ ॥

विधि अलङ्कार लच्छन ।

दीहा ।

लिखि बसु को बरनिये जहां बिधान विचारि ।

विधिसु अलङ्कृत सुकवि तहँ बरनत अति मति धारि ॥

उदाहरन सवैया ।

बात लगे नहीं पोथिन की जुरि बैठ्यो गँ-

वारनि को जहँ गोत है । सीध्यों है जो सब
सो बिसरै मन में मति को नहिँ होत उदोत
है ॥ हे रघुनाथ सुनौ निहँचै यह मैं कहिबे में
कियो नहिँ ओत है । मण्डित बुद्धि के लोगन
की सभा पाए तें पण्डित मण्डित होत है ॥

हेतु अलङ्कार लच्छन ।

दोहा ।

हेतु सहित जहँ बरनिये हेतु बान गहि रीति ।

हेतु अलङ्कृत सुकवि सब तहां कहैं गहि प्रीति ॥४८०॥

उदाहरन कवित्त ।

महत महातम की पंचकोसी जात्रा कहैं
रघुनाथ सुनि बचन महासी के । हरष सौं पागे
अनुरागे बड़भागे लोग नगर बसैया सबे जाग
भोग रासी के । परस पुरुषता के उर बीच ब-
सिबे की बूझि के परम-पद निर्भय बिलासी
के । गूँदे सतीगुन में फिरत आस पास भए
मालाकार युवा बड़ बाला बाल कासी के ॥

अपरंच कवित्त ।

परम असंक लक्ष्मपति मेरी बिनै सुनौ पूर

पारावार को पहारनि भरो भयो । आवत व
संत ज्यों ल्यों बन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो
फूलि कै फरो भयो ॥ करिव जो है सो अब की
जे जन्म मन्वन सों नगर बसैयन के वास को
दुरो भयो । तौछन बिपति के हरैया राम ताके
आगे डवराये ईछन भभीछन खरो भयो ॥

इति श्रीरघुनाथ वन्दीजन काशीवासी वि-
रचिते काव्य रसिकमोहने उपमादिक अलङ्कार
वर्णनं सम्पूर्णम् ।

दोहा ।

कियो रसिकमोहन सुभग ग्रन्थ सुकवि रघुनाथ ।
बिच बिच काशीनृपति के कहे बिसद गुनगाथ ॥
अलङ्कार-लच्छन सहित लच्छ सहित सुविचारि ।
करि कवित्त रसिकन लिये दिये सकल निरधारि ॥
सो द्विज रसिकन के लिये कृपवायो करि सोध ।
काव्यकला सब जानिहैं जे पढ़िहैं अधिरोध ॥

॥ इति श्री ॥

National Library

Calcutta



DBA000010197HIN